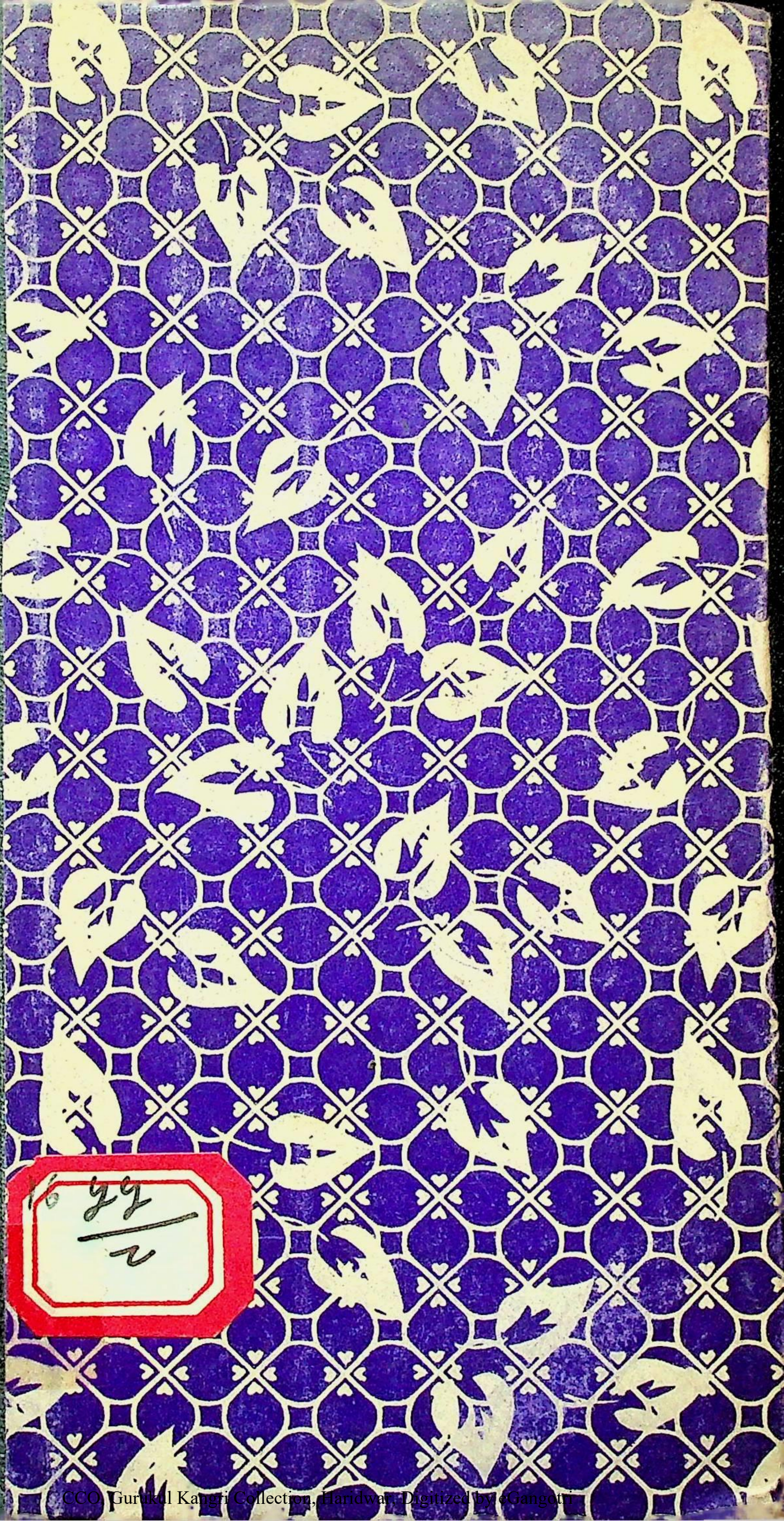



55,8
42160H

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

विषय सं० २५/८ .... आगत नं० ५२९६०

लेखक ....

शीर्षक ....

....

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१० ×	निकालवाते	निकलवाते
४	६	Frocnum	Fracnum
,,	१४	Tuber	Pabes
७	६ ×	इह	इस
८	१२	शारीर	शरीर
१३	७	मूत्राशम	मूत्राशय
,,	६ ×	भातर	भीतर
१५	७ ×	अवश्यकता	आवश्यकता
१८	८	निकल	निकाल
१८	५ ×	इत्यदि	इत्यादि
२३	७ ×	अवश्थ	अवश्य
,,	५ ×	सहृश्य	सदृश
२४	१ ×	हांथ	हाथ
३४	४ ×	घात	घाव
३६	१३	अंतर	अँतरा
३७	३	सी	वा
,,	४	अंतर	अँतरा
३८	४ ×	एरोसेटिकस	एसोमेटिकस
४०	१०	कारबोनिक	कारबोलिक
४३	९	ओपिआई	ओपिअम



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४३	१०	opii	opium
४४	१०	ईथर	ईथर वा
५०	२	दिखाए	दिखाइए
५३	१ ×	का	को
५४	६	उजित	उचित
५६	१०	Boucs	Bones
"	१२	टुटजाना	टूटजाना
५८	२	उठाता	उठाना
"	"	पड़जा	पड़ता
"	३	का	के
"	९	सूजम	सूजन
६१	४ ×	भिगे	भीगे
६५	५	साता	जाता
६८	११	कृत्रिय	कृत्रिम
"	१४	ओर	और
६९	१३	भाड़	भीड़
"	१५	कृत्रिय	कृत्रिम
७०	८ ×	चलारहा	चलरहा
७२	१	व	वा
"	७ ×	ऐत्यादि	इत्यादि
८३	१०	कर	कर वा

नोट— × चिह्न वाली पंक्तियों की गिनती नीचे से की गई है।

निवेदन ।

——:o:——

डाक्तर छन्नूलाल काशी में एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे। इस सभा से उनका बड़ा हित था और प्रारम्भ में कई वर्षों तक वे इसके उपसभापति भी थे तथा सदा उसकी सहायता पर तत्पर रहते थे। चिकित्सा के कार्य में उनकी बड़ी प्रसिद्धि थी। जो उनसे एक बेर अपनी चिकित्सा करता था फिर वह उनको छोड़ कर जाने का कभी नाम नहीं लेता था। उक्त डाक्तर साहब का समाजसुधार की ओर बहुत ध्यान था। शुद्ध वायु में रहने, व्यायाम करने, बाल विवाह से बचने इत्यादि की शिक्षा वे प्राय: दिया करते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि बहुत से कठिन रोग भी शुद्ध वायु के सेवन और संयम से बिना किसी औषधि के ही अच्छे हो सकते हैं। वे पण्डित रामनारायण मिश्र के जिनका सभा से बहुत ही हित है और जो सदा उसकी सहायता करते रहते हैं, मामा थे। उन्हीं के द्वारा हमारे मिश्र जी का यथोचित पालन और विद्याध्ययन हुआ। सच पूछिए तो पण्डित रामनारायण मिश्र डाक्तर छन्नूलाल के जितने कृतज्ञ हैं उतने वे संसार में दूसरे किसी के नहीं हैं। जब जून १९०५ में उक्त डाक्तर महोदय का देहान्त हुआ तो पण्डित रामनारायण मिश्र की यह प्रबल इच्छा हुई कि उनका कोई ऐसा स्मारक स्थापित होना चाहिए जिसका वे स्वयं प्रबन्ध कर सकें और जिससे डाक्तर महोदय के सिद्धांतों का प्रचार होता रहे।

बहुत सोच बिचार कर उन्होंने यह निश्चय किया कि उनके नाम पर सोने का एक पदक प्रति वर्ष उस व्यक्ति को दिया जाय जिसका लेख निर्धारित विषय पर सब से उत्तम हो। लेख का विषय ऐसा हो जिसका स्वास्थ्य से सम्बन्ध हो और जो सर्वसाधारण की समझ में आ सके, जैसे प्रारम्भिक चिकित्सा, सौरी सुधार, शिशु पालन, नेत्ररक्षा, दन्तरक्षा, छूत के रोगों से बचने के उपाय, सरल गृहचिकित्सा, व्यायाम के लाभ और नियम, ब्रह्मचर्य के लाभ और नियम, इत्यादि इत्यादि। इन्हीं विचारों के अनुसार गत वर्ष मेडल के लिये "आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा" यह विषय नियत किया गया था। इस पर तीन लेख आए जिन पर तीन डाक्टरों की एक कमेटी ने विचार किया और पं० प्रसादीलाल झा के लेख को सब से उत्तम ठहराया। इन तीन महाशयों की सम्मति नीचे दी जाती है। अब तक इस मेडल में जो व्य होता है उसे पंडित रामनारायण मिश्र प्रति वर्ष देते हैं पर उनकी इच्छा है कि इसका वे शीघ्रही स्थायी प्रबन्ध कर दें।

डाक्टर मुन्नालाल, सिविल सर्जन, इटावा यह लिखते हैं—

"I have examined this very carefully and am pleased to award it the first place and prize. The author has nicely treated all the subjects that he has touched upon and he has taken great pains to deal with almost every topic likely to benefit the helpless sufferers. The illustrations are very good indeed and should prove of great value to those that would consult the essay. The subject of poisons has been left out, though poisoned wounds have been described. I would ask the NAGRI-PRACHARINI SABHA to request the author to add a chapter on poisons that are common, e. g. opium, arsenic Dhatura, Bhang, and such like."

डाक्तर बसन्त कुमार मुकर्जी, असिस्टेण्ट सर्जन, ललित-पुर अपनी सम्मति इस प्रकार देते हैं –

"In my opinion the essay written by Pandit Prasadi Lal Jha is the best of the three submitted. He deserves the first prize. It would be very desireable to have a chapter added on the first aid to people who are poisoned accidently or otherwise. In these days of commercial entreprise many articles are used and poisoning by any of them is not such a rare accident as the lay public think. Kerosine oil is the most commonly used article and children have been known to drink it, boys have been known to suck match sticks &c. So it will be advisable if the N. P. SABHA would request the essayist to add a chapter on the treatment of poisons."

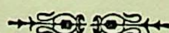
डाक्तर ईशान चन्द्र राय एस० बी० बनारस, इस लेख के विषय यह लिखते हैं –

"I have carefully gone through the three essays on the "FIRST AID to the INJURED" and have no hesitation in recommending the award of the Dr. Chhannu Lal memorial medal to Mr. P. L. Jha whose essay is far the best of the three. The most common sources of injuries have been systematically dealt with and the various treatments indicated are quite up-to-date. The anatomical charts and illustrations are lucid and well got up and a lay man even would derive much useful information and easily understand the indications of treatment. A chapter on ordinary poisons would certainly enhance the value of the little book. The subjects of Hemorrhage, Hydrophobia, Snake-bite and ambulance are pretty exhaustive and in keeping with recent developments.

इन तीनों महाशयों की सम्मति के अनुसार पण्डित प्रसादीलाल झा ने "विषों की चिकित्सा" पर एक अध्याय लिख दिया है और अब यह लेख सर्व साधारण के लाभ के लिये छाप कर प्रकाशित किया जाता है।

बनारस। | जुगुलकिशोर, मंत्री,
१४ दिसम्बर १९०७ | नागरीप्रचारिणी सभा।

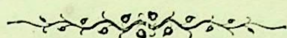
विषय सूची ।



य
व
मे
दे
प्र
ल
चि
न
भी
ल
सं
प्र
तो
प्रा
सव
वि
इस

संचि

आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा ।



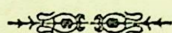
प्रस्तावना ।

इस विषय पर यूरोप देश में अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं, यहां तक कि इस नाम की पुस्तक भी अंगरेज़ी भाषा में वर्तमान है । इस विषय का लेख पहिले पहल जर्मन भाषा में लिखा गया था । उसका प्रयोजन यह था कि यूरोप देशीय अल्पाईन पर्वत के यात्रियों के निकट एक इस प्रकार की पुस्तक सदैव रहनी चाहिए जिससे वे आघात लगने पर बिना डाक्टर की सहायता के समय पर उचित चिकित्सा कर लें । केवल यही प्रयोजन मेरे इस लेख का नहीं है, परन्तु इसमें उन आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा भी दी जायगी जो पर्वतों के अतिरिक्त दूसरे स्थानों में लग सकते हैं—जैसे पुतली घरों में, रेल के स्टेशनों पर, संग्राम में, और नदी में इत्यादि । इन चिकित्साओं के प्रयोग करने के पश्चात् यदि डाक्टर वा अस्पताल निकट हो तो रोगी को अवश्य दिखा देना चाहिए, क्योंकि केवल प्रारम्भिक चिकित्सा पूरी चिकित्सा का काम नहीं दे सकती । इस लेख के लिखने के हेतु मैंने अनेक उक्त विषय संबन्धी पुस्तकों की सहायता ली है । सरलता के हेतु इस लेख को मैं दो भागों में लिखता हूं ।

पहिले भाग में शरीर के अवयवों और इन्द्रियों का संक्षिप्त वर्णन दिया जायगा । दूसरे भाग में उसी प्रकार

प्रधान आघातों की प्रारम्भिक चिकित्सा लिखी जायगी। पाठकों को यह ज्ञात हो जाना चाहिए कि थोड़ी सी व्यवच्छेद विद्या अर्थात् शरीरसंस्थान जाने बिना आघातों की चिकित्सा सम्यक रीति से नहीं की जा सकती। जहां तक मुझ से हो सका है मैने चित्रों द्वारा लेख के समझाने का उद्योग किया है। बुद्धिमान जन मेरे लेख की न्यूनता और अशुद्धियों को ठीक कर लेंगे, क्योंकि मैं केवल विद्यार्थी ही हूं। मुझे कहीं कहीं उचित शब्दों के याद न आने से चिकित्साओं के समझाने में कठिनता पड़ी है। बुद्धिमान जन यदि मेरी चिकित्साओं के आशय को समझ जांयगे और उनका प्रयोग करेंगे तो मेरी इच्छा पूर्ण हो जायगी। मेरी इच्छा यह है कि इस प्रकार की साधारण बातों के जानने से बुद्धिमान हिन्दी के जानने वाले अपने देश भाइयों की वा अन्यदेश के मनुष्य मात्र की आघात के समय उचित सहायता करें। ऐसा करने से मेरी पूरी आशा है अनेक जीवों की रक्षा होगी।

पहिला भाग ।



संक्षेप व्यवच्छेद विज्ञान ।

(१ चित्र ।)

प्रथम चित्र जो इस पृष्ठ के सामने बना है, मैंने अपनी और पाठकों दोनों की सरलता के लिये दिया है । इस चित्र में मनुष्य शरीर के भिन्न भिन्न अवयवों और इन्द्रियों के नाम दिए हैं । जहां तहां मैंने उनके पर्य्याय शब्द अंगरेज़ी भाषा में भी लिख दिए हैं ।

मानवशरीर, मनुष्य का शरीर, देह (Human body)
त्वचा, चमड़ा (Skin)
केश, बाल (Hair)
कर्ण (Pinna (external ear) or Ear)
कर्णमार्ग (Auditory canal) जिसमें से मैल निकालवाते हैं।
मुंह, चेहरा (Face)
मस्तक, ललाट, माथा (Forehead)
भौंह (Eyebrow)
पलक (Eyslashes)
नासिका, नाक (Nose)
नाक के छेद (Nostrils)
मुख जिससे भोजन करते हैं (Mouth)
ओष्ठ, ओठ (Lips)
नाक का बांसा (Bridge of nose)

कपोल, गाल (Cheeks)

जबड़े, चौहड़ (Jaws)

ठोढ़ी (Chin)

दांत, दन्त (Teeth)

जीभ, जिह्वा, ज़बान (Tongue)

जीभ की लगाम (Froenum of tongue)

गर्दन, ग्रीवा (Neck)

हंसुली (Clavicles)

छाती, सीना (Chest)

उदर, पेट (Abdomen) छाती के नीचे पेढ़ू तक ।

धड़ (Trunk)

नाभि (Navel)

कटि, कमर (Waist, loin)

पेड़ू (Tuber) धड़ से नाभि के नीचे ।

रीढ़, पीठ की हड्डी (Spine, back-bone)

हस्त पाद वा हाथ पांव (Upper and lower limbs) धड़ की शाखाएं

कंधा, स्कंध, मोढ़ा, बाहुमूल (Shoulder)

पखौरा (Shoulderblade)

बांह, भुजा (Upper arm) कंधे से कुहनी तक ।

हाथ (Forearm) कुहनी से कलाई तक ।

करतल, हथेली (Palm of hand)

करपृष्ठ (Dorsum or back of hand)

अंगुलियां, अंगूठा, अनामिका इत्यादि (Fingers of hand)

नाखून (Nails)
कूले, चूतड़ (Hips, Buttocks)
जांघ, जंघा (Thigh)
टांग (Legs)
पांव, पद, पैर (Foot)
पैर का तालू (Sole of foot)

मानव अस्थिपंजर ।

(२ चित्र ।)

इसको अंगरेज़ी में (Human skeleton) कहते हैं अर्थात् मनुष्य के शरीर की हड्डियों का एक चित्र जिसे ठठरी कहते हैं। मनुष्य के शरीर में यूरोप देशीय वैद्यों के मतानुसार २०० (दो सौ) अस्थियां होती हैं। परन्तु चित्र से केवल मुख्य मुख्य हड्डियों का ज्ञान हो सकता है। अस्थिपञ्जर में सिर की हड्डी (कपाल), रीढ़, छाती की हड्डियां और हाथ, पांव, कूले की हड्डियां होती हैं। कपाल से मस्तिष्क की रक्षा होती है और रीढ़ वा पीठ की हड्डी की नाली से कंडरा अर्थात् मग़ज हराम की रक्षा होती है। छाती में फेफड़े और हृदय वर्तमान् हैं और कूले की हड्डियों के मध्य में मूत्राशय और स्त्रियों में इसके अतिरिक्त गर्भाशय भी होता है। इन हड्डियों पर पेशियां अर्थात् पुट्ठे जुड़े रहते हैं और इन पुट्ठों की सहायता से अस्थियां संधियों वा जोड़ों पर गति करती हैं और हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं और अन्य अन्य काम करते हैं। चित्र से

पाठक को शरीर की भिन्न भिन्न प्रधान अस्थियों के संबन्ध और स्थान सब मालूम हो जायगे । एक, दो, तीन ये संख्याएं चित्र में देखिए ।

१ कपाल, खोपड़ी (Skull)
२ जाबड़े, चौहड़ की हड्डी (Bones of the jaw)
३ रीढ़, पीठ की हड्डी (Back-bone, spine)
४ हंसुली की हड्डी (Clavicle)
५ बांह की हड्डी (Humerus)
६ छाती की हड्डी (Breast bone)
७ पसली (Ribs)
८ बांह की हड्डी (Forearm bones) भुजा के उस भाग की अस्थियां जो कुहनी और कलाई के मध्यस्थ हैं ।
९ पौंहचे वा कलाई की हड्डियां (Carpal bones)
१० करतल और अंगुलियों की हड्डियां (Meta carpal and phalangeal bones)
११ कूले की वा चूतड़ की हड्डियां (Hipbones, as' innominata)
१२ जांघ की हड्डी (Thigh bone)
१३ घपनी वा परिया की हड्डी (Knee cap, Patella), इसे घुटने की चक्की भी कहते हैं ।
१४-१५ टांग की हड्डियां—इन्हें अंगरेज़ी में (Tibia and Fibula) टिबिया और फिबुला कहते हैं ।
१६ एड़ी की हड्डी (Heel bone, or calcis)
१७ पैर के तालू की हड्डियां (Metatarsal bones)
१८ पांव के अंगूठे और अंगुलियों की हड्डियां (Phalanges)
१९ कंधे वा पखौरे की हड्डी (Scapula)

२० रीढ़ की हड्डियां (Vertebrae, spine)

२१ कूलों के मध्य की हड्डी जिसे अंगरेज़ी में सेक्रम कहते हैं (Sacrum) और जिसमें गाय बैल इत्यादि पशुओं की पूंछ लगी रहती है।

शरीर के पुट्ठे।

(३-४ चित्र।)

इनको अंगरेजी में Muscles अर्थात् मांस कहते हैं। इन पुट्ठे या पेशियों के सुकड़ने से हड्डियां संधियों पर गति करती हैं। इन्हीं की सहायता से इस प्रकार के हम बहुत से कार्य कर सकते हैं-जैसे चलना फिरना, बात चीत करना, खाना पीना इत्यादि। पेशियां दो प्रकार की हैं। एक वे जो मनुष्य के मन के वश हैं जैसे हाथ पांव की पेशियां और कुछ स्थानों में पुट्ठों की गति मनुष्य की शक्ति के बाहर है जैसे हृदय की पेशी।

प्रथम प्रकार को अंगरेजी में Voluntary muscles कहते हैं और दूसरे प्रकार की पेशियों को Involuntay muscles कहते हैं।

इह पृष्ठ के सम्मुख एक चित्र है जिसमें शरीर के प्रधान प्रधान पुट्ठे बने हैं।

मनुष्य के शरीर की प्रधान संधियां वा जोड़।

(५-६ चित्र।)

मैं केवल मुख्य मुख्य जोड़ों के नाम बतला देता हूं और वे जिन जिन हड्डियों के मेल से बनते हैं वे चित्र में दिखाई

गई हैं। पाठक को चाहिए कि उनके स्थानों को अच्छे प्रकार से स्मरण करले क्योंकि कभी कभी इन जोड़ों के हिल जाने वा उखड़ जाने पर रोगी के साथी उसको खींच खांच कर बहुत हानि पहुंचा देते हैं। कंधे और कूले के जोड़ प्राय: सबसे ज्यादा उखड़ जाते हैं। मुख्य जोड़ों के नाम नीचे लिखे हैं। जोड़ का स्थान नीला रँगा है।

जाबड़े का जोड़। कूले, कंधे, कुहनी, कलाई, टकने की संधियां। जैसे एक यंत्र की संधियों में तेल लगाने की आवश्यकता पड़ती है वैसेही परमात्मा ने हमारी संधियों में भी एक प्रकार की पतली वस्तु बना दी है। यह तेल का काम देती है।

शरीर की मुख्य मुख्य नाड़ियां और धमनियां।

(७-११ चित्र।)

रुधिर हमारे शरीर में तीन प्रकार के नल और छोटी छोटी नालियों में सदैव बहता रहता है। जैसे जल समुद्र से उड़कर बादल होकर जल होकर फिर नादियों द्वारा समुद्र को पहुंच जाता है वैसेही एक मार्ग से रुधिर हृदय से जाकर दूसरे मार्गों से फिर हृदय में लौट आता है। इससे यह ज्ञात होगा कि यदि कोई नल कट जाय तो रुधिर शरीर के नलों के बाहर निकलने लगेगा और यदि किसी रीति बंद न किया जाय वा स्वयं न बंद होजाय तो जैसे टूटे हुए बंबे में से सड़कों पर पानी बहता रहता है उसी तरह रुधिर भी बहता रहेगा और मनुष्य थोड़े काल में मर जायगा। नीचे मुख्य नाड़ियों और धमनियों का वर्णन किया जाता है।

(१) नाड़ी (Arteries) उस प्रकार के नल को कहते है जिसके द्वारा साफ किया हुआ खून हृदय से शरीर की इन्द्रियों को जाता है ।

(२) केशोपम नाड़ियां (Capillaries) उनको कहते हैं जो अति शूक्ष्म होती हैं और जो नाड़ियों और धमनियों के मध्यस्थ हैं । रुधिर नाड़ियों से इनमें होकर धमनियों में जाता है ।

(३) धमनियां (Veins) उनको कहते हैं जिनमें से किंचित अपवित्र रुधिर जो केशोपम नाड़ियों से आता है हृदय की ओर गति करता रहता है । सबसे बड़ी दो धमनियों द्वारा रुधिर फिर हृदय में चला जाता है । इन सब बातों के समझने के लिये चित्र देखिए ।

यह रुधिर जो धमनियों द्वारा हृदय को लौट आता है फिर फेफड़ों (फुफ्फसों) को आता है । फेफड़ों में रुधिर कार्बोनिक एसिड गेस (Carbonic acid gas) वायु को दे देता है और उसके बदले में आकसीजन गेस (Oxygen gas) शोषण कर लेता है । यह स्वच्छ और लाल रुधिर हृदय में लौट जाता है । यहां से नाड़ियों द्वारा शरीर में सर्वत्र पहुंचता है । यही बात शरीर में प्रत्येक पल होती रहती है ।

हृदय । (Heart)

(१२-१४ चित्र ।)

हृदय का आकार चित्र में देखिए । हृदय का कोना (Apex) छाती में बांई तरफ होता है । हृदय के सुकड़ने और फैलने से रुधिर सर्वत्र शरीर में पहुंचता है और फिर

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

हृदय को लौट जाता है। सुकड़ने के समय रुधिर हृदय से नाड़ियों में जाता है और फैलने वा स्थिर होने के समय धननियों में से हृदय में आता है। अर्थात् हृदय में दो प्रकार के द्वार (Valves) हैं—एक से रुधिर बाहर जाता है, दूसरों से भीतर आता है। आरोग्य युवा मनुष्यों में हृदय एक मिनिट में ७२ से ८० बार चलता है और स्त्रियों और बच्चों में कुछ अधिक बार चलता है। इसके सुकड़ने इत्यादि से रुधिर नाड़ियों में बहता रहता है। यह गति नाड़ी से साधारण मनुष्य की कलाई पर अँगुलियों के रखने से मालूम हो सकती है। किन्तु अँगुलियां वैद्यों के तुल्य रखनी चाहिएं। मैंने चित्रों से हृदय के आकार, स्थान, और संबन्धों को दिखलाया है। कृपा कर इसके समझने के लिये उन चित्रों को देखिए। बांह की नाड़ी दबाने से पौंहचे की नाड़ी में खून नहीं जाता इसलिये नाड़ी आप नहीं देख सकते। इसका अभ्यास इस लेख के पाठकों को करना चाहिए। इसका लाभ चिकित्सा में ज्ञात हो जायगा।

फुफ्फुस अथवा फेफड़े।

(१५-१६ चित्र।)

फेफड़े मनुष्य में दो हैं और वे छाती के भीतर हैं। उनके मध्य में हृदय वर्तमान है। इन्हींकी सहायता से रुधिर में आकसीजन (Oxygen) गेस वायु से मिल जाती है। सांस के बंद हो जाने पर प्राण थोड़ी ही देर तक शरीर में रह सकते हैं। यह इन्द्रिय विलायती स्पंज के सदृश है। इसमें अनेक छिद्र हैं और अनेक केशोपम नाड़ियां हैं।

फेफड़ों में नाक से होकर वायुनली (Wind pipe) के द्वारा वायु आती है। सदा नाक से सांस लेना चाहिए और मुख खोल कर कभी नहीं लेना चाहिए। वायुनली के ऊपर के चौड़े भाग को जो गले के सामने है कंठ कहते हैं। अंगरेज़ी में इसे लेरिंक्स (Larynx) कहते हैं। इस कण्ठ में दो तार के सदृश शिराएं हैं जिनके जल्दी जल्दी हिलने से शब्द उत्पन्न होता है। इनको अंगरेज़ी में (Vocal cords) शब्दकारक रज्जु कहते हैं। वायु नली के छाती में प्रवेश करते ही उसके दो बड़े विभाग हो जाते हैं। एक दहिने फुफ्फुस में और दूसरी शाखा बाएं फुफ्फुस में चली जाती है। फेफड़े में प्रत्येक शाखा में से वृक्ष के सदृश अनेक शाखाएं फूटती चली जाती हैं।

अन्तिम शाखाएं केवल छिद्र के तुल्य हो जाती हैं। इनको पवनछिद्र (Air-cells) कहते हैं। इन छिद्रों की भीत में अनेक केशोपम नाड़ियां रहती हैं जिनसे रुधिर सदैव गति करता रहता है। आरोग्य मनुष्य में छाती फेफड़ों से भरी रहती है। सांस लेने के समय फेफड़े फैलते हैं और वायु के बाहर आने पर किंचित सुकड़ते हैं। यहां से रुधिर लाल होकर फिर हृदय को लौट आता है। फेफड़ों में खून फेफड़े की धमनियों द्वारा हृदय से आता है।

आमाशय और आँत।

(Stomach and Intestines)

(१७-१८ चित्र।)

शरीर में उदर उन अवयवों का स्थान है जो भोजन को पचाते हैं और पोषण के हेतु भोजन से रस बना कर

चूस लेते हैं। भोजन का व्यर्थ भाग आँतें में होकर गुदा की राह बाहर निकल जाता है। भोजन पहिले मुंह में दांत की सहायता से महीन होता है। मुंह में भोजन में थूक गिलटियों से आकर सम्यक मिल जाता है। इसके मिलने से किंचित भाग भोजन का मुंह ही में पच जाता है और उससे एक मीठा रस पैदा होता है। यहां से भोजन और मीठा रस गले में होकर आमाशय में पहुंचता है। आमाशय से भोजन आरोग्य मनुष्यों में ५ या ६ घंटे में पचकर आँतों में चला जाता है। आमाशय का रस दूध मांस ऐसी वस्तुओं को पचाता है। आँत में भोजन में पित्त मिलता जाता है और पेनक्रियस् (Pancreas) नामक गिलटी से एक रस आकर मिलता है। एक रस आँतों में भी उत्पन्न होता है। ये सब रस भोजन के बचे भाग को पचाते हैं। ये सब पचकर एक पीली लेई के सदृश रस बन जाते हैं। इसको काइल (Chyle) अर्थात् भोजनरस कहते हैं। अन्त में रसग्राहक नाड़ियां (Lymphatic Vessels) जो आँत की भीत में होती हैं इस रस के पुष्ट और उत्तम पचे भाग को चूस कर यकृत में ले जाती हैं। इस रस का कुछ भाग धमनी के रुधिर में पहुंच जाता है। बचा हुआ भाग विष्ठा हो जाता है। आमाशय और आँत आदि के चित्रों को देखिए। उनके आकार और स्थान का ज्ञान तो साधारण जनों को केवल चित्र की सहायता ही से होसकता है। आमाशय लौकी के आकार की एक थैली है और आँत एक प्रकार का नल है जो आमाशय से गुदा तक जाता है। छोटी आँत प्रायः ९ गज़ लम्बी है और बड़ी आँत बहुत छोटी है।

गुर्दें । (Kidneys)

(१८ चित्र ।)

उदर में रीढ की हड्डी के दोनों ओर दो गुर्दे हैं। एक दहिना और दूसरा बांयां। इनमें पेशाब वा मूत्र रुधिर से अलहदा होता रहता है। यह मूत्र यहां से मूत्रनलों द्वारा मूत्राशय को जाता है। मूत्राशय से मूत्रेन्द्रिय द्वारा बाहर निकल जाता है। मूत्राशम इत्यादि के स्थान चित्र में देखिए।

आँख। (Eye)

(२० चित्र।)

यह गेंद के सदृश गोल होती है और इसके स्थान को तो सभी जानते हैं। कभी कभी इसमें चोट लगजाती है तो बहुत दुःख होता है। नेत्र के चित्र को देखिए।

कान। (Ear)

(२१ चित्र।)

बाहर और भीतर के दोनों कानों को चित्र में देखिए। कर्णमार्ग को और कान के परदे वा ढोल को अवश्य स्मरण रखना चाहिए क्योंकि कभी कभी बच्चे कान में दाना डाल लेते हैं और उनके माता पिता अपनी अज्ञानता के कारण उस दाने के निकालने में अपने बच्चे के कान के परदे को फाड़ कर महा कष्ट सहते हैं।

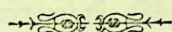
मस्तिष्क और कंडरा।

(Brain and Spinal cord.)

(२२-२५ चित्र।)

व्यवछेद विद्या में विद्यार्थी के लिये इस से कठिन और कोई भाग नहीं है। भाग्य से इनके आघात कम मिलते हैं। यदि कभी अधिक चोट इन मर्म स्थानों में लग जाती है तो रोगी अवश्य मर जाता है। मस्तिष्क चैतन्य, विचार और मेधा का स्थान है। यही पेशी की गति को आज्ञा देता है। वे आज्ञाएं वा समाचार शरीर के अवयवों को एक प्रकार की तारें (शिराओं) के द्वारा मिलते हैं। ये तार पहिले कंडरे में जाकर मिलजाती हैं। कंडरा रीढ़ की नाली (Spinal canal) में होकर कपाल में पहुंच कर मस्तिष्क के साथ मिल जाता है। जैसे छोटे छोटे तारघरों से एक बड़े तारघर को समाचार पहुंचते रहते हैं उसी प्रकार गर्मी, सरदी, दर्द, शब्द, सुगन्ध, दुर्गन्ध, इत्यादि सब समाचार मुख्य मुख्य शिराओं (Nerves) द्वारा इन इन्द्रियों से मस्तिष्क को मिलते रहते हैं। शरीर में मस्तिष्क आत्मा का घर और दफ़्तर है। इन तारों के किसी रीति से कट जाने अथवा रोगग्रसित होजाने पर इन्द्रियां अपना कार्य्य नहीं कर सकतीं, जैसे अंधा होजाना, बहरा होजाना, लकवा माराजाना इत्यादि, क्योंकि आत्मा के दफ़्तर को न यहां से कोई समाचार मिलते हैं न वह किसी प्रकार की आज्ञा भेज सकती है। चित्र देखिए।

दूसरा भाग ।



आघातों की आरम्भिक चिकित्सा ।

इसके आरंभ करने के पहिले मैं आप लोगों को थोड़ी सी साधारण बातें बताता हूं जिनको सहायता करने के समय सदा ध्यान में रखना चाहिए । मैं यह जानता हूं कि उनमें से सब बातें प्रत्येक घायल मनुष्य के लाभ की नहीं होंगी परन्तु बुद्धिमान उनमें से एक या सब, समय पर आघात के अनुसार काम में लांएगे ।

(१) पहिले घाव से निकलते हुए लोहू को बंद करना। घाव में किसी प्रकार की मैली वस्तु, मैले हाथ, मट्टी अथवा अन्य वस्तु जैसे कांटा, शीशे का टुकड़ा इत्यादि न जाने देना । घाव पर मक्खी को कदापि न बैठने देना ।

(२) बेहोश वा मूर्च्छित घायल को लिटा कर उस के चारों ओर भीड़ न लगने देना और उसकी हर तरह से रक्षा करनी और यदि अवश्यकता हो तो होश में लाने के उपाय करना ।

(३) घायल वा जिसको किसी प्रकार की ऐसी चोट लगी हो–जैसे टांग की हड्डी टूट गई हो–कि वह चोट के स्थान से स्वयं उठकर अपने या अपने मित्र के घर इत्यादि न जा सकता हो तो उसे किसी प्रकार के बाहन (जैसे डोली वा पीठ इत्यादि पर) में रख कर पहुंचाना ।

घावों की प्रारम्भिक चिकित्सा।

(२६ चित्र।)

संक्षेप रीति से इनके दो विभाग किए जा सकते हैं। एक वे जिनमें से रुधिर निकले और दूसरे वे जिनमें से खून निकले। किन्तु ग्रन्थकार लोगों के अनुसार और भी अनेक भेद हैं वे आपके लाभ के हेतु नीचे लिखे जाते हैं।

(१) छिन्न व्रण अर्थात वे घाव जो धारवाले शस्त्रों से लगते हैं और जिनमें से शीघ्र आघात के समय रुधिर बहने लगता है। ऐसे घाव चाकू, छुरी इत्यादि से लगते हैं। अंगरेजी में इन्हें इन्साईज़ड वून्डज़ (Incised wounds) कहते हैं।

(२) कुचले हुए घाव (Lucerated wound) जिनके मुख के आस पास की त्वचा भी कुचल कर फट गई हो और घाव में से रुधिर निकलता हो परन्तु इतना नहीं जितना प्रथम प्रकार से। ऐसे घाव पांव पर गाड़ी के नीचे आजाने से और सिर पर लाठी लगने से प्रायः हो जाते हैं।

(३) पिच्चित व्रण वा कुचलना वा नोल पड़ना (Cotusion or Contused wounds) जिसमें से रुधिर बाहर न निकले, चोट के स्थान ही पर त्वचा के नीचे एक चिन्ह होकर एक सूजन पैदा करदे और कुछ समय के पश्चात् वहां एक नीली दर्ददार सूजन हो जाय। उदाहरण–जैसे लड़कों के माथे पर सिर के बल गिर पड़ने से हो जाता है।

(४) सूई के सदृश पतले मुख वाले घाव (Punctured wound) जिनका मुख छोटा हो परन्तु उनकी गहराई थोड़ी या बहुत हो–अर्थात् जो देखने में छोटे मालूम हों परन्तु पेट

के वा छाती के भीतर तक चले गए हों। ऐसे घाव प्रायः नोकदार शस्त्र को शरीर में घुसा देने से होते हैं, जैसे तीर के या कांटे के घुस जाने से। ऐसे घावों में से शरीर के भीतर प्रायः बहुत खून निकलता है परन्तु आंख से नहीं दिखाई देता। और यदि पेट या छाती की कोई बड़ी नाड़ी वा धमनी इत्यादि में शस्त्र घुस जाय तो बहुत खून निकलने के कारण मनुष्य शीघ्र मर जाता है। इसलिये ऐसे स्थानों की चोट में डाक्टर की सहायता अवश्य लेनी चाहिए।

(५) बंदूक के घाव (Gunshot wounds) जो बंदूक की गोली के घुसजाने से उत्पन्न होते हैं। इनके भीतर जाने से एक छेद बन जाता है। गोली लगने से कभी कभी हड्डी भी टूट जाती है। यदि मनुष्य बच जाय तो उसकी चिकित्सा डाक्टर से करानी चाहिए। आज कल एक ऐसा यंत्र निकला है जिससे शरीर में घुसी हुई गोली को देखकर डाक्टर लोग कभी कभी उसे निकाल लेते हैं।

(६) विषैले घाव (Poisoned wounds) जिनमें किसी प्रकार का ज़हर भी उपस्थित हो, जैसे पागल कुत्ते के काटने का घाव, सर्प के काटने का घाव, बर्रें, बिच्छू इत्यादि के डंक मारने के घाव।

संक्षेप चिकित्सा।

कुचलने में कुछ न कीजिए केवल आराम दीजिए। उन घावों में जिनमें घाव बड़े गहरे हों डाक्टर की सहायता अवश्य लीजिए। विषैले घावों में से यदि हो सके तो शीघ्र मुंह से एक मनुष्य की जान बचाने के लिये घाव में से विष

को चूसकर (कई बार ऐसा कीजिए) थूक दीजिए और अपना मुंह खूब साफ़ कर डालिए। यह तभी करना चाहिए जब अपने मुंह में कोई घाव न हो। छोटे छोटे घावों में तीन उपाय सदा करने चाहिएं।

(१) पहिले खून निकलना बंद कीजिए। घाव में सदा साफ कपड़े जल और हाथ लगाने चाहिएं।

(२) फिर घाव में से मैली चीजें, मिट्टी, कांच के टुकड़े, कांटे, डंक इत्यादि निकल डालिए।

(३) अन्त में घाव को साफ पानी से धोकर साफ रूई और कपड़े से बांध दीजिए।

यहां मैंने केवल आपके समझाने के लिये आवश्यक बातें लिखदी हैं। चिकित्सा का पूर्ण वर्णन आगे किया जायगा।

कुचलने या नील पड़ने की चिकित्सा।

कारण, लक्षण। अधिक चोट लगने से सूजन बड़ी, लाल, और पीड़ा वाली होती है और चोट के स्थान पर त्वचा के नीचे रुधिर के एकत्रित होने से एक नीले रंग की सूजन पड़ जाती है, जैसे क्रीकेट के खेल में गेंद से। यदि शरीर के कोई संधि वा जोड़ (गिरने इत्यदि से) मुड़ जांय तब भी इसी प्रकार की सूजन थोड़े काल में हो जाती है। उसे हम सब लोग मोच आजाना कहते हैं। मोच (Sprain) फुटबाल (Football) खेलने में प्रायः आजाती है।

चिकित्सा। (१) चोट के स्थान को शरीर से ऊंचा

करलो, यदि पांव पर चोट हो तो मनुष्य को लेट जाना चाहिए और कुछ समय इसी तरह रहना चाहिए और कुछ दिनों तक पांव से चलना बंद रखना चाहिए। यदि हाथ हो तो रूमाल इत्यादि वस्त्र से हाथ को गले में लटका लेना चाहिए।

(२) सूजन के लिये चोट के स्थान पर शीघ्र आघात के समय ठंढे जल में वस्त्र भिगो कर रखते रहिए अथवा बर्फ मिल सके तो कपड़े में लपेट कर उसको रख दीजिए। और यदि किसी जोड़ की मोच हो तो अवश्य किसी डाक्टर को दिखा दीजिए। दर्द के लिये गरम पानी में कपड़ा भिगो कर पानी निचोड़ कर आघात के स्थान को सेंक दीजिए।

यदि आघात बहुत बड़ा हो जैसे सिर के बल ऊंचे स्थान से गिर पड़ने से मस्तिष्क को कुछ हानि पहुंच गई हो अथवा पैरों के बल गिरने से कंडरे (कमर) में बहुत धमक लग गई हो या और किसी ऐसे स्थान में चोट का असर पहुंच जाय तो कभी कभी मनुष्य बेहोश होजाता है और नाड़ी बहुत कम मालूम होती है और मनुष्य बहुत धीरे धीरे सांस लेता है। यदि ऐसी दशा सिर पर चोट लगने से हो जाती है तो प्रायः मृत्यु हो जाती है। इस प्रकार के आघातों में मनुष्य को शीघ्र पीठ पर लिटा देना चाहिए और उसके चारों ओर कदापि भीड़ नहीं लगने देनी चाहिए। यदि संभव हो तो शीघ्र डाक्टर को उसी स्थान पर बुलाकर उसे दिखा दो। अथवा उसे बहुत आराम के साथ लिटाए हुए किसी ऐसे वाहन में जैसे चार पाई वा डोली में रख कर अस्पताल लेजाइए। उस बीच में जब कोई वैद्य वा डाकटर को बुलाने

गया हो उस घायल के कपड़े को ढीला कर दीजिए और यदि जल निकट हो तो लाकर उसके मुख पर छींटे मारिए—और सिर के नीचे कोई तकिया न लगाइए किन्तु एक आदमी को चाहिए कि उसकी टांगे उठाए रहे। यदि आवश्यकता हो तो सांस चलाने के उपाय कीजिए (बाहन और सांस चलाने के उपाय के लिये इस लेख के अन्त में देखिए।)

यदि वह जल पी सकता हो तो उसे पीने के लिये जल दीजिए। और यदि निम्नलिखित औषधि मिल सके तो जल में मिलाकर दीजिए। परन्तु बेहोशी की हालत में मुख में जल डालने से फेफड़े में चला जा सकता है और इस प्रकार रोगी को हानिकारक होता है। वह औषधि यह है—

Spiritus Vini Gallici=इस्पिरिटस् वाईनाई गेलीसाई

One ounce = २॥ तोला

Ether — two ounces=ईथर — १ छटांक

इन दोनों को मिला कर पास रखना चाहिए और अवश्यकता के समय २० से ३० बूंद तक पानी में मिलाकर दीजिए। थोड़ी थोड़ी देर बाद दो तीन बार देने से कोई हानि नहीं हो सकती।

साधारण घाव वा व्रण।

मामूली घाव से जिनमें से खून निकल रहा हो। प्राण दो रीति से जाते हैं। एक तो यदि आघात के बाद खून बंद न हो तो थोड़े समय में घायल मर जाता है। और दूसरे घाव में मैली वस्तु अथवा किसी प्रकार के विष के चले जाने से विष सब शरीर में भिद जाता है और अन्त में उस

विष के जोर से मृत्यु हो जाती है—जैसे सर्प के काटने इत्यादि से। यूरोप के विद्वान लोगों के अनुसार ऐसी वस्तु जैसे सर्प का विष अथवा विषैली औषधियां ही केवल विष नहीं किन्तु कुछ ऐसे विष भी हैं जो मट्टी में, वायु में, जल में, और मनुष्य और पशु इत्यादि जीवों के मल मूत्र इत्यादि में वर्तमान हैं और हमारे नेत्रों से नहीं दिखाई देते। ऐसे विषों के देखने के लिये आज कल यूरोप देश के विद्वानों ने एक यंत्र निकाला है जिसे (Microscope) सूक्ष्मदर्शक यंत्र कहते हैं। इसकी सहायता से अनेक प्रकार के बहुत छोटे छोटे बीमारी के कीड़े (Pathogenic micro--organisms) दिखाई पड़ते हैं। ऐसे रोगों को उत्पन्न करने वाले विषैले कीड़े (जैसे फोड़ा, फेफड़े की क्षयी, कई प्रकार के ज्वर) नगरों की मट्टी धूल में लाखों वर्तमान रहते हैं। इतना मैंने उन लोगों के लिये लिखा है जो इससे कुछ लाभ उठाया चाहते हैं और हँसने वालों के हेतु नहीं। इस लिये मनुष्य को यथाशक्ति मृत्यु से बचाने और हानि न पहुंचाने के हेतु खून बन्द करने के समय घाव में मैले हाथ और मैले वस्त्र न लगाइए। यदि संभव हो तो खाली पानी से अथवा साबुन और पानी से वा साफ मट्टी वा राख और पानी से हाथों को घाव में हाथ लगाने के पहिले धो लीजिए। हाथों को मल कर पांच या छः मिनिट तक खूब साफ करना चाहिए। घाव के आस पास से वस्त्रों को दूर रखना चाहिए जिससे घाव सरलता से और अच्छी तरह बांधा जासके।

यदि अवसर मिले तो घाव को केवल स्वच्छ गरम किए हुए ठंढे जल से धोना चाहिए। यदि ऐसा जल मिलना

आघात के स्थान पर असंभव हो तो केवल स्वच्छ ठंडे जल ही का प्रयोग करना अनुचित नहीं। छोटे छोटे आघातों में इतने झगड़े की कोई आवश्यकता नहीं होती। पट्टी लगाने के लिये स्वच्छ रूई और वस्त्र काम में लाने चाहिएं। साफ रूई और पट्टियां पानी में आधे घंटे तक खूब उबाल कर घाव पर लगाने के योग्य हो सकती हैं। ऐसी रूई और पट्टियां जहां आघात बहुत हुआ करते हैं अवश्य सदैव वर्तमान होनी चाहिएं। बरनर्ड साहब ने लिखा है कि यदि जल न हो तो शराब वा मदिरा ही से (यदि पास हो) हाथों को धो लीजिए। परन्तु हमारे देश में जहां मदिरा केवल नीच लोग ही अधिक पीते हैं यह सम्मति ठीक नहीं है।

खून बंद करने के उपाय।

[Hamorrhage and its arrest.]

आघात के बाद यदि रुधिर का बहना घाव से बंद न किया जाय अथवा स्वयं न बंद हो जाय तो थोड़े काल में घायल मर जाता है। यदि घाव बहुत छोटा हो और खून थोड़ा थोड़ा देर तक निकलता रहे तो मनुष्य बहुत कमज़ोर हो जाता है। यह शरीर में अमृत के सदृश्य बह रहा है इस लिये इसे व्यर्थ कदापि न निकल जाने देना चाहिए। नाड़ी से रुधिर बड़े बेग के साथ पतली या मोटी धार में निकलता है और शीघ्र ही बहुत लोहू निकल सकता है। बड़ी नाड़ी के कट जाने से मृत्यु थोड़े ही काल में हो सकती है। इस लिये खून निकलने के समय आपको मालूम हो जाना चाहिए कि रुधिर नाड़ी, धमनी, वा केशोपम नाड़ियों से

निकल रहा है। क्योंकि यदि लोहू केशोपम नाड़ियों से निकलता हो तो बड़ी सरलता से बंद किया जा सकता है वा स्वयं बंद हो जाता है और रोना, पीटना, व्याकुल होना व्यर्थ है। किन्तु खून निकलने के समय रोने पीटने वा घबराने से सदा स्वयं चिकित्सा नहीं हो जाती परन्तु होश में रहने और उचित उपायों के करने से रुधिर बंद किया जा सकता है। इतना लिखने के लिये मुझे क्षमा कीजिएगा।

१ नाड़ी से (Bleeding from an artery) लोहू की धार बेग से रुक रुक कर पिचकारी से पानी के सदृश निकलती है और रुधिर लाल रंग का होता है। [प्रधान नाड़ियों के स्थानों को किसी डाक्टर की सहायता से अवश्य स्मरण कर लेना चाहिए।

२ धमनी से (From a Vein) रुधिर निकलने के समय काला होता है और कुछ गाढ़ा होता है। इसके अतिरिक्त उसकी धार शरीर से ऊंची नहीं उछलती किन्तु सोते में से जल सदृश निकलती है। ये धमनियां त्वचा के नीचे सर्वत्र वर्त्तमान हैं किन्तु हाथ पांव पर, ख़ास कर करपृष्ट और पदपृष्ठ पर तो उनके जाल ऐसे बिछे हैं। इस लिये इन स्थानों को अवश्य याद रखिए।

३ केशोपम नाड़ियों से (From capillaries) रुधिर बहुत धीरे धीरे निकलता है और जल की बूंदों के सदृश्य घाव पर एकत्रित हो जाता है। ये सूक्ष्म नाड़ियां शरीर के रोम रोम में व्याप्त हैं।

(२७-२८ चित्र।)

सूक्ष्म नालियों के खून का बंद करना। यदि

आपका निदान अर्थात् तशखीश ठीक हो तो केवल ठंढे जल से धोने से, बर्फ लगाने से अथवा स्वयं वायु के लगने से वह स्वयं थोड़े काल में बन्द हो जाता है। यह इस प्रकार के घाव से निकलता है जैसे गिरने में कंकड़ों की रगड़ से वा ऐसी छोटी छोटी चोटों से। यदि इनके साथ कोई धमनी वा नाड़ी भी कट गई हो तो उनकी चिकित्सा कीजिए। अन्त में घाव पर साफ कपड़े की पट्टी लगा दीजिए वा भींगे कपड़े से बांध दीजिए। यदि समय पर कोई वस्त्र तौलिया, धोती इत्यादि से ज्यादा साफ न मिले तो इन्हीं को काम में ले लाइए।

धमनी से निकलते हुए रुधिर को बंद करने के उपाय।

धमनियों के कट जाने से लोहू केशोपम नालियों की अपेक्षा अधिक निकलता है इसलिये उचित उपाय शीघ्र करना चाहिए। आपको मैं यहां फिर स्मरण कराता हूं कि धमनियों में रुधिर हृदय की ओर गति करता है।

(१) इसलिये पहिले हाथ वा पांव को धड़ से ऊंचा करके घाव के उस तरफ

(२) दबाव लगाइए जिधर से लोहू घाव में आरहा हो। यदि घाव पांव पर किसी स्थान पर हो तो घायल को शीघ्र पीठ पर लिटाकर उसकी टांग को धड़ से ऊंचा उठालो (२८ वां चित्र देखिए) और जब तक बंद न हो उठाए रखिए और दूसरे उपाय कीजिए।

(३) फिर यदि बर्फ समीप हो तो उससे वस्त्र भिगो कर वा उसके टुकड़े वस्त्र में लपेट कर घाव पर रखने चाहिएं और हांथ वा पांव पर से कड़े आभूषण वा और कोई ऐसी

वस्तु को जैसे कड़ा, बाजूबन्द, मोज़े बांधने के रबड़ के फ़ीते (जिनको स्कूल और कालेज के विद्यार्थी प्रायः बाँधे रहते हैं) हटा लेना चाहिए।

(४) अन्त में खून बंद होजाने पर घाव पर उचित उक्त विधि से पट्टी लगा देनी चाहिए। और हाथ के घावों में रूमाल अथवा और किसी चौड़े वस्त्र को गले में बाँध कर हाथ को लटका देना चाहिए। यदि घाव पांव पर हो तो पट्टी लगाने के पश्चात् उसे किसी प्रकार के समयानुसार वाहन में रखकर घर वा अस्पताल पहुंचा देना चाहिए।

कृपाकर उस भाग को देखिए जहां सर्प के काटने की चिकित्सा लिखी है।

नाड़ी से निकलते हुए रुधिर को बंद करना।

[Arrest of arterial hamorrhage]

यदि उक्त लक्षणों से आपको यह मालूम हो कि रुधिर किसी बड़ी नाड़ी से निकल रहा है—अर्थात् बेग से रुक रुक कर पिचकारी से जल के सदृश और लाल रंग का निकल रहा है तो शीघ्र सब काम छोड़ कर हाथ वा पांव को (सब से पहिले यही उपाय करना चाहिए) २८वें और २९वें चित्र के अनुसार धड़ से ऊंचा करके उचित प्रधान नाड़ी के ऊपर दबाव लगाइए वा घाव में साफ अंगुली से कटी हुई नाड़ी के मुंह को दबाकर बन्द कर लीजिए। प्रायः यह उपाय सफल होता है। यदि खाली अंगुली से न बन्द हो तो रूमाल इत्यादि स्वच्छ वस्त्र को घाव में भर कर उसे खूब दबाए रहिए। और इस बीच में किसी डाक्टर को बुलवा लीजिए अथवा शीघ्र दूसरे उपाय करके घायल मनुष्य

को किसी बाहन में लिटा कर चिकित्सालय वा डाक्टर के पास ले जाइए। स्मरण रखिए बाहन में भी हाथ वा पांव जिसके उठाने की आवश्यकता हो ऊंचा रखना चाहिए।

यदि अस्पताल वा डाक्टर निकट न हो तो दूसरे रीति से प्रधान नाड़ी को दबाना चाहिए जो कुछ देर तक काम दे- क्योंकि अंगुली और हाथ शीघ्र थक जाते हैं। जब नाड़ी त्वचा के नीचे है और हाथ से मालूम पड़ती हो (जैसे कनपटी की नाड़ी, जाबड़े के ऊपर मुंह की नाड़ी और कलाई पर की नाड़ी) तो एक रूमाल में थोड़ी रूई अथवा थोड़े कपड़े की गेंद सी बना कर लपेट लीजिए और उस गद्दी को नाड़ी के ऊपर दबा कर बांध दीजिए।

(२८-३० चित्र।)

यदि रूई वा और वस्त्र न मिले तो धोती, तौलिए, अंगोछे इत्यादि को फाड़ कर उन्हीं में एक बड़ी गांठ देकर उस गांठ को नाड़ी के ऊपर उसी रीति से दबा कर बाँध दीजिए। अथवा कोई साफ पत्थर का टुकड़ा वा खपड़ा वा रूपया, अथवा जो कुछ समय पर हाथ पड़े रूमाल वा किसी और वस्त्र में लपेट कर उसी रीति से बाँध दीजिए। कृपा कर प्रधान नाड़ियों के चित्र फिर देख लीजिए क्योंकि प्रत्येक का बताना व्यर्थ है।

इतनी बात स्मरण रखनी चाहिए कि गर्दन की नाड़ी के घाव में अंगुली से दवाने के अतिरिक्त और दूसरे उपाय जो आप लोगों को बताए हैं नहीं करते क्योंकि प्रधान नाड़ी को गर्दन में कपड़ा लपेट कर कसने से थोड़ीही देर में मृत्यु हो सकती है। इस लिये इस प्रकार के उपाय गले

की नाड़ी वा धमनी इत्यादि के लिये नहीं हैं—ऐसे स्थान के आघातों में शीघ्र किसी बुद्धिमान डाक्टर की चिकित्सा कीजिए ।

(३१ चित्र ।)

हाथ पांव के घावें को अन्त में बाँध कर यदि आवश्यकता हो (पांव के घावें में या जब घायल बहुत कमज़ोर हो गया हो, या बेहोश हो) तो बाहन में रखकर उसे अस्पताल को पहुंचा दीजिए ।

यदि कोई बहुत भीतर की नाड़ी कट जाय अर्थात् उन स्थानें में जहां आप अंगुली इत्यादि का दाब देर तक नहीं लगा सकें और हाथ शीघ्र थक जाय तो निम्न लिखित उपाय कीजिए ।

(१) कहीं कहीं हाथें को बांह पर झुकाने से हथेली के गहिरे घावें में से खून निकलना बंद हो जाता है—इस तरह झुका कर पोंहचे और बांह को छाती के साथ मिलाकर कपड़े से बाँध दीजिए ।

(२) बग़ल में कांख के थोड़े नीचे, कपड़े में लपेटी हुई एक लम्बी गोल लकड़ी (जैसे बांस का टुकड़ा) रख कर बांह से खूब दबाइए । और जब कुहनी के नीचे अंगुलियें तक के घावें में से खून निकलना बंद हो जाय तो बांह को उस लकड़ी सहित छाती के साथ एक लम्बी पट्टी से बांध दीजिए । ऐसा करने से बांह की प्रधान नाड़ी जो बांह से छाती की ओर होती है दब जाती है ।

(३१-३२ चित्र)

दबाव (Pessure) **लगाने की दूसरी युक्ति--अर्थात् घाव के ऊपर नहीं किन्तु उससे हट कर उसकी**

प्रधान नाड़ी पर दबाव लगाना जिससे घाव में लोहू का जाना बंद हो जाय। इस बात को समझ कर याद रखिए। इन मुख्य मुख्य नाड़ियों के स्थान के लिये पहिले भाग में चित्र देखिए। बांह में यह छाती की तरफ होती है, जांघ में कूले की हड्डी के ऊपर और सामने वाली नोक और पेड़ू के बीच में होती है। गले में प्रधान नाड़ियां वायु नल के (कंठ) के दहनी और बांईं ओर होती हैं। इनके स्थान किसी व्यवछेद्विद्या के जानने वाले डाक्टर वा वैद्य से सीखने चाहिएं।

गले के घावों में यदि प्रधान नाड़ी कट गई हो तो घाव के दोनों तरफ (ऊपर नीचे) अंगुलियों से रीढ़ पर दबाने से थोड़े काल तक लोहू निकलना बंद रख सकते हैं। दबाने के लिये हाथ के अगूंठे काम में लाने चाहिएं। (२९ चित्र) यदि हाथ थक जांय तो शीघ्र दूसरे आदमी को भी वैसेही नाड़ी को दबाना चाहिए। और यदि समय हो और रोगी मर न जाय तो डाक्टर को बुलाकर दिखा देना चाहिए।

कंधो के घावों में बांह को जाने वाली प्रधान नाड़ी को जो हंसुली की हड्डी के ऊपर होती है अंगूठी वा चाभी उलटी करके और कपड़े में लपेट कर दबाइए। इसका दबाना बिना किसी डाक्टर के सिखाए नहीं आसकता। ऐसे घावों के हेतु शीघ्र डाक्टर को बुलाना चाहिए।

हाथ पांव के घावों में से लोहू निकलना इन अवयवों (Limbs) की मुख्य नाड़ियों को जांघ में वा बांह में दबाने से बंद कर सकते हो। (३२ चित्र) इन स्थानों में निम्न लिखित

रीति से नाड़ी पर दबाव कर सकते हो। रूमाल वा तौलिए अंगोछे में एक चपड़ी (तख़्ते) के छोटे टुकड़े को वा एक चपटे पत्थर के छोटे टुकड़े को लपेट लीजिए और फिर इस पत्थर वा तख़्ते को नाड़ी के ऊपर रख कर रूमाल को बांह वा जांघ पर बाँध दीजिए। यदि यह उपाय सफल न हो तो हाथ वा पांव (Limb) के ऊपर रबड़ का मोटा चौड़ा फ़ीता अथवा रबड़ का नल लपेट कर खूब कस कर बाँध दीजिए। ऐसा करने से खून अवश्य बंद हो जाता है। यदि इन दोनों में कोई एक भी पास न हो तो रूमाल ही लपेट कर उसके दोनों सिरों को बाँध दो। फिर एक लकड़ी वा अंगुली, रूमाल और जांघ के बीच में रख कर उसको खूब मरोड़िए जब तक खून निकलना बंद न हो। यह बात स्मरण रखिए कि ऊपर लिखी हुई चिकित्सा केवल उस समय कीजिए जब और सब उपाय निष्फल हों, क्यों कि शाखा (Limb) को इस तरह कसने से उस स्थान के नीचे लोहू की गति बिलकुल रुक जाती है। और यदि २॥ या ३॥ घंटे से अधिक इस तरह हाथ वा पांव कसे रहें तो नीचे का भाग मुर्दा होने लगता है और ऐसा होने से जीवन को बहुत भय होता है। इसलिये इस उपाय को उसी समय कीजिए जब और उपाय बिलकुल काम न आंए और खून बंद किए बिना घायल के मर जाने का भय हो।

यदि लोहू का निकलना बिलकुल या थोड़ा बंद हो जाय तो घाव को अच्छी तरह सँभाल कर धोना चाहिए जिससे मट्टी इत्यादि धुल जाय। फिर स्वच्छ रूई और वस्त्र से घाव को बाँध देना चाहिए। यदि औषधि जिसका नाम

आयडोफार्म (Iodoform) है हो तो थोड़ी सी धुले हुए साफ घाव पर छोड़ कर तब पट्टी लगाइए।

यदि घायल बेहोश हो गया हो तो इतनी चिकित्सा करने के पश्चात् उसको होश में लाने वाले उपाय कीजिए। यदि खून बहुत निकल गया हो और घायल जल पी सकता हो तो उसे थोड़ा सा खानेवाला नोन पानी में मिलाकर दीजिए। इतना नमक न पिलाइए कि कै हो जाय। १० या २० रत्ती बहुत से पानी में मिला कर दीजिए और उसको लिटा कर सिर नीचे और पैर कुछ ऊंचे रखने चाहिएं—अर्थात् तकिया सिर के नीचे नहीं किन्तु पांवो के नीचे लगा दीजिए क्योंकि ऐसा करने से शरीर में बचे लोहू के मस्तिष्क में पहुंचने से होश जल्दी आती है इस बात को अच्छी तरह याद रखना चाहिए।

फिर इसी मध्य में डाक्टर के आजाने पर बाकी उचित चिकित्सा वह स्वयं कर लेंगे।

संक्षेप रीति से हाथ वा पांव के घावों की आरम्भिक चिकित्सा यह है।

(१) शाखाओं को (हाथ वा पांव) ऊंचा करना।

(२) घाव पर वा उसमें लोहू लानेवाली प्रधान नाड़ी वा धमनी को दबाना और इस तरह खून बंद करना।

(३) और अन्त में घाव को सफाई से साफ कपड़ों से बांधकर रोगी को डाक्टर को दिखादेना।

(४) यदि आवश्यकता हो तो डोली इत्यादि इस प्रकार के वाहन में घायल को रख कर अस्पताल वा घर लेजाना और मूर्छा आगई हो तो उसकी चिकित्सा करना।

आपको इतना और ज्ञान होना चाहिए कि कभी कभी हाथ पांव के कटजाने (जैसे रेल के नीचे आजाने इत्यादि से) के पश्चात् बिलकुल लोहू नहीं निकलता। इन आघातें में ठंढे जल से घाव को धीरे धीरे धो कर स्वच्छ रूई और वस्त्र में कटे हाथ पांव को लपेट देना चाहिए और शीघ्र अस्पताल वा डाक्टर के पास ले जाना चाहिए क्योंकि थोड़े घंटों के बाद ऐसे घाव प्रायः सड़ने लगते हैं और फिर घायल को महीनों तक रोगी हो कर चारपाई पर पड़ा रहना पड़ता है और कभी कभी वह मर भी जाता है।

नाक से खून निकलने (नकसीर) की चिकित्सा।

जब नाक से स्वयं बिना आघात के खून निकलने लगे तो मनुष्य को अपने गले के कपड़े ढीले करके गर्दन सीधी कर लेनी चाहिए और थोड़ी आगे को झुका लेनी चाहिए। और यदि ठंढा पानी हो तो सिर और नाक दोनों के ऊपर खूब लोटे से डालो। जब मनुष्य लेटा हो तो उसे एक कर्वट पर कर देना चाहिए। यदि खून न बंद हो तो नाक पकड़कर हाथ से दबाइए। और यदि साफ रूई वा वस्त्र (जैसे रूमाल) हो तो उनको नाक के भीतर भर कर नाक को दबाइए। और यदि फिटकिरी (Alum) हो तो उसे थोड़े से पानी में मिला कर उसमें रूई वा वस्त्र को पहिले भिगो लीजिए, फिर थोड़ा निचोड़ कर नाक में लगा दीजिए। यदि इस पर भी खून बंद न हो तो डाक्टर की चिकित्सा कीजिए।

मुख से खून थूक में आना ।

चिकित्सा—यह भारतवर्ष में फेफड़े की एक बीमारी (क्षयी रोग) में प्रायः निकलता है और दूसरे रोगों में भी आता है। कभी कभी मसूड़ों से निकल कर थूक में मिल जाता है। यदि आरोग्य मनुष्य में यात्रा करते करते एक साथ बहुत खून मुंह से निकले और उसे ऐसा मालूम हो कि गले में से आता है तो उसको एक कर्वट लेट जाना चाहिए। और यदि वह यात्री हो तो उसे आगे न जाने दीजिए। उसे किसी वाहन पर रख कर ठहरने के स्थान पर ले जाओ।

खून का कै के साथ निकलना ।

चिकित्सा। यह मनुष्य के पेट के बल पत्थर इत्यादि पर गिर पड़ने से आमाशय से खून कै करने के साथ आ सकता है। प्रायः रोगियों में आमाशय के व्रण से भी आता है। खून काले रंग का होता है और लाल नहीं। लाल रंग का लोहू मुंह गले या फेफड़े से आता है। ऐसे मनुष्य को ठंढा जल वा बर्फ दीजिए। और चित्त शान्त होने पर उसे आराम से बाहन में किसी पास ठहरने के स्थान को ले जाइए।

घाव को बाँधना ।

(३३–४० चित्र)

अर्थात लोहू निकलना बंद करके उसे स्वच्छ जल से साफ करके स्वच्छ किए वस्त्र की पट्टियों से और रूई से बाँध दीजिए। किन्तु यह साफ की हुई बाँधने की वस्तु

आघात के समय सर्वत्र तो नहीं मिल सकेगी इसलिये समय पर साधारण रीति से साफ किए वस्त्रों को काम में लाइए। बड़े बड़े पुतली घर वाले वा रेलवाले और धनिक लोग इनको निम्न लिखित विधि से साफ करके सदा अपने पास रख सकते हैं।

(१) पतली गज्जी को जो पहिले धोबी के घर की धुली हुई हो और जिसमें कलफ न लगाया गया हो ले कर उसे साफ पानी में आध घण्टे तक अच्छी तरह उबालिए। और अन्त में साफ हाथों से वा साफ लोहे की चिमटियों से पकड़ कर निकालिए फिर, साफ डोरियों पर लटका कर ऐसे स्थान में घाम में सुखाइए जहां गर्द न उड़ती हो। इतना करना आपके लिये काफी है।

(२) नई धुनी हुई रूई की रजाई के सदृश छोटी छोटी गद्दियां बनाकर इसी रीति से जल में उबाल कर सुखा लीजिए।

(३) पट्टियां किसी पतले वस्त्र में से फाड़ कर बनाइए। लंबी जितनी इच्छा हो बनाइए। किन्तु चोड़ाई यदि वस्त्र खराब न किया चाहें तो नीचे की नाप से काट लीजिए। (१) एक इंच वाली, (२) १॥ इंच वाली, (३) २॥ इंच वाली और (३) ४ वा ४॥ इंच वाली पट्टियां बना कर रख लीजिए।

इन साफ किए हुए रूई और कपड़ों को एक साफ बक्स में बंडल बना कर रख छोड़ना चाहिए।

परन्तु आघात के समय यदि वस्तु न हो तो मामूली रूमाल, तौलिया धोती दुपट्टा इत्यादि जो लम्बा और

चौड़ा वस्त्र मिलजाय उसीसे घाव को बांधिए। जहां तक हो किसी प्रकार का रँगा कपड़ा और मट्टी से मैला कपड़ा घाव पर न रखना चाहिए।

बांधने की बिधि। सब से सरल बांधन उस प्रकार की पट्टी का है जिसको तिकोनी पट्टी (Triangular bandage) कहते हैं। इसे शीघ्र रूमाल ऐसे चौकोर वस्त्र के दुहराने से बना सकते हैं। इसे शरीर के प्रत्येक भाग में आघात के समय सरलता से लगा सकते हैं। और ये पट्टियां उस समय तक जब तक किसी डाकटर की सहायता न मिले पूरा काम दे सकती हैं। बाँधने के लिये कहीं कहीं आपको इसके कई पर्त करके लम्बी पट्टी के सदृश बनाना पड़ेगा। परन्तु गले में हाथ लटकाने के लिये (Sling) अथवा कुहनी, कूले, हाथ और पैर इत्यादि के घावों के लिये इस तरह लपेटने की कोई आवश्यकता नहीं है। चित्र देखिए और किसी बुद्धिमान् डाक्टर से इनका बाँधना सीख लीजिए। हथेली, करपृष्ठ, पोंहचे, कुहनी इत्यादि के आघात में हाथ को गले में एक रूमाल वा अंगोछे से लटका लेना चाहिए।

सिर के घावों के लिये भी पट्टी शीघ्र बड़े रूमाल वा तौलिए, वा अंगोछे के दो किनारों के बीच में थोड़ा फाड़कर बनालेनी चाहिए (३५ चित्र देखिए) सिर पर रख कर दो दो किनारों की तरह तरह की पट्टियां घात के स्थान के अनुसार बाँध सकते हैं।

(२) लम्बी पट्टियां भी घाव इत्यादि बाँधने के काम में आती हैं किन्तु मैं आपसे पहिले ही कह चुका हूं कि यह

समय पर सरलता से नहीं मिल सकती और इनका बाँधना भी सहज नहीं है। यह नैनसुख, फलालेन इत्यादि वस्त्रों में से काट कर बनाई जाती हैं। कम चौड़ी ऐसे स्थानों के लिये जैसे अंगुलियां और हाथ, पांव, जांघ, धड़ इत्यादि के लिये होती है। इन्हें लपेट कर रखना चाहिए। (३९-४० चित्र देखिए) बाँधने के समय बाहर वाले सिरे से आरंभ कीजिए। अन्त में उन्हें सी दीजिए वा गांठ देकर बाँध दीजिए।

पट्टी बांधने के प्रयोजन-घाव के किनारों को मिलाने के लिये, दबाकर घाव से खून बंद करने के लिये और घाव को मक्खी, मट्टी इत्यादि ऐसी हानिकारक चीज़ों से बचाने के लिये और घाव के ऊपर लगे हुए रूई और वस्त्र को घाव पर रखने के लिये यह बाँधी जाती है। अभ्यास करने के समय चित्रों को देखना चाहिए।

सिर, छाती इत्यादि के घावों में घायल मनुष्य को बाहन पर लिटा कर अस्पताल वा घर पहुंचा दीजिए। हाथ पांव के बड़े बड़े घावों में ऐसा ही करना उचित है। और हाथ के मामूली घावों में केवल हाथ को गले में लटका कर घायल स्वयं जा सकता है। पांव और सिर इत्यादि की बड़ी बड़ी चोटों में बिना डाक्टर की सम्मति के बहुत नहीं चलना चाहिए।

विषैले घाव।

(४१ चित्र।)

इससे प्रायः साधारण लोग सांप या विच्छू के काटे हुए घावों को समझते हैं। किन्तु कई प्रकार के कीड़े मक्खियां

जैसे मच्छर, बर्रे, इत्यादि और पागल कुत्ते के काटने का घाव ये सब भी विषैले घाव है। एक प्रकार के विष को अफ्रीका में मक्खियां एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य को ले जाती हैं। ये मक्खियां काटने के समय उस जहर को भी घाव में निकाल देती हैं। इस विष से आदमी को ऐसी नींद आती है कि वह फिर जागता नहीं। इसलिये बुद्धिमान् जन इन मक्खियों के काटने पर शीघ्र कुछ उपाय करें। ऐसा मालूम होता है कि एक दिन यह बीमारी भी इस देश में फैल जायगी क्योंकि हमारे भारतवासी लोग अब अफ्रीका को बहुत जाने लगे है। किसी दिन वे अपने साथ वे विष फैलाने वाली मक्खियां भी लेआवेंगे। इसी तरह एक प्रकार के मच्छड़ जिन्हें एनाफिलीज़ (Anapheles) कहते हैं और जो पानी पर अपने अंडे रखते हैं अंतर, तिजारी, चौथिये इत्यादि के विष को एक रोगी से दूसर आरोग्य मनुष्यों के खून में लेजाकर मिला देते हैं। यदि अच्छा समझें तो आप लोग इनसे बचने का प्रयाश कीजिए। इनका विष कुनैन (Quinine) से शरीर में बिलकुल नहीं रह जाता। निवासस्थानों के निकट नाबदान, तालाब, इत्यादि नहीं होने चाहिएं। ये बहते जल में नहीं रहते परन्तु स्थिर और खास कर मैले पानी में अपना घर बनाते हैं। इससे बुरा और सर्वत्र फैला हुआ रोग भारतवर्ष से बढ़कर और कहीं नहीं है जो कीड़ों के काटने से होता हो। कुछ दिन से प्लेग ज़ादा होरहा है। इसको चूहों पर रहने वाले पिस्सू फैलाते हैं।

मच्छड़, मक्खी के काटने की चिकित्सा।

काटने के समय विष डंक मारने वा काटने के स्थान ही पर होता है और उससे खुजली सी जलन होने लगती है। प्रत्येक मच्छड़ मलेरिया (Malaria) अर्थात् अंतर, तिजारी और चौथिये के विष को नहीं फैलाता।

(१) उसी समय त्वचा को पकड़ कर खूब दबाकर वा मसल कर विष और डंक को यदि भीतर रहा गया हो बाहर निकाल दो और गरम या ठंढे पानी से खूब मसल मसल काटे हुए भाग को धो के, यदि दर्द अधिक हो तो

(२) पारे की मलहम (Blue ointment) थोड़ी सी [आधे अरहर की दाल के बराबर] लेकर अंगुली से धीरे धीरे काटे हुए स्थान पर लगा दो।

(३) किसी प्रकार के कीड़े के डंक मारने के स्थान पर यदि दर्द होने लगे तो कुछ और न मिले तो नमक के पानी में कपड़ा खूब तर करके उस स्थान पर रख दीजिए अथवा सेंधे नमक के टुकड़े को भिगो कर उस स्थान पर मलिए।

बर्रे, शहद की मक्खी इत्यादि के डंक मारने की चिकित्सा।

[१] प्रथम तो वही करो जो मच्छड़ों के लिये बताया गया है।

[२] यदि एमोनिया (Liquor Ammonia) पास हो तो उसे डंक मारने के स्थान पर मलिए। यह औषधि आंख और

ओष्ठ के पास कदापि नहीं लगानी चाहिए क्योंकि आंख या ओठ पर इसके लगने से बड़ी जलन होने लगती है।

[३] यदि किसी तरह डंक मारने पश्चात् उस स्थान का खून निकल जाता है तो उसके साथ विष भी निकल जाता है और दर्द शीघ्र बंद हो जाता है।

[४] प्याज़ (Onion) काट के उसको डंक मारने के स्थान पर मल दो।

बिच्छू के डंक मारने की चिकित्सा।

(Scorpion sting)

मद्रास में १८७२ में "नर्सिंग इन इण्डिया" नामक पुस्तक में निम्न लिखित चिकित्साएं छपी थीं।

(१) घाव पर इपीकेकुआन्हा (Ipecacuanha Root) की जड़ के चूर्ण को एमोनिया (Liquor Ammonia) में मिला कर गाढ़ा लेप बनाओ। फिर इसको डंक मारने के स्थान पर चढ़ा दो और कुछ काल तक मलो।

(२) अथवा कास्टिक् (Caustic) से डंक मारने के स्थान को जला दो।

(३) और फिर रोगी को ब्रांडी मदिरा (Brandy) जल में मिला कर पिलाओ। या इसके स्थान में स्पिरिटस् एमोनिया एरोमैटिकस् (Spiritus Ammonia Arometicus) २० से ३० बूंद तक जल में मिला कर पिलाओ।

हमारे देश की चिकित्सा। इसको सब लोग जानते हैं कि जहर डंक मारने के स्थान से ऊपर को चढ़ता है।

यह भी सब को ज्ञात है कि अधिक करके बिच्छू को हाथ वा पांव की अंगुलियों पर वा हाथ और पैर (Hand and foot) पर डंक मारने का मौका मिलता है। हमारे यहां इसी लिये प्रत्येक स्त्री भी बिच्छू के डंक मारने के पश्चात् अंगुली या पहुँचे और टांग पर डोरी से कस कर बन्द लगा देती है। डंक मारने के स्थान से थोड़े ऊपर की तरफ हट कर मज़बूत डोरी अंगुली या कलाई पर जहां उचित समझो शीघ्र बाँध दो।

पागल कुत्ते के काटने की चिकित्सा।

(१) आज कल पंजाब सरकार की ओर से कसौली में एक चिकित्सालय बना है जहां विषैले घावों की चिकित्सा की जाती है। यदि कुत्ता पागल हो तो तो २१ दिन तक प्रायः कुछ विष के लक्षण नहीं दिखाई देते। इसलिये मामूली कुत्ते और बिल्ली और सियार के काटने से मनुष्य को बहुत व्याकुल नहीं होना चाहिए, क्योंकि बहुत से कुत्ते बिल्ली के काटने पर भी कुछ हानि नहीं होती। केवल पागल कुत्ते शृगाल इत्यादि के काटने से कुछ दिन बाद असर होता है। इसलिये धैर्य के साथ शांत चित्त होकर यथोचित चिकित्सा करनी चाहिए। पंजाब से प्रायः रोगी कसौली चले जाते हैं। यह चिकित्सा केवल उसी स्थान पर कुछ दिन [कदाचित २१ दिन तक] ठहरने से हो सकती है। इस चिकित्सा से प्रायः लोग बच जाते हैं, यदि वे शीघ्र वहां चले जांय।

(२) काटने के समय घाव के ऊपर जैसे बिच्छू के डंक मारने पर करते हो यदि संभव हो तो डोरी या रस्सी लपेट

कर कस दो और घाव को गरम जल से खूब धोकर डाक्टर के पास अथवा अस्पताल चले जाओ । यदि अस्पताल या डाक्टर निकट न हो तो घाव को धोनेके पश्चात् तेज़ चाकू से दांत लगे भाग को ऊपर ऊपर से काट कर निकाल दो और ध्यान रक्खो कोई नाड़ी या धमनी न कट जाय । अथवा घाव को थोड़ा और चाकू से बड़ा करके उसमें से खूब खून निकाल दो । फिर धोकर बांध दो। या कोई तेज़ कास्टिक जैसे (Pure Carbolic acid) कार्बोलिक ऐसिड केवल घाव के ऊपर पर लगा दो । पहिले एक सींक में थोड़ी रूई लपेट लीजिए और उसको कार्बोनिक एसिड की शीशी में डालकर भिगो लीजिए और घाव को उससे एक बार जला दीजिए ।

(३) थियोडोर डी० वूल्सी ने अपनी "हैण्डबुक आफ़ नर्सिंग" (Hand-book of nursing) नामक पुस्तक में पागल कुत्ते के काटने और सांप के काटने की एक ही चिकित्सा लिखी है । वह यह है ।

(१) काटने के समय मनुष्य को चाहिए कि वह यदि घाव को अपने दांतो के बीच में दबा सकता हो तो पकड़ कर उसमें से खून और विष दोनों को चूस कर थूक दे । ऐसा उसको कई बार करना चाहिए । अन्त में अपना मुंह साफ कर डालना चाहिए ।

(२) और यदि उस स्थान पर पट्टी बाँधी जा सकती हो तो रूमाल को घाव से कुछ ऊपर हट कर लपेट कर कस दो ।

(३) और इस बीच में लोहे की कील या चाकू को आग में लाल करके घाव को अच्छी तरह जला दो ।

(४) इसके पश्चात् रोगी को ब्रांडी (Brandy) दो" । परन्तु इसके स्थान में आप (Spiritus Ammonia Aımeticus) एमोनिया की स्पिरिट जल में मिलाकर दे सकते हैं ।

(५) यदि कास्टिक् हो तो आग से जलाने के स्थान में घाव को इसीसे जला दीजिए ।

देशी इलाज़—पंजाब में द्वाबे में फ़ीरोजपुर के पास एक स्थान है जिसका नाम मोगा है । वहां एक आदमी पागल कुत्तों के काटे हुए घावों की चिकित्सा करता है और लोग कहते हैं कि घायल फिर बिलकुल अच्छा हो जाता है । मैं नहीं जानता यह बात कहां तक यथार्थ है ।

सर्प के काटने की चिकित्सा ।

लक्षण—काला सर्प बहुत विषवाला समझा जाता है परन्तु पंजाब में झंग की ओर एक छोटा सर्प मटीले रंग का होता है । वह सदैव गुड़री मार कर बैठा रहता है और मेंढ़क के सदृश उछल उछल कर चलता है । कहते हैं वह बड़ा विषवाला होता है ।

विषैले सर्प के काटने से घाव में बड़ा दर्द होता और उसके चारों ओर चमड़ा नीला हो जाता है । मनुष्य प्रायः शीघ्र वा थोड़ी देर के पश्चात् बेहोश होजाता है और उसके हाथ पांव ठंढे और कड़े होजाते हैं । मुंह का रंग बदल जाता है और जीभ सूज जाती है और जावड़े और गले की पेशियों में ऐंठन होती है । यदि ये लक्षण कम न हों तो कुछ काल में मनुष्य मर जाता है ।

प्रारम्भिक चिकित्सा । यूरोप के बड़े विद्वानों की

सम्मति इस विषय में एक ही है। सब का उपदेश यही है कि आघात के समय यदि संभव हो तो मुंह से विष और खून चूसकर थूक दो। और एक डोरी या पट्टी घाव से कुछ ऊपर कसकर बाँध दो। अन्त में आग या कास्टिक से घाव को जला दो। यह मत डाक्टर थिलरोथ, डाक्टर वरनर्ड, डाक्टर रे इत्यादि के हैं। मैं केवल एक की चिकित्सा लिखे देता हूं।

डाक्टर रे ने अपने एम्बुलेन्स व्याख्यानों में सर्प के काटने की निम्न लिखित चिकित्सा दी है।

काटने के समय घायल मनुष्य स्वयं मुंह से जैसे ऊपर बताया गया है विष को चूस कर थूंक दे और फिर गरम लोहे या कास्टिक से घाव को जला दे। और गरम जल से घाव को खूब तर करना चाहिए जिससे खून खूब निकले। आशय यह है कि इस प्रकार के घाव में से निकलते खून को उसी समय नहीं बंद करना चाहिए। आपको लौट कर फिर घावों की चिकित्सा देखनी चाहिए। आपको आगे यह कहा गया है कि घाव से निकलते लोहू का शीघ्र बन्द करना चाहिए। किन्तु यहां यदि ऐसा किया जाय तो धमनी द्वारा कुछ काल में विष हृदय को पहुंच जाता है और वहां से सब शरीर में शीघ्र फैल जाता है क्योंकि अन्दाजन २४ घंटे में रुधिर १८५० बार हृदय से चल कर फिर हृदय को लौट आता है, अर्थात् अन्दाजन ४७ पल में एक बार ऐसा होता है। इस से यह चिकित्सा सांप के काटते ही काम दे सकती है। विष उसी समय इतना शीघ्र शरीर में फैल सकता है जब वह बहुत तेज़ हो जैसे सर्प का विष क्योंकि शरीर की रक्षा करने वाले और रुधिर में सदा वर्त्तमान योधा लोग इसको नहीं रोक सकते।

नाईट्रिक् ऐसीड (Nitric acid) अर्थात् शोरे के तेज़ाब से और गरम लोहे से घाव को जलाना अच्छा है।

डाक्टर रिचर्ड्स (Dr. Richards) की चिकित्सा जो रे साहब ने लिखी है यह है।

पहिला नियम--यदि सामने हाथ वा पांव (Limbs) इन दोनों में से किसी पर काटा हो तो काटने के स्थान से कुछ ऊपर हट कर खूब जोर से पट्टी वा डोर लपेट कर बाँध दो जिससे रुधिर की गति हृदय की ओर बंद होजाय और घायल मनुष्य को ५ से ३० बूंद तक टिंकचर आफ ओपिआई (Tincture of opii) शक्ति और आयु का विचार करके जल में मिला कर पिला दीजिए (५ वर्ष से छोटे बच्चों को मेरी सम्मति में केवल डाक्टर की सम्मति से यह देना चाहिए)।

दूसरा नियम-और घाव में एक प्रकार की पिचकारी से जिसे हाईपोडरमिक् सिरिंज (Hypodermic syringe) कहते हैं निम्न लिखित औषधि मिले हुए जल को डाल दीजिए। वह औषधि यह है-ढ़ाई रत्ती (5 Grains) पोटेसियन परमेंगनेट (Potassium prmangnate) ५० बूंद पानी में मिला कर किसी शीशे की प्याली में रखलो-यह सदा ताज़ा बना लेना चाहिए। यह क्रिया केवल विद्वान डाक्टर से ही करानी चाहिए।

तीसरा नियम-उन्होंने इसी स्थान पर घाव के एक फ़स्त (अर्थात् धमनी) खोलने की भी सलाह दी है किन्तु यह भी कार्य कोई व्यवछेद विद्यार्थी ही कर सकता है। इसकी इतनी आवश्यकता भी नहीं है।

चौथा नियम-बारीक या सूक्ष्म घाव को तेज़ चाकू से बड़ा करके शीघ्र उसमें पोटेसियम् परमेंगनेट (Potassium Permangnate) भर दीजिए। ऐसा करने के पहिले घाव को गरम लोहे से जला देना चाहिए।

इस चिकित्सा को सदा स्मरण रखिए और इस औषधि को अवश्य प्रत्येक को रखना चाहिए।

इस औषधि के लगाने का एक छोटा सा यंत्र अब बहुत कम दाम पर मिलता है इसे ले रखना चाहिए।

पंचवां नियम-फिर ऐसी औषधियां जो हृदय को ताक़त देती हैं देनी चाहिएं। जैसे ईथर स्पिरिटस् एमोनिया एरोमेटिकस्।

छठां नियम-रोगी को आराम से चुप चाप लेटा रहने दो और यदि आवश्यकता हो तो दूसरी बार उक्त औषधि टिंकचर ओपिआइ (Tincture opii) जल में मिला कर पिला दो।

ये नियम १८८४ में छपे थे।

"विष और उनके खाने से जो लक्षण उत्पन्न होते हैं" (Poisons and their Effects) इस नाम की एक पुस्तक में जो अंग्रेजी में छपी है सर्प के विष का ज़हरमोहरा निम्न लिखित औषधि को बताया है—

पुटेसियम परमेंगनेट।

(Potassium Permangnate)

इसको सदा प्रत्येक कुटुम्ब में रखना चाहिए और समय पर शीघ्र घाव में भरदेना चाहिए। यदि घाव बहुत

पतला हो तो किसी चाकू इत्यादि से थोड़ा सा बढ़ा लेना चाहिए। किन्तु यह काम सबसे नहीं हो सकता। इसलिये काटते ही यदि सम्भव हो तो स्वयं अथवा दूसरा मनुष्य घाव को दांतो के बीच में जोर से दबा कर विष और रुधिर दोनो को खींच ले और थूक दे। **यही बात मेरी सम्मति में सिंगी से बड़ी सरलता से** की जा सकती है और इसमें कदाचित् किसी को कुछ डर की संभावना न होगी। केवल इसमें और अन्य चिकित्साओं में इतना भेद है कि उन सब के करने में कुछ समय लगेगा और कभी कभी सर्प ऐसे विषैले होते हैं कि काटने के थोड़ेही मिनिटों के पीछे मनुष्य मूर्च्छित हो जाता है। काटने के समय व्याकुल नहीं होना चाहिए।

एनटीविनोमस सीरम (Anti-venomous Serum) एक औषधि है जो उन घोड़ों के खून से बनाई जाती है जिनको सर्प के काटने से विष नहीं चढ़ता। इन घोड़ों के शरीर में कुछ दिन तक सर्प के विष को पिचकारी से ढालते हैं और फिर उस समय जब उसको सांप के काटने से कोई हानि या नशा नहीं होता तब उसके खून से यह औषधि तय्यार की जाती है। आप समझ सकते हैं भांग खाने वाले को आरंभ में तो बहुत नशा होता है किन्तु कुछ काल के पश्चात् उसको बहुत भांग खाने से भी नशा कम होता है। इस तरह इन घोड़ों के शरीर में विष डालते डालते कुछ दिन पश्चात् बहुत विष से भी कुछ असर नहीं होता। यह औषधि डाक्टरों को मालूम है और इसकी चिकित्सा उन्हीं

से करानी चाहिए–यह औषधि यदि समय पर पहुंच जाय तो कैसाही विषवाला सांप क्यों न हो मनुष्य अवश्य अच्छा हो जाता है।

पंजाबी चिकित्सा–(१) कुछ लोग मुख में घी भर कर फिर विष को घाव से चूसते हैं। यह विधि अच्छी मालूम होती है। अन्त में फिर घी के कुल्ले करके मुंह साफ कर डालते हैं। ऐसा कई बार करना चाहिए।

(२) किसी स्थान में सांप के काटने पर मनुष्य को प्याज़ और घी खूब खिलाते हैं और प्याज को घाव पर मलते हैं। यही बिच्छू के डंक मारने पर भी करते हैं। लोग इस चिकित्सा से बहुत से बच गए हैं।

(३) पटियाला राज्य में एक गांव है वहां एक कुटुम्ब है। इन्होंने सांप के काटे हुए मनुष्यों को जो घंटो तक बेहोश रहे हैं अच्छा कर दिया है। नहीं मालूम उनकी क्या चिकित्सा है, परन्तु इतना मैंने सुना है कि वे नीम की पत्तियों को घाव के ऊपर हिलाते हैं और उनके सूख जाने पर दूसरी डाल लेकर फिर वैसाही करते हैं, जब तक मनुष्य होश में नहीं आता, ऐसा ही करते रहते है।

जलना।

कारण–मनुष्य नीचे लिखे कारणों से जल सकता है। आग और गरम जल से तो जलजाना सब जानते हैं। इसके अतिरिक्त बत्ती, दियासलाई, गरम लोहे, शीशे से भी ऐसे आघात उत्पन्न हो सकते हैं। कभी कभी दूकानदार स्वर्णकार और कालेज के विद्यार्थी तेज़ाब और कास्टिकों से भी जल

जाते हैं। बिजली से तथा बंदूक इत्यादि की बारूद से भी ऐसा हो सकता है।

भेद–जलने के तीन भेद हैं।

(१) एक वह जिसमें केवल जलने से त्वचा का रंग लाल होजाय और वह सूज जाय।

(२) यह पहिले प्रकार से कुछ और बुरा है और इसमें आघात के स्थान पर पानी से भरे छाले (या फफोले) पड़जाते है।

(३) इसमें उस स्थान की त्वचा भस्म होकर सफेद हो जाती है अर्थात् उस स्थान का नाश हो जाता है। इस जले भाग के निकल जाने से बड़े बड़े घाव होजाते हैं।

किसी एक भाग के जल जाने में इतना भय नहीं होता जितना सब शरीर अथवा आधे अंग के जलने से। क्योंकि यह प्रायः देखा जाता है कि कपड़ों में आग लग जाने पर मनुष्य कभी कभी थोड़े घंटों में मर जाता है। ऐसे बड़े बड़े आघातों में अवश्य किसी डाक्टर की सहायता लेनी चाहिए।

चिकित्सा–डाक्टर बिलरोथ ने निम्न लिखित चिकित्सा अपनी पुस्तक में लिखी है।

(१) यदि किसी आदमी वा बच्चे के कपड़ों में आग लग गई हो तो उसे शीघ्र ज़मीन पर लिटा दो और उसको किसी मोटे वस्त्र से (जैसे दरी वा चदरे से) शीघ्र बिलकुल ढक दो जिससे उसके बत्ती के सदृश जलते हुए वस्त्र बुझ जांय। कपड़े के डालने के पश्चात् उसके ऊपर जल भी डा लो। और जब गरम कपड़े ठंढे होजांय तो उन्हें उतार

लो। इसलिये यदि आपके पास कोई कपड़ा डालने वाला न हो तो आपको चाहिए कि कपड़ों में आग लगने पर इधर उधर भागने की अपेक्षा ज़मीन पर बेलन की तरह लोटने लगे और यदि कोई मोटा कपड़ा हाथ पड़ जाय तो उससे एकदम् कुल शरीर को ढक लो। यदि कपड़ा धीरे धीरे डाला जाय तो वह स्वयं जल सकता है। यह आप अग्नि और दीपक में करके स्वयं देख सकते हैं किन्तु किसी मोटे वस्त्र से अग्नि या दीपक को एकदम् ढकने से दीपक उसी समय बुत जाता है और थोड़ी देर में अग्नि भी बुत जायगी क्योंकि बिना आक्सीजन् (Oxygen) गेस के अग्नि या दीपक नहीं जल सकता।

(२) यदि शरीर पर, हाथ वा पांव पर उबलता हुआ पानी गिर जाय तो शीघ्र उन्हीं स्थानों पर ठंढा पानी डाल देना चाहिए। हमारे देश में इसी रीति से स्त्रियां रसोई बनाते समय प्रायः जल जाती हैं।

(३) यदि शरीर पर किसी प्रकार का तेजाब (जैसे गंधक का तेजाब, नमक का तेजाब, शोरे का तेजाब) अथवा कोई कास्टिक हाथ पांव वा वस्त्र पर गिर जाय तो उसी समय बहुत सा पानी इन स्थानों पर छोड़ना चाहिए। ऐसा करने सें इन औषधियों का जोर कम हो जाता है।

(४) अग्नि इत्यादि के जलने से थोड़े ही समय में वायु लगने से बहुत दर्द होने लगता है। इसके लिये डाक्टर की सम्मति लेनी चाहिए। उस समय तक जब तक किसी डाक्टर की सम्मति न हो, जले हुए स्थानों को किसी रीति से वायु से बचाना चाहिए। जले हुए वस्त्रों को शरीर पर से बड़ी

खबरदारी के साथ उतारना चाहिए क्योंकि कभी कभी जली हुई त्वचा कपड़े की रगड़ से छिल जाती है। इसलिये यदि उचित समझिए तो कैंची इत्यादि से कपड़े फाड़ कर टुकड़े टुकड़े करके उतारिए।

और फिर उनके (जले स्थानों पर) ऊपर कोई वस्त्र लपेट दीजिए। यदि छालों में जल भर आया हो तो उनको सूई से फोड़ कर उनका पानी निकाल दीजिए। छेदने के पहिले सूई को एक बार तपा कर साफ कर लेना चाहिए। इन दोनों प्रकार के छालों पर नीचे लिखे तेल में साफ कपड़े के टुकड़ों को भिगोकर रख देना चाहिए। किन्तु घावों के ऊपर कदापि ऐसा नहीं करना चाहिए। उनकी चिकित्सा के लिये डाक्टर की सम्मति अवश्य लेनी चाहिए। ऐसा न करने से प्रायः बहुत जला हुआ मनुष्य मर जाता है।

तेल।

अलसी का तेल १ पाव (१ भाग)
चूने का पानी भी १ पाव (१ भाग)

अर्थात् तेल और चूने का पानी बराबर बराबर लेकर मिला लेना चाहिए। चूने का पानी इस रीति से बना लेना चाहिए। खाने वाले चूने के ऊपर दो चार बूँद पानी डाल दो। जब वह खिल जाय और ठंढा हो जाय तब उस में से आठ रत्ती एक पाव पानी में (इस अन्दाज से) मिलाओ और जितने तेल की आवश्यकता हो इसी रीति से बना लो।

और फिर इस तेल में भीगे कपड़े को रख कर उनपर

साफ कपड़े की पट्टियां लपेट दीजिए और डाक्टर को बुलाकर दिखाए।

यदि यह आघात ऐसे किसी स्थान में लगे जैसे गांव में जहां डाक्टर कुछ देर में मिल सकता है तो चावलों (धुले और सूखे) का बारीक पीसा आटा जले स्थानों पर डाल दो। यह घावों पर चिपक जाता है और यदि मवाद न पड़ा हो तो सूखकर स्वयं गिर जाता है। इससे यह आशय नहीं कि आप किसी और वैद्य वा डाक्टर की सम्मति न लें।

मैंने यह स्वयं देखा है कि जले हाथ वा अँगुली को (चाहे वे गरम पानी या गरम तेल इत्यादि से जल गए हों) सूखे आटे या ठंढे तेल में डुबो रखने से दर्द बहुत कम हो जाता है और बड़ा आराम मिलता है और प्रायः छाले नहीं पड़ने पाते।

सूर्य्य से अथवा वर्फ

में चलने से कभी कभी एक प्रकार का वर्म त्वचा पर पैदा हो जाता है। यह शहरों में नहीं देखा जाता। कभी कभी उन यात्रियों में देखो जाता है जिन्हें धूप में बहुत देर तक चलना हो। ऐसे आघातों के लिये डाक्टर की सहायता सरलता से प्रत्येक मनुष्य को मिल सकती है। कभी कभी यात्रियों में प्रायः मुख और गर्दन पर की त्वचा लाल हो जाती है और सूज जाती है और उसमें दर्द होता है। अन्त में वह पैरों की बिवाई की तरह फट जाती है।

चिकित्सा–वेज़लीन (Vaseline) अथवा घी इत्यादि

इस प्रकार की चिकनी चीज़ ऐसे गरम प्रांतों की यात्रा में लगा लेनी चाहिए।

कभी कभी वर्फ़ की तरफ़ (पहाड़ों की यात्रा में) देखता यात्री कुछ दिनों उनकी ओर बिलकुल नहीं देख सकता और वह अंधा हो जाता है। नेत्र सूजकर लाल हो जाते हैं और उनमें से खूब पानी निकलता है। सूर्य की ओर देखने से महादुःख होता है।

चिकित्सा—आँखों पर डुपट्टा (साफ़) अथवा साफ़ रुमालों को लपेट देना चाहिए और रोगी को कुछ दिनों तक किसी अंधेरे स्थान में रखना चाहिए।

और जब ऐसे स्थानों में बहुत दिनों तक यात्रा करनी हो तो जहां तक हो इन पहाड़ों की (बर्फ़ वाले) ओर टकटकी लगा प्रत्येक दिन बहुत नहीं देखना चाहिए और यदि हो सके तो धुँए के रंग की ऐनक लगा कर यात्रा करनी चाहिए क्योंकि फिर घाम की चमक इतना असर नहीं करती।

शीत से कान और अँगुलियों का सूज जाना। बहुत ठंड में (जैसे जाड़ों में) कान, करपृष्ठ इत्यादि सूज कर लाल हो जाते हैं और कभी कभी उनमें से खून भी निकलने लगता है।

चिकित्सा—इनको ठंडे जल से अथवा वर्फ़ के टुकड़ों से मलना चाहिए। और यदि डाक्टर मिल जाय तो उसकी सम्मति के अनुकूल चिकित्सा करनी चाहिए। ठंड में भीगे हाथ पैरों को आग पर सुखाने से प्रायः ऐसा हो जाता

है। यदि सर्दी से मनुष्य ठिठर कर बेहोश होगया हो तो उसकी वही चिकित्सा करनी चाहिए जो बेहोश या मूर्च्छित की है (आगे देखो) इतना स्मरण रखना चाहिए कि ठंढ लगे हुए मनुष्य को एक दम गरम स्थान में नहीं ले जाना चाहिए और न उसको एक दम गरम कपड़ों में अथवा कम्मलों में कदापि लपेट देना चाहिए। परन्तु उसमें धीरे धीरे गरमी पहुंचानी चाहिए। फिर कुछ गरमी आने पर उसको खुली जगह से कुछ बंद स्थान में, फिर इस स्थान से कुछ देर बाद गरम स्थान में ले जाना चाहिए।

अस्थि और संधियों के आघात।

(Injuries of Bones and Joints)

कभी कभी हड्डियां ऊंचे स्थानों से, छत के ऊपर से अथवा पेड़ पर से गिरने से, लाठी से वा गाड़ी इत्यादि के नीचे दब जाने से टूट जाती हैं और जोड़ उखड़ जाते हैं। इन आघातों में केवल इतनी चिकित्सा करनी चाहिए जिससे रोगी को और अधिक हानि न पहुंचे। टूटी हड्डी के मिलाने या उखड़े जोड़ के बैठाने की कोशिश प्रत्येक मनुष्य को जो व्यवच्छेदविद्या नहीं जानता नहीं करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से प्रायः रोगी को और दुःख मिलता है।

(१) मोच

इसे अंगरेज़ी में स्प्रेन (Sprain) कहते हैं और प्रत्येक स्कूल का विद्यार्थी जानता है यह किस प्रकार का आघात है। यह प्रायः टकने (Ankle joint) और कलाई (Wrist joint)

इन दोनों के जोड़ों में आजाया करता है। भागने में जल्दी जल्दी चलने से पैर एक दम मुड़ जाता है।

लक्षण—संधि के एक दम मुड़ जाने से उसके बाँधने वाली शिराएं (स्नायु) थोड़ी खिंच कर फट जाती हैं। उसी समय वहां की सूक्ष्मनालियों के फट जाने से और कभी कभी जोड़ की थैली के फट जाने से मोच आए हुए गांठ में सूजन हो जाती है। खून और संधि के जल के इकट्ठे होजाने से ऐसा होता है। गांठ पर दर्द भी होने लगता है। जोड़ के हिलाने से दर्द होता है परन्तु जोड़ हिल सकता है अर्थात् उस पर गति हो सकती है। प्रायः मोच को लोग अस्थिभंग समझते हैं। मोच और अस्थिभंग में निम्न लिखित भेद हैं—आघात के समय यह अवश्य याद रहना चाहिए क्योंकि निदान न ठीक होने से घायल को हानि हो सकती है। (१) मोच आजाने पर जोड़ उसी प्रकार हिलाया जा सकता है जैसे आघात के पहिले। (२) और दहने और बांयें दोनों ओर के जोड़ों को मिलाने से मोच खाए जोड़ में कुछ बड़ी कुरूपता नहीं मालूम होती।

चिकित्सा—(१) मोच के आते ही शीघ्र हृदय की ओर दबा दबा कर मालिश करना आरंभ करदेना चाहिए। यदि पांव में चोट आई हो तो लिटाकर जोड़ को मलना चाहिए। १० या १५ मिनट तक ऐसा करना चाहिए। ऐसा करने से कुछ देर पीछे दर्द कम होजाती है और जोड़ में सूजन भी कम होने लगती है।

और यदि दर्द से बहुत कष्ट हो तो ठंढे पानी में भीगे कपड़े को जोड़ पर दबा कर लपेट दो।

(२) यदि हाथ में चोट लगी हो तो गले में रूमाल बँधकर उसे लटका दो। यदि घुटने, टकने या कूले इत्यादि में इतनी चोट लगी हो कि रोगी चल न सके तो उसे किसी बाहन में रखकर अस्पताल वा डाक्टर के पास वा घर पहुंचा देना चाहिए। साधारण मोच को भी डाक्टर को दिखाना चाहिए क्योंकि बिना उचित चिकित्सा के हाथ और पांव प्रायः कुछ बेकाम हो जाते हैं।

संधि का टलना।

(४२-४६ चित्र।)

(Dislocation of joints)

संधि का टलना किसी हड्डी का अपनी नियत संधि के बाहर निकल आना है। मैंने आपके समझाने के लिये संधि के हट जाने के कई चित्र दिए हैं। उन्हें आप देखें। और यदि आप प्रधान प्रधान संधियों के चित्रों को फिर देखलें तो आपको यह भाग कुछ कठिन न मालूम होगा। संधि पर बहुत ज़ोर पड़ने से वा उसपर किसी भारी वस्तु के गिरने से हड्डी कभी कभी बाहर निकल आती है। इसे जोड़ का उखड़ना कहते हैं। शरीर में सबसे अधिक कंधे और कूले के जोड़ हट जाया करते हैं और जबड़े और कुहनी और घुटने इत्यादि के जोड़ भी उखड़ जाया करते हैं।

संक्षेप लक्षण—चिकित्सा करने के पहिले उखड़े हुए जोड़ों को खूब अच्छी तरह मिलाना चाहिए। ४२ चित्र देखिए। उसमें एक ओर कंधे का जोड़ उखड़ा है ओर एक ओर का

आरोग्य जोड है। यदि आघात के पश्चात् चुटीले जोड़ में बड़ी कुरूपता होगई हो तो उचित चिकित्सा कीजिए।

साधारण मनुष्य को जो डाक्टर नहीं है अथवा जोड़ों का हाल अच्छी तरह नहीं जानता कदापि उखड़े जोड़ को बैठालने का प्रयाश न करना चाहिए और इसलिये आघात के पश्चात् व्यर्थ संधियों का हिलाना ठीक नहीं।

यदि ऊपर की शाखा (Upper limb) का कोई जोड़ उखड़ गया हो तो गले में रूमाल वा अँगोछा इत्यादि बाँधकर उस हाथ को लटका लो (चित्र देखिए) और यदि हो सके तो उसी समय अथवा चौबीस घंटे के भीतर उस जोड़ को किसी डाकृर को दिखा देना चाहिए।

यदि नीचे की शाखा (Lower limb) की कोई गांठ जैसे कूला या घुटना उखड़ जाय तो मनुष्य को कदापि न उठने देना चाहिए और न उसके पांव को सीधा करने का प्रयाश करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से और ज्यादा हानि हो सकती है। रोगी को किसी उचित प्रकार के बाहन में रख कर (जैसे बड़ी डोली जिसमें उसे अपने पांव नहीं हिलाने पड़ें) अस्पताल या किसी डाकृर के पास ले जाइए।

दर्द के हेतु ठंढे जल में भिगोकर कपड़ा लपेट दीजिए। उखड़े हुए जोड़ के दिखाने में बिलकुल देर नहीं करनी चाहिए। प्रायः लोग कुछ दिन मामूली चिकित्साओं में बिता देते हैं और जब जोड़ अच्छी तरह नहीं काम करता तब डाक्टर के पास या अस्पताल में जाते हैं। बहुत दिनों के बीतने पर कोई फ़ायदा नहीं पहुंच सकता क्योंकि जोड़ एक नई प्रकार की वस्तु से बिलकुल भर जाता है और

इस लिये अस्थि के अपने संधि के भीतर न आने से कुरूपता सदा के लिये होजाती है।

यदि दर्द बहुत हो और मनुष्य मज़बूत और आरोग्य हो तो थोड़ी सी ऐसी वस्तु जैसे भांग देने में कोई हर्ज नहीं। ऐसा उस समय करना चाहिए जब डाक्टर निकट न हो। मुझे आप से इतना पहिले ही कहना चाहिए था कि आघात के पश्चात् यदि दोनों जोड़ खुले न हों तो वस्त्र फाड़ कर उन्हें नंगा करना चाहिए किन्तु जोड़ को नहीं हिलाना चाहिए।

अस्थिभंग (Fractures of boucs)

(४७–५६ चित्र।)

हड्डी का टुटजाना। यह सदा किसी बड़े आघात से टूटती है, जैसे लाठी की चोट से, किसी छत या वृक्ष पर से गिरने से, गाड़ी के नीचे दब जाने से। क्रीकट की गेंद फेंकते समय बांह की हड्डी कभी कभी टूट जाती है। फुटबाल की किक् लगाने के समय कभी कभी परिया की हड्डी टूटजाती है। होकी (Hockey) की लकड़ी के पांव में लगने से टांग की हड्डी टूट जाती है। घोड़े पर से गिरने से कंधे या बांह की हड्डी टूट जाती है। और सिर पर लाठी पड़ने से खोपड़ी फट जाती है। बंदूक की गोली से हड्डी टूट जाती है। चलती गाड़ी में से उतरने से टांग की पतली हड्डी टूट जाती है और उसी समय टकने का जोड़ भी उखड़ जाता है। भागते भागते अथवा गिरने के समय हथेली के बल गिरने से कलाई के ऊपर भुजा की हड्डी टूद जाती

है। सब में किसी न किसी प्रकार का बड़ा ज़ोर हड्डी के ऊपर पड़ता है और वह टूट जाती है।

दो भेद–अस्थिभंग के मोटे मोटे दो भेद हैं। एक भेद जिसमें केवल हड्डी टूट गई हो और आघात के स्थान से कोई रुधिर न निकले अर्थात् कोई घाव न हो। इस तरह प्रायः हाथ पांव पर लाठी लगने से अस्थिभंग होजाता है। इसे साधारण अस्थिभंग (Simple fracture) कहते हैं।

दूसरे वह जिसमें घाव भी वर्त्तमान हो अर्थात् चोट के स्थान से लोहू भी निकल रहा हो और हड्डी खुल गई हो। यह प्रायः सिर पर लाठी की चोट से उत्पन्न होता है। कभी कभी गाड़ी के नीचे पड़ के कुचल जाने से भी ऐसा हो जाता है। इसको व्रणयुक्त अस्थिभंग (Compound fracture) कहते हैं।

पिछले प्रकार के अस्थिभंग से (अर्थात् जिसमें घाव में से हड्डी दिखाई दे वा घाव हड्डी तक पहुंच गया हो) जीवन को प्रायः भय होता है क्यों कि घाव में मैल, मट्टी इत्यादि के प्रवेश हो जाने से थोड़े समय में मवाद पड़जाता है और दर्द सूजन ज्वर इत्यादि भी हो जाते हैं। दूसरी बात यह है कि इस प्रकार के अस्थिभंग के जुड़ने में देर लगती है और दोनों अन्त आपस में अच्छी तरह नहीं मिलते। और घाव मैला हो जाय और मवाद पड़ जाय तो कभी कभी रोगी कुछ समय में मर भी जाता है। किन्तु साधारण अस्थिभंग में रोगी को इतना भय नहीं होता और न इतने दिन दुःख उठाना पड़ता है। यदि उचित चिकित्सा की जाय तो आरोग्य और युवा मनुष्य और बालकों में

साधारण अस्थिभंग में हड्डी १॥ महीने में जुड़ जाती है। बूढ़े आदमियों को कुछ ज्यादा कष्ट उठाना पड़ता है। इस लिये दूसरे प्रकार का अस्थिभंग में यदि हो सके तो किसी प्रकार के मैल का प्रवेश न होने देना चाहिए और शीघ्र किसी बुद्धिमान् डाक्टर की चिकित्सा करानी चाहिए।

लक्षण—टूटा हुआ अवयव (भुजा, जांघ, टांग इत्यादि) कुछ टेढ़ा हो जाता है और जिस स्थान की हड्डी टूटी हो उस अवयव को मनुष्य हिला नहीं सकता। चोट के स्थान पर बहुत दर्द होने लगता है और कुछ सूजन भी हो जाती है। कभी कभी टूटी शाखा के नीचे का भाग (जैसे कर वा पद) फूलने लगता है। यदि टूटे हुए हाथ वा पांव पर वस्त्र हों तो उन्हें फाड़कर आघात के स्थान को खोल लेना चाहिए और जहां तक हो किसी तरह टूटी अस्थि को व्यर्थ नहीं हिलाना चाहिए। ऐसा करने से नाड़ी, धमनी, शिरा, पुट्ठे इत्यादि को हानि पहुंचती है और घायल को भी बहुत दुःख होता है। मनुष्य को स्वयं मालूम हो जाता है कि उसकी हड्डी के टूटने के समय कुछ शब्द मालूम होता है। यदि घाव हो तो पहिले अस्थिभंग की चिकित्सा करके घाव पर उक्त रीति से पट्टी बाँध देनी चाहिए।

चिकित्सा—टामसन और माईल्स ने अपनी सर्जरी की पुस्तक में दो अच्छे नियम बतलाए हैं। उनका आशय मैं नीचे लिखे देता हूं।

१ यदि दोनों शाखाओं में से अस्थिभंग होने पर केवल एक हड्डी टूट जाय तो उस भाग को चारों ओर से जन्म पत्र के सदृश किसी वस्तु से लपेट देना चाहिए। जैसे जांघ

वा बांह की हड्डी के टूटने पर इन अवयवों को एक कटे हुए बांस के पंखे अथवा चिक के टुकड़े से (५२ चित्र देखिए) लपेट देना चाहिए और फिर उसके ऊपर कपड़े की पट्टी लपेट देनी चाहिए। ऐसा करने से टूटी हड्डी के दोनों टुकड़े व्यर्थ नहीं हिलने पाते। इसके पश्चात् और चिकित्सा करनी चाहिए। किन्तु यह चिकित्सा आप घाव वाले अस्थि भंग में नहीं कर सकते। प्रथम घाव बाँध कर यदि उचित समझिए तो ऐसा कीजिए।

२ यदि किसी ऐसे भाग में अस्थिभंग हो जहां दो या ज्यादा लम्बी हड्डियां हैं (अस्थि पंजर देखिए) जैसे आगे की भुजा (foream), टांग कर और पद में तब बकस के सदृश लकड़ियां लगानी चाहिएं।

टूटे अंग का बाँधना।

टूटे हुए अवयव को इस तरह बाँध देना चाहिए कि यदि घायल को उठा कर ले जाना हो तो कुछ और हानि न हो। टूटी शाखा को लकड़ियों इत्यादि की सहायता से बाँधने का यह प्रयोजन होना चाहिए जि टूटी हड्डी हिलने न पावे और धमनी, पुट्ठे इत्यादि को उनके रगड़ने से कोई हानि न पहुंचे। कभी कभी जैसे टांग में व्यर्थ हिलाने से वा स्वयं हड्डी (त्वचा को) छेद करके बाहर निकल आती है। इस लिये बाँधने के वक्त ये बातें सदा ध्यान में रखनी चाहिएं। बाँधने के पश्चात घायल को दर्द भी कम मालूम होता है। यदि घाव हो तो प्रथम घाव को बाँध कर तब टूटी भुजा इत्यादि (जो हो) को बाँधना चाहिए। अन्त में किसी डाक्टर की सम्मति अवश्य लेनी चाहिए

अथवा रोगी को उठाकर अस्पताल ले जाना चाहिए।

बाँधने के लिये बुद्धिमान् आदमी कोई वस्तु काम में ला सकता है यदि उससे प्रयोजन सिद्ध हो जाता हो। टूटी हड्डी के ऊपर वाला जोड़ और उसके नीचे वाला जोड़ भी उस लकड़ी वा बाँधने वाली सहायक वस्तु के मध्य में आजाना चाहिए। ऐसा न करने से टूटी हड्डी का हिलना नहीं बंद हो सकता। जैसे टूटी टांग के बाँधने में टकना और घुटना भी बाँध देना चाहिए जिससे रोगी इन पर कोई गति न कर सके।

(१) बांधने के लिये रूमाल वा और कोई लंबा कपड़ा होना चाहिए (२) और टूटी हड्डी के चारों ओर लपेटने के लिये निम्न लिखित वस्तु में से कोई अथवा समय पर जो आप उचित समझें काम में ला सकते हैं।

वृक्षों की शाखाएं, घास (सूखी लंबी) का मुट्ठा बाँधकर, बोर्ड, किताब की दफ़्तियां, कापियां, लड़कों के भौगोलिक नक़्शों को लपेट कर, रूलर, कोट कुर्ते इत्यादि की बांह में घास भर के, तकिए, छड़ी, छाता, लंबी लकड़ी, पतले लंबे तख़्तों के टुकड़े, बंदूक, तलवार की म्यान और कुछ नहीं तो मोटे कपड़े को लपेट कर टूटी शाखा के इधर उधर रख कर ऊपर से कोई और लंबा कपड़ा जैसे दुपट्टा, धोती, तौलिया इत्यादि लपेट देना चाहिए। कभी कभी टूटी अंगुली को अच्छी अंगुली के साथ बाँध देते हैं। इसी तरह टांग के अस्थिभंग में जब कुछ न मिले तो दोनों टांगों को सीधा करके एक टांग को दूसरी टांग के साथ बांध दो (५२ चित्र देखिए)।

यदि कपाल या सिर की हड्डी केवल साधारण रीति से टूट जाय और कोई घाव न हो और मनुष्य बेहोश हो गया हो तो केवल डाक्टर से चिकित्सा करानी चाहिए। इस प्रकार के आघातों में एक तरफ का अंग का अंग कभी कभी मारा जाता है। ऐसे घायल को पीठ पर लिटा कर चारपाई इत्यादि में रख कर होशयारी से चिकित्सालय वा घर पहुंचा देना चाहिए।

यदि खून भी निकल रहा हो तो घाव को उक्त रीति से बाँधकर तब चिकित्सालय वा घर लेजाइए। यदि चोट बड़ी हो तो मनुष्य को कदापि स्वयं नहीं चलने देना चाहिए। कभी कभी मनुष्य चोट लगने के पश्चात् बेहोश होजाता है और थोड़ी देर पीछे होश में आजाता है। इस प्रकार के आघातों में यदि मनुष्य स्वयं चलने को तय्यार हो और चोट थोड़ी हो तो वह स्वयं जा सकता है।

गाड़ी इत्यादि के नीचे दबजाने से, ऊंचे स्थान से गिर पड़ने से कभी कभी कमर (रीढ़ की हड्डी) टूट जाती है। इस प्रकार के आघातों में घायल को कभी नहीं उठने देना चाहिए और घर या चिकित्सालय को बड़े आराम से लिटा कर लेजाना चाहिए। कभी कभी नीचे का धड़ बिलकुल मारा जाता है और रोगी कुछ दिन में और रोगों के उत्पन्न होने से मर जाता है।

मुख की टूटी हड्डियों को भिगे रूमाल से बाँध देना चाहिए।

जबड़े के अस्थिभंग को एक लंबे चौकोर वस्त्र से जैसा चित्र में दिया है बाँध देना चाहिए।

पसुली की हड्डी कभी कभी चोट लगने टूट जाती है। प्रायः पांचवीं, छठीं और सातवीं, आठवीं पसुलियां टूटती हैं। सांस लेने में बहुत दर्द मालूम होता है। गाड़ी के नीचे दब जाने से लड़कों में प्रायः ये आघात मिलते हैं। रोगी को लिटा देना चाहिए और चलना और बैठना बंद कर देना चाहिए। और जैसा चित्र में दिया है पट्टी बाँध देनी चाहिए और फिर किसी डाक्टर को दिखा देना चाहिए। कभी फेफड़े के फट जाने से बहुत दुःख होता है इस लिये बिना डाक्टर की सम्मति के रोगी न्यूमोनिया (Pneumonia) या वर्मफेफड़े से मर सकता है।

ऊपर लिखी हुई लकड़ी, चिक इत्यादि इस प्रकार से टूटी हड्डी के बांधने के काम में लाई जाती है। उन्हें अंगरेजी डाक्टर लोग स्प्लिन्ट (Splint) कहते हैं। वर्णन की सरलता के हेतु मैं इसको सहायक काष्ठ कहूंगा। अर्थात् यह टूटे अवयव के सीधे रखने में सहायता देती है और टूटे हाथ पांव को अच्छे हाथ पांव के सदृश कर देती है अर्थात इसके बाँधने के पश्चात् आघात से उत्पन्न हुई हड्डी की कुरूपता नहीं मालूम होती।

इस सहायक काष्ठ को लगाने के पहिले हड्डी और जोड़ के ऊपर रूई या उसके तुल्य कोई और नरम वस्तु रख लेनी चाहिए। इन गद्दियों के रखने से गांठ और हड्डियों पर काष्ठ इत्यादि की रगड़ से दर्द नहीं होता और खाल भी नहीं छिलने पाती। यदि कुर्त्ते इत्यादि की बांह मिल सके तो उसमें रूई, भूसा, घास इत्यादि ऐसी नरम वस्तु भर के छोटा पतला तकिया बना लो और ऐसे बने हुए तकियों को

टांग (यदि इस की हड्डी टूटी हो) के और सहायक काष्ठ के बीच में रख कर काष्ठ को टांग के साथ बाँध दो ।

निम्नलिखित स्थानों के ऊपर अवश्य थोड़ी रूई वा कपड़े की गद्दी रखनी चाहिए—टकनों के दोनों ओर, कलाई पर, कुहनी पर, पांव की अंगुलियों पर और घुटने के दोनों ओर ।

बाँधने के हेतु कपड़ा न हो तो दुपट्टे इत्यादि में से फाड़ कर काम चला सकते हैं । यदि रूमाल पास हो तो इसको दुहरा तिहरा कर पट्टी बनाकर काष्ठ और टूटे अवयव के ऊपर लपेट सकते हैं । गांठ सदा काष्ठ इत्यादि के ऊपर रखनी चाहिए ।

सहायक काष्ठ से आप केवल लकड़ी, तख्ता ही न समझिए क्योंकि इस काम के लिये मैंने क़ागज की कापियां, बोर्ड (मोटी दफ्ती) बांस का पंखा, चिक इत्यादि अनेक चीज़ें बताई हैं । इनके लिये आप चित्र देखें !

निम्न लिखित स्थानों के अस्थिभंग में सहायक काष्ठ (Splints) नहीं लगाया जाता । सिर की हड्डी (खोपड़ी), रीढ़ की हड्डी, मुंह की हड्डियां, पसली हंसुली तथा कंधे की हड्डी, कूले की हड्डी । जब एक अंगुली टूट जाती है तो सहायक काष्ठ का काम दूसरी अंगुली से लेते हैं ।

कंधे की हड्डी और हंसुली के टूटने पर प्रारम्भिक चिकित्सा केवल यह है । जिस तरफ की हड्डी टूटी हो उस ओर के हाथ को गले में कोई रूमाल इत्यादि बाँध कर लटका दो फिर जैसी चिकित्सालय में सम्मति में दी जाय वैसा करो ।

ऊपर की शाखा के अस्थिभंग में उचित सहायक काष्ठ के लगाने के पीछे हाथ को उक्त रीति से गले से लटका लेना चाहिए और फिर स्वयं घर वा चिकित्सालय चले जाना चाहिए।

नीचे की शाखा के अस्थिभंग में मनुष्य को सदा बाहन में रख कर लेजाना चाहिए।

मेरी इतनी बुद्धि नहीं है कि मैं आप लोगों को और अच्छी तरह चिकित्साएं समझा सकूं। कृपा कर आप चित्रों को देखिए और समयानुसार अपनी बुद्धि से यथोचित चिकित्सा कीजिए।

मूर्च्छा या बेहोशी।

मूर्च्छित मनुष्य मृतक् के तुल्य होता है। आघात के पश्चात् कभी कभी मनुष्य बेहोश होजाता है। कितनी बीमारियों में भी ऐसा होजाता है।

संक्षेप कारण—बीमारी से और आघातों से बेहोशी आ जाती है। इस प्रकार के आघात जैसे डूबने से, मारपीट में सिर पर चोट लगने से, जी घुटने से (भीड़ में दबजाने से) लू लग जाने से, बहुत ठंढ लग जाने से और बहुत तेज़ आंच के सामने बैठे रहने से, ऊंचे स्थान से गिर पड़ने इत्यादि से आदमी बेहोश हो जाता है। यदि शीघ्रही कोई उचित उपाय न किया जाय तो मनुष्य कभी कभी मूर्च्छा ही में मर जाता है।

लक्षण—इस दशा में मनुष्य को कोई सुध नहीं रहती

और कुछ पलों के लिये सांस और नाड़ी का चलना बंद हो जाता है अर्थात् मनुष्य मुर्दे के तुल्य दीखता है।

जी घुटना–जब मनुष्य के फेफड़ों में कुछ कालतक बाहर से साफ़ वायु न जाय तो वह घबराने लगता है और शीघ्र मर जाता है। ऐसा गले में फांसी देने से, गला दबाने से और वायुनल के मुख के बंद होजाने से हो जाता है। कभी कभी बच्चे के गले में पैसे इत्यादि के अटकने से वायुनल दब जाता है और बच्चा सांस नहीं ले सकता। कभी कभी ऐसी वस्तु वायुनल में घुस जाती है (जैसे मटर इत्यादि) तो सांस के चलने में बहुत कष्ट होता है और यदि वह खांसी के साथ बाहर निकल आय अथवा अंगुली इत्यादि डालकर न निकाली जाय तो बालक अवश्य मर जाता है।

यह दशा बुरी हवा में कुछ देर सांस लेने से प्राप्त हो जाती है–जैसे कभी कभी कोयले जलाकर बंद कमरे में रहने से, अंधे कुओं या तेख़ानों में जाने से, बच्चों के मुख और नाक के दब जाने से। इसलिये सोते समय बच्चों के मुख को सदा खुला रहने देना चाहिए। रज़ाई इत्यादि ऐसे भारी कपड़े से मुख कदापि नहीं बंद करना चाहिए।

पानी में डूबने से भी मनुष्य का सांस रुक जाता है और फेफड़ों में थोड़ा सा या बहुत सा जल भर जाता है। इस लिये वायु के न जाने के कारण डूबता हुआ मनुष्य शीघ्र बेहोश हो जाता है।

शीत से ठिठर जाना और बेहोश होजाना।

बहुत ठंढ के लगने से मनुष्य को बड़ी नींद आने लगती है और कुछ देर बाद यदि वह सो जाय तो बेहोश होजाता है। इस प्रकार के आघात माघ में कभी कभी गंगा के किनारे और वर्फ गिरने वाले पहाड़ों पर देखे जाते हैं।

जब यह घोर निद्रा आने लगे तो मनुष्य को चाहिए कि वह लेट न जाय किन्तु घूमता रहे। और यदि कोई निवास स्थान पास हो तो वहां चला जाय। इस अवस्था में शराब नहीं देनी चाहिए। यदि बड़ी आवश्यकता हो तो थोड़ी सी देनी चाहिए। ठंढ से आकर एक दम आग नहीं तापनी चाहिए।

मस्तिष्क को गरमी चढ़जाना, लू या घाम का लगजाना।

यह दशा गरमी के दिनों में मिलती है।

कारण—गरमी में बहुत पसीना निकलने के कारण रुधिर बहुत गाढ़ा हो जाता है और इसलिये कम होने के कारण रुधिर मस्तिष्क को बहुत थोड़ा पहुंचता है। मस्तिष्क में रुधिर की न्यूनता से मनुष्य बेहोश होजाता है और उसी समय मर जाता है।

आरम्भ लक्षण—इस दशा के आरंभ होने के पहिले प्यास अधिक हो जाती है और शरीर अग्नि के तुल्य गरम और सूखा मालूम होता है। सिर में दर्द होने लगता है। रोगी का शब्द बहुत कमजोर हो जाता है। और यदि इस समय उचित उपाय न किया जाय तो उक्त दशा होजाती है।

चिकित्सा (लू लग जाने इत्यादि की)–मनुष्य को शीघ्र घाम से वा आग के सामने से ठंढे स्थान में वा वृक्ष की छाया में, वा नदी के तट पर (यदि निकट हो) लेजाना चाहिए । उसके कोट, कुर्ते इत्यादि के बटन खोल देने चाहिएं। उसके ऊपर ठंढे जल के छीटे मारने चाहिए ।

बस्त्र भिगो कर सिर माथा और शरीर पोंछना चाहिए और खूब जल पीने को देना चाहिए । यदि होफ़मेन्स एनोडाईन जिसको पहिले लिख चुका हूं हो तो उसके २० से ३० बूंद तक आयु इत्यादि का बिचार करके जल में पिला कर दे सकते हैं ।

यदि मनुष्य बेहोश होगया हो तब जल और औषधि देने के अतिरिक्त जो और उपाय ऊपर बताए हैं करने चाहिएं ।

यदि ऐसा करने से मनुष्य को होश न आवे तो कृत्रिम विधि से सांस चलाना चाहिए । यह विधि आगे लिखी जायगी ।

घाम लग जाना ।

(Sun-stroke)

कारण–नंगे सिर वा मामूली कपड़े की टोपी पहन कर तेज़ घाम में चलने से यह दशा प्राप्त होती है

लक्षण–चक्कर आने लगते हैं और सिर में दर्द होने लगता है ।

उपाय–छाया में ले जाकर कपड़ों को ढीला कर देना चाहिए और मुख और शरीर पर ठंढा जल छिड़कना

चाहिए। मनुष्य को सदा इस दशा में पीठ पर लिटा देना चाहिए। ठंढा जल वा बर्फ इत्यादि पीने को देना चाहिए। सिर पर भी बर्फ रख सकते हैं। यदि इससे कुछ न हो तो डाक्टर की सहायता उचित है।

मूर्च्छा की प्रारम्भिक चिकित्सा।

कारण-- ये आपको पहिले बतलाए जा चुके हैं।

संक्षेप चिकित्सा-(१) यदि गले में फांसी इत्यादि से मूर्च्छा आ गई हो तो उसी समय मनुष्य के हाथों को उठा कर गले की रस्सी इत्यादि को होशयारी से काट देना चाहिए और यदि सांस लेना बंद हो रहा हो वा हो गया हो पर हृदय चलता हो तो कृत्रिय बिधि से सांस चलाना चाहिए (आगे देखिए)

(२) यदि गले में वा वायुनल के मुख में कोई वस्तु अटक गई हो और सांस को रोकती हो तो शीघ्र अंगुली डाल कर उसको मुख से निकालने का प्रयास करना चाहिए यदि न निकल सके तो केवल डाक्टर की सहायता से कुछ हो सकता है। इस प्रकार के आघात बच्चों को प्रायः हुआ करते हैं।

मेरे वायुनल के मुख के ऊपर खाते समय हँसी आ-जाने से एक मिठाई का टुकड़ा पहुंच गया। मुझे बहुत जोर जोर खांसी आने लगी और सांस रुकने से मुझे उठ कर खड़ा हो जाना पड़ा। उस समय एकाएक मेरे सिर के नीचे की ओर झुकने से मिठाई का टुकड़ा खांसी के साथ बाहर निकल आया-इसलिये मेरी सम्मति में वह वस्तु जो अंगु-

ली से निकाली नहीं जा सकती इस तरह सिर के नीचा कर देने से शीघ्र खांसी के साथ बाहर निकल जायगी।

यदि नाक में कोई वस्तु फंस जाय तो मुंह खोल कर सांस लेना चाहिए और सिर नीचे को झुका लेना चाहिए जिससे वह वस्तु यदि सांस के साथ गले में चली जाय तो वायुनल के मुख को न बंद करने पावे। फिर बड़े लोग स्वयं छींक कर ऐसी वस्तु को निकाल सकते हैं। यदि बच्चों का मुख न खुलता हो तो नाक को हाथ से दबा लेना चाहिए।

(३) यदि भीड़ में दब जाने से, घर की दीवार के नीचे आ जाने से, वा किसी बंद स्थान में जाने (तैखाने) इत्यादि से मूर्च्छा आ जाय तो शीघ्र ऐसे मनुष्य को अलहदा लेजा कर खुली हवा में लिटा देना चाहिए और उसके चारों ओर भाड़ नहीं लगने देनी चाहिए। और बचाने वाले को ऐसे स्थानों में अपनी रक्षा भी करनी चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो कृत्रिय विधि ने सांस चलाना चाहिए।

(४) हाल के डूब हुए या डूबते हुए मनुष्य को जल से शीघ्र निकाल लेना चाहिए।

यह चिकित्सा बातों बात करनी चाहिए क्योंकि डूबा हुआ मनुष्य थोड़ी देर में मर सकता है, कभी कभी पानी में गिरतेही मर जाता है। डूबे हुए वा डूबते हुए मनुष्य को जल से शीघ्र बाहर निकालना चाहिए। उसके मुख से पानी और मट्टी शीघ्र निकाल कर उसे पेट के बल लिटा कर सहायता करने वाले को उसके बांई ओर बैठ कर दहने घुटने को पृथ्वी पर रख लेना चाहिए। फिर

दूसरी टांग पर खड़े हो कर मनुष्य की कमर पकड़ कर छाती के बल अपनी बांई जांघ पर रोगी को रख लेना चाहिए। ऐसा करने से मुख नीचे को लटक जाता है और मुख और वायु नल में घुसा हुआ पानी सरलता से बाहर निकल आता है। मनुष्य की टांगे पकड़ कर उसे बिलकुल उलटा कर के कदापि नहीं लटकाना चाहिए। उक्त रीति से सिर को नीचा करके पीठ और पसलियों को दबाना चाहिए। यदि ऐसा करने से कुछ न हो तो शीघ्र कृत्रिम बिधि से सांस चलाना चाहिए।

सांस और हृदय के चलाने की कुछ चिकित्साएं।

कभी कभी निम्नलिखित उपाय काम देजाते हैं और मनुष्य के प्राण बच जाते हैं। इसलिये इनके करने से आघात के समय कुछ हानि नहीं किन्तु लाभ ही सकता है। उन मनुष्यों के जिन्होंने गले में फांसी लगा ली हो वा जो जल से डूबने के समय निकाल लिए गए हों यदि शरीर में थोड़ी भी गरमी बाकी हो, अर्थात मृत्यु न हो चुकी हो और हृदय बहुत धीरे धीरे भी चला रहा हो तो होश में आने की कुछ संभावना हो सकती है। किन्तु ये बातें साधारण मनुष्य को नहीं मालूम हो सकतीं क्योंकि नाड़ी के बंद होने पर भी हृदय धीरे धीरे कभी कभी चलता रहता है। इन उपायों को आघात के समय काम में लाने से अधिक आशा हो सकती है। यदि सांस और नाड़ी के कुछ देर तक बंद रहने के पश्चात् भी ये किए जांय तब भी हानि तो कोई नहीं किन्तु जीने की इतनी आशा नहीं रहती।

(१) डूबे हुए मनुष्य को पानी से निकालने के पश्चात् एक बग़ल पर लिटा देना चाहिए। फिर उसकी टांगे पकड़ कर कुछ थोड़ी सी धड़ से ऊंची कर लेनी चाहिए जिससे उसके मुख से और सांस इन्द्रिय के वायुनल से जल सरलता से बाहर निकल आवे। यदि मुख न खुला हो तो उसे खोल कर जीभ बाहर को खींचनी चाहिए और फिर उसी तरह करना चाहिए।

यदि सांस और हृदय थोड़े भी चलते ज्ञात हों तो एमोनिया (Ammonia) शीघ्र सुंघाना चाहिए। एमोनिया एक शीशी में पानी चूना और नौसादर मिलाने से शीघ्र बनजाता है। यह न हो तो सुंघनी लेकर थोड़ीसी नाक पर लगाइए और गले में अंगुली डालिए। इन सब से छींक वा खांसी आने से हृदय और जोर से चलने लगता है।

यदि इन सब छोटी छोटी चिकित्साओं से कुछ लाभ न हो अर्थात सांस और हृदय अच्छी तरह न चलने लगे तब निम्न लिखित सांस चलाने की कृत्रिम विधि का प्रयोग कीजिए। इसे यदि अल्पकाल में सांस स्वयं न चलने लगे तो कम से कम आधे घंटे तक या उस समय तक जब तक कोई डाक्टर न आ जाय करना चाहिए। सांस चलाने की कृत्रिम विधि चार पांच हैं किन्तु निम्न लिखित सबसे उत्तम और सरल भी है।

मुख से और वायुनल से और पेट से ऊपर बताई हुई विधि से पानी निकालने के पश्चात् मनुष्य को पीठ पर लिटा कर उसका सिर नीचा करदो और थोड़ा थोड़ा ऊंचा करलो। जीभ एक बार मुख से बाहर खींच लो जिससे

वायुनल का मुख न बंद होजाय । सिर को एक कनपटी पर रखना चाहिए ऐसा करने से जीभ वायुनल के मुख को नहीं बंद करती ।

चिकित्सा करने वाले को (५८ चित्र देखिए) रोगी की कुहनी को वा बांह को पकड़ कर सिर की ओर ऊपर को खीचना चाहिए । फिर दो पल के पीछे दोनों बांह को एक साथ नीचे लाकर छाती के दोनो बगलों के ऊपर दबाना चाहिए ऐसा करने से फेफड़ों से वायु बाहर आती है । चार या पांच पल बाद फिर उक्त रीति से बांह को उठाकर छाती की ओर लाकर बगलों को दबाना चाहिए । ऐसा १ मिनट में १४ या १५ बार करना चाहिए । और उस समय सांस के आरम्भ होने पर ध्यान रखना चाहिए। यदि वह स्वयं फिर चलने लगे तो आप अपनी चिकित्सा रोक दीजिए ।

घायल को बाहन में रख कर लेजाना ।

(५९-६५ चित्र ।)

कभी कभी आघात ऐसे स्थानों में लगा करते हैं जहां रोगी घर अथवा अस्पताल ऐत्यादि से दूर होता है । यहां से उसको किसी उचित रीति से जिससे उसे और दुःख न हो उठाकर ऐसे स्थान परलेजाना चाहिए जहां उसकी चिकित्सा डाक्टर वा वैद्य कर सकता हो । यह कार्य केवल उन आघातों में आवश्यक होता है जिनके लगने से मनुष्य स्वयं नहीं चल सकता वा मूर्च्छित होजाता है। उठाने में यह सदा याद रखना चाहिए कि जिस बाहन में उसे लेजाओ

उससे घायल को कुछ और हानि न हो। बेहोश को वा जिसकी टांग में आघात हो (जैसे टांग इत्यादि टूट गई हो) या सिर पर लाठी इत्यादि लगने से बेहोश हो गया हो तो लिटाकर चिकित्सालय लेजाना चाहिए। जब साधारण मनुष्य यह समझता हो कि घायल मनुष्य अब मर रहा है तब उसको उठाकर चिकित्सा के लिये कहीं ले जाना व्यर्थ है।

जहां बस्ती पास है वहां तो उठाने के लिये डोली, कहार वा चारपाई इत्यादि सब मिल सकते हैं। घायल को सदा ऐसे बाहन में लिटाकर लेजाना चाहिए कि वह आंखों के सामने रहे और चारपाई रख कर सिर पर लाद कर लेजाना अच्छा नहीं, क्योंकि यदि बेहोश वा घायल उस पर से गिर जाय तो और अधिक हानि हो सकती है और यदि वह मर जाय तो केवल चारपाई को सिर से नीचे रखने पर मालूम होता है कि वह मर गया। केवल एक महीने की बात है कि लोग एक रोगी को इसी तरह सिर पर रख कर अस्पताल लाए और चारपाई के नीचे उतारने पर घायल मरा हुआ मिला।

यदि मनुष्य कहीं अकेला हो और आघात के कारण चल न सकता हो तो उसको चाहिए कि वह खसक खसक कर ऐसे स्थान पर (यदि ऐसा कर सकता हो तो) पहुंच जाय जहां से वह किसी और मनुष्य को चिल्ला कर वा इशारे से बुला सकता हो।

यदि दो मनुष्य हों जैसे प्रायः यात्री हुआ करते हैं और उनमें से एक के गिर जाने से घुटने की गांठ में इतनी चोट

लग गई हो कि वह आगे बिलकुल न चल सकता हो तो दूसरे को चाहिए कि उसे अपनी सहायता से धीरे धीरे उठा कर निवास स्थान इत्यादि को ले जाय। और यदि रोगी सहारे से न चल सकता हो तो उसे पीठ पर लाद कर, वा हाथों पर रख कर ले जाय। यह केवल उदाहरण है। बुद्धिमान मनुष्य समय पर यदि कोई अच्छा वाहन सोच सके तो उसमें लेजा सकता है। हमारे देश में ठेले में लिटा कर बहुत धीरे धीरे आदमी को चिकित्सालय इत्यादि ले जा सकते हैं। इसको जोर से नहीं चलाना चाहिए।

यदि दो से ज्यादा मनुष्य पास हों तो इस तरह ले जा सकते हैं। बांह और टांगों में हाथ लगा कर दो आदमी उठा सकते हैं। एक अपने गले में चदरा इत्यादि ऐसे चौड़े कपड़े को बाँध कर उसमें मनुष्य को बैठा ले उसकी पीठ अपने पेट की ओर होनी चाहिए, और दूसरा मनुष्य चदरे के किनारे को पकड़ कर घायल को बड़े ढोल की तरह दूर तक लेजा सकता है। लाठी में कपड़ों को बाँध कर वा बांस से और तख़्तों से, वा किसी चौड़े लंबे तख़्ते से वाहन बना कर उस पर लिटा कर कुछ दूर घायल को ले जा सकते हैं। कहारों की डोली के तथा अनेक प्रकार के दूसरे वाहनों को जो बुद्धिमान सहायक की समझ में उस समय उचित ज्ञात हों, काम में लाना चाहिए।

इसके समझाने के हेतु कुछ चित्र बनाए हैं उन्हें देखिए।

मेरी उन लोगों से जो इस प्रकार की चिकित्सा करना चाहते हों यह प्रार्थना है कि वे आघात के समय अपने

चित्त के सदा सावधान रक्खें और उचित चिकित्सा करें। और अन्त में मैं भी वही सलाह देता हूं जो यूरोप देश के धन्वन्तरि जी ने दी थी "घायल वा रोगी के और अधिक हानि न पहुंचाओ।"

विषों की चिकित्सा।

निम्न लिखित चिकित्सा केवल उसी समय काम दे सकती है जिस समय विष खाया गया हो। कुछ देर बीतने पर तो किसी वैद्य वा डाक्टर को बुलाकर चिकित्सा करानी चाहिए। अंग्रेज़ी चिकित्सा की पुस्तकों में इस विषय पर लगभग सबही, कुछ ऐसी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जो हिन्दुओं के लिये निषेध समझी जाती हैं। परन्तु जो आज कल विदेशी चीनी आदि खाते हैं उनके लिये उनमें कोई नई वस्तु नहीं है। और कुछ विष के खाने के समय की भी ऐसी चिकित्साएं हैं जिनका केवल कोई बुद्धिमान डाक्टर ही प्रयोग कर सकता है।

डाक्टर स्मिथ साहेब ने निम्न लिखित औषधियां गृहस्थियों के लाभ के लिये लिखी हैं। इसलिये उनका रखना समय पर लाभदायक हो सकता है।

(१) "बहुत से विषों का जहरमोहरा" (Multiple antidote)—यह नीचे लिखी रीति से बनता है। इसको एक वार किसी डाक्टर से समझ लेना चाहिए।

सेच्यूरेटेड सल्यूशन आफ आइरन् सल्फेट (Saturated solution of Salphate of iron)........१०० भाग—100 parts
जल..........................८०० भाग—800 parts.

मेगनीशिया (Magnesia)............८८ भाग—88 parts

एनीमल चार कोल (Animal charcoal) ८८ भाग—88 parts

मेगनीशिया और चारकोल को तौल कर और मिला कर सूखेही एक बोतल में रख लेना चाहिए। बोतल को शीशे की डाट से बंद करना चाहिए और आवश्यकता के समय उक्त लोहे के नमक का पानी (Saturated solution of iron sulphate) लेकर उसमें आठ हिस्सा पीने वाला पानी मिला दीजिए और अन्त में इसमें मेगनीशिया इत्यादि औषधियों को मिला दीजिए। इन सब को किसी कांच (शीशे) के वर्त्तन वा गिलास में मिलाना चाहिए। इस औषधि को आधी छटांक से एक छटांक तक कई बार पिलाना चाहिए। यह निम्न लिखित विषों में काम देती है—

संखिया, अफीम, पारा (रसकपूर), कुचला, कुचले का सत।

लाल दिया सलाई (जो अंधेरे में रगड़ने से चमकती है) के खा लेने पर इस औषधि का प्रयोग व्यर्थ है।

(२) कैल सीण्ड मेगनीशिया (Calcind Mageisia)—
तेजाब के खा लेने में दिया जाता है—५ से ३० ग्रेन तक इसकी खुराक है।

(३) फ्रांस के तारपीन का तेल (French Tarpentine)—
फ़ास्फ़ोरस (जो लाल दिया सलाई की नोक पर लगा रहता है) के खा लेने पर दिया जाता है।

(४) जिंक सल्फेट (Zinc sulphate)—
यह बमन वा कै कराने वाली औषधि है। इसकी खुराक २५ से ३० ग्रेन तक है।

(५) राई का चूर (Mustard powder)--

यह भी वमनकारक है । खुराक ६ माशे तक जल के साथ देनी चाहिए ।

(६) खानेवाला नमक़ और गरम जल ।

(७) एक बोतल सिरका ।

शिक्षा-विष खाने पर पहिले तो कोई वमन कराने वाली औषधि देनी चाहिए, फिर पहिली औषधि देनी चाहिए । फ़ास्फ़ोरस (अथवा लाल दिया सलाई) खा लेने पर फ्रांस के तारपीन का तेल आधे ड्राम (३० बूंद के लग भग) आधे आधे घंटे पर देना चाहिए ।

तेजाब--में कैल्सीण्ड मेगनीशिया (Calcind megnesia) देना चाहिए । और सोडा इत्यादि ऐसे कास्टिकों में सिरका पिलाना चाहिए ।

बचनाक-एकोनाईट (Aconite) -इसे मीठा तेलिया, विष, और वचनाक भी कहते हैं । यह गाजर के सदृश पतली जड़ होती है । यह बड़ी विषैली होती है ।

लक्षण--जीभ में झनझनाहट और अन्त में जीभ सुन्न हो जाती है । परन्तु होश रहता है ।

चिकित्सा--कै वा वमन कराना चाहिए । वमन कराने वाली औषधियां और उनकी खुराक ऊपर लिखी है । यदि कुछ न हो तो गले में अंगुली ही डाल कर वमन लाना चाहिए । खाली पेट कै नहीं कराना चाहिए । थोड़ा जल पिला कर कै करानी चाहिए । रोगी को इस विष के खा

लेने पर पीठ पर लिटा कर रखना चाहिए। कम्मल या रज़ाई शरीर पर डाल देनी चाहिए किन्तु मुंह नहीं ढकना चाहिए।

शराब ऐसी औषधि थोड़ी सी देनी चाहिए। कै कराने के लिये बहुत सा जल पिलाना चाहिए। इस जल में बहुत शराब मिला देनी चाहिए।

संखिया—इसके (Arsenic) नमक बहुत से हैं और वे बनियों की दुकान पर हांडियों में मसाले के साथ रक्खे रहते हैं जैसे हरताल (Orpiment), मेनसिल (Realgar)। यह और अनेक वस्तुओं के बनाने में काम आती है जैसे मक्खी और मच्छर मारने वाले कागज़, मकान की दीवारों पर लगाने के लिये कागज और आतशबाजी इत्यादि के बनाने में।

लक्षण—मूर्च्छा और बड़ी कमजोरी, जलन और दर्द, प्यास, नाड़ी धीमी और कमजोर, हथ पैरों का ठंढा होना।

चिकित्सा—वमन कराना चाहिए। ऊपर लिखी पहिली औषधि देनी चाहिए। कै कराने के पहिले खूब दूध या जल पिला देना चाहिए। कतीरा और बबूल (कीकड़) का गोंद इत्यादि ऐसी वस्तु जल में मिला कर खूब देनी चाहिए। शरीर को गरम रखना चाहिए। तेल, घी, मलाई, दूध इत्यादि देने चाहिए। यदि शरीर ठंढा हो तो गरम कम्मल उढ़ा देना चाहिए।

मदिरा, शराब—**लक्षण**—नशा, चक्कर आना, सीधे न चल सकना, मुंह से बू आना।

चिकित्सा–खूब पानी पिला कर वमन कराना चाहिए। यदि बेहोश हो तो कै नहीं करानी चाहिए। ठंढा जल सिर पर छोड़ना चाहिए किन्तु शरीर को गरम रखना चाहिए। उसको जगाना चाहिए।

भाँग–भांग, गांजा, चरस इत्यादि सब एकही वृक्ष के भाग हैं और इन सबके खाने पीने से लक्षण लगभग एक से होते हैं।

प्रथम तो चित्त बड़ा प्रसन्न होता है और खूब हँसी आती है। आँखें लाल हो जाती हैं और कभी कभी आदमी पागल की तरह भागता है और शोर मचाता है। अन्त में सुस्ती इत्यादि आने लगती है। ज्यादा खाने से मृत्यु भी हो जाती है।

चिकित्सा–सिर पर और पीठ पर ठंढा जल छोड़ना चाहिए और उसे भागने नहीं देना चाहिए।

धतूरा–इसको हमारे देश में ठग लोग प्रायः यात्रियों को तमाकू में मिला कर खिला देते है या भाँग में मिलाकर पिला देते हैं। तीस चालीस बीज से साधारण मनुष्य मर सकता है।

लक्षण–जीभ और मुंह सूख जाते हैं। चक्कर आना, नेत्रों से कम देखना, एक वस्तु दो मालूम होती है। नेत्र लाल हो जाते हैं। भूत प्रेत या सर्प इत्यादि दिखाई देते हैं। और मनुष्य कभी कभी बड़े जोर से हँसता है। पागल सा हो जाता है अन्त में बेहोशी, नींद इत्यादि आ जाती है।

चिकित्सा—यदि खाते समय मालूम हो जाय तो शीघ्र कै करा के बीज या भांग इत्यादि निकाल देनी चाहिए। सिर पर और पीठ पर ठंढा जल डालना चाहिए। पीने के लिये जल इत्यादि देना चाहिए।

अफीम—वा अफीम का सत। यह छोटे बच्चों को सोने के लिये कदापि नहीं देना चाहिए, क्योंकि कभी कभी बच्चे सोते से फिर कदापि नहीं जगते।

लक्षण—नशा चढ़ना, नींद का आना, आँख की पुतलियों का छोटा हो जाना, सांस और नाड़ी का धीरे धीरे चलना इत्यादि।

चिकित्सा—वमन कराना, रोगी को जगाना और सोने न देना, एमोनिया सुंघाना, ठंढा जल छोड़ना, सांस चलाने के उपाय करना, थोड़ा सा पोटेसियम परमेंगनेट (Potassium Permangnate) बहुत से (एक लोटा भर) जल में मिला कर पिला देना चाहिए। और फिर वमन कराना चाहिए। अफीम के निकल जाने बाद रोगी को चाय [Tea] मिलानी चाहिए। रोगी को नशे की दशा में घुमाना नहीं चाहिए।

कुचला-लक्षण—खाने पर बड़ा कड़ुआ स्वाद। कुछ लस भी है, हाथ पैरों का ऐंठना वा अकड़ना। बड़ी बुरी दशा हो जाती है। रोगी बेहोश नहीं होता।

चिकित्सा—यदि पीसे हुए वा बिना पीसे बीज खा लिए हों तो पहिली औषधि जो पहिले लिख दी गई है देनी चाहिए और फिर शीघ्र कै करा देनी चाहिए।

यदि लक्षण आरंभ हो गए हों तो रोगी को नरम बिछौने पर लिटा देना चाहिए और शीघ्र डाक्टर को वा किसी बुद्धिमान वैद्य को बुला कर दिखा देना चाहिए और रोगी के कमरे में किसी प्रकार का शोर नहीं करना चाहिए।

तमाकू–लक्षण–चक्कर आना, कै आना, दृष्टि का कम हो जाना।

चिकित्सा–यदि कै स्वयं आरंभ न हो जाय तो औषधि देकर कै करानी चाहिए। दूध, घी, और कतीरा, गोंद इत्यादि चिकनाहट वाली चीजें देनी चाहिएं।

कोयले का धूंआ–प्रायः जाड़ों में वा ऐसे ठंडे स्थानों में जैसे शिमला, अज्ञानी मनुष्य अपने सोने वाले कमरों में कोयलों को जला कर सो जाते हैं और सबेरे मरे हुए पाए जाते हैं।

लक्षण--चक्कर का आना, बेहोशी, सांस का धीरे धीरे चलना, जी का घबराना।

चिकित्सा--राई का पलस्तर हृदय के ऊपर लगाना चाहिए, स्वच्छ वायु अर्थात शीघ्र बाहर ले आना चाहिए, और सांस चलाने वाले उपाय करने चाहिएं।

फास्फोरस--यह दो प्रकार का होता है, एक विषैला और दूसरा जिससे विष नहीं चढ़ता। पुराने चाल की दियासलाइयां जो दीवार या लकड़ी पर रगड़ जाने से जल जाती हैं इस विषवाले फास्फोरस से बनती हैं। किन्तु आज

कल एक दूसरे प्रकार की दियासलाई बिकती है जो केवल दियासलाई के बकस ही के मसाले पर रगड़ने से जलती है। यह दूसरे प्रकार के फास्फोरस से बनती है।

लक्षण—मुख से दुर्गंधि और कै और दर्द।

चिकित्सा—शीघ्र कै कराना। इसके लिये १ वा २ रत्ती तूतिया (Copper-sulphate) जल में मिलाकर दस दस मिनिट पर देना चाहिए। यदि शीघ्र इस रीति से कै न हो तो और उपाय से वमन करा कर उस विष को बाहर निकाल देना चाहिए। यदि कुछ समय बीत गया हो तो तारपीन का तेल आयु के अनुसार बबूल के साथ पानी में घोट कर देना चाहिए।

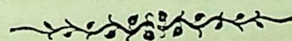
मट्टी का तेल—प्रथम तो इसको दुर्गंधि के कारण कोई नहीं पीएगा। यदि कोई बच्चा पी जाय तो दूध या जल इत्यादि पिला कर शीघ्र कै करा देनी चाहिए।

पारा वा पारे का नमक इत्यादि-चिकित्सा—इनके खाते ही खूब दूध पिला कर बमन कराना चाहिए। यदि कुछ बुरा न समझा जाय तो मुर्गी के अंडे को तोड़ कर उसके भीतर का सुफेद भाग जल में मिला कर उसी रीति से पिला कर कै करानी चाहिए। यदि वमन स्वयं आरम्भ हो जाय तो वमन कराने वाली औषधियों के देने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि दूध वा अंडा इनमें से कोई न मिले और कुछ विचार न हो तो मांस को खूब काट कर जल में मिला कर दीजिए। इन सब के पश्चात् वा आदि में और कुछ न हो तो आटा और पानी मिलाकर पिलाना चाहिए।

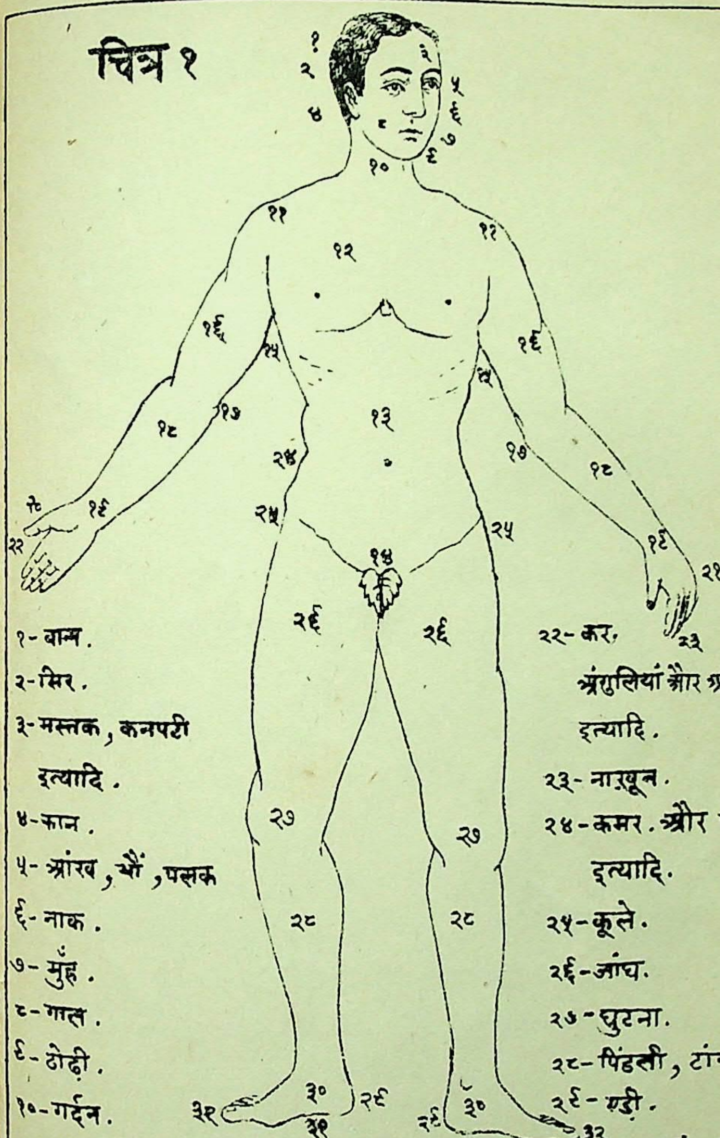
सारांश--इस सबका सारांश यह है कि खाते ही विष को कै कराकर पेट से निकाल देना चाहिए। केवल उन विषों की चिकित्सा के समय बुद्धिमानी की आवश्यकता है जिनके खाते ही मुख, आमाशय, इत्यादि की दीवार गल जाती है जैसे कार्बोलिक तेजाब से।

(२) दूसरी बात जो स्मरण रखने योग्य है वह यह है कि मेरी सम्मति में जो केछ खाद्य वस्तु जैसे रोटी, दाल, चावल, साग, आटा, इत्यादि इनमें से जो कुछ समय पर मिल जाय विष के खाते ही रोगी को खिला दीजिए और फिर गले में अंगुली डाल कर वमन कराने वाली औषधियां पास हों तो उन्हें खिला कर वमन करा दीजिए।

(३) ऊपर की दी बातें के स्मरण रखने से साथ शीघ्र प्रारम्भिक चिकित्सा कर सकते हैं और कुछ काल बीतने पर डाक्टर की आवश्यक्ता पड़ती है।

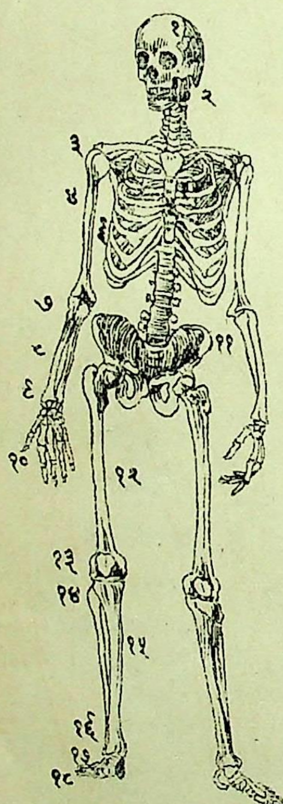


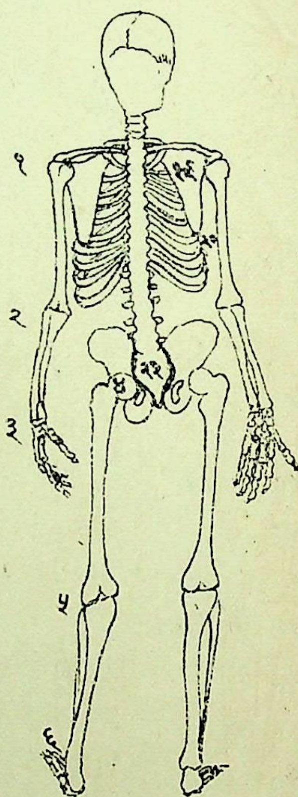
चित्र १

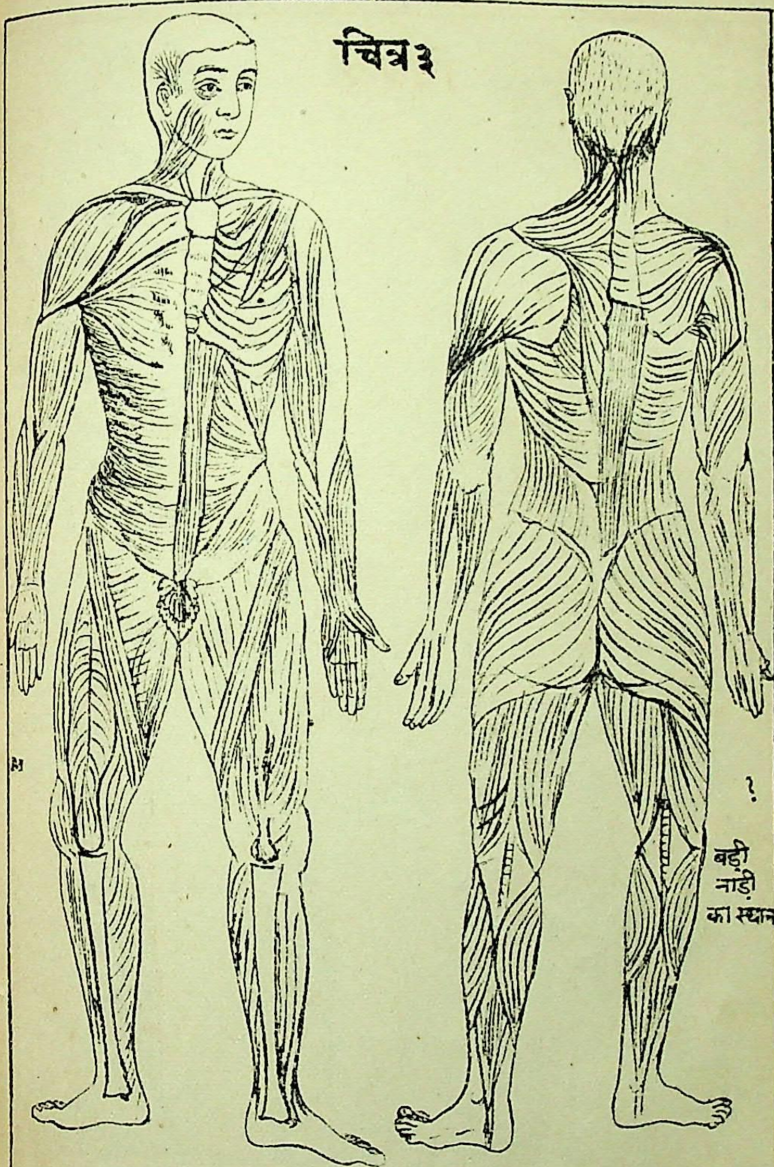


१-बाल.
२-सिर.
३-मस्तक, कनपटी इत्यादि.
४-कान.
५-आंख, भौं, पलक
६-नाक.
७-मुंह.
८-गाल.
९-ठोढ़ी.
१०-गर्दन.
११-कंधे.
१२-छाती, सीना, और स्त्रियों के कुच या स्तन.
१३-पेट, नाभि.
१४-पेडू.
१५-बग़ल, कांख.
१६-बाहँ, भुजा.
१७-कुहनी.
१८-पोंहचा.
१९-कलाई.
२०-हथेली.
२१-करपृष्ठ.
२२-कर, अंगुलियां और अंगूठा इत्यादि.
२३-नाख़ून.
२४-कमर और पीठ इत्यादि.
२५-कूले.
२६-जांघ.
२७-घुटना.
२८-पिंडली, टांग.
२९-एड़ी.
३०-टकना, पैर की गांठ.
३१-पदतल.
३२-पद, पैर, इत्यादि

चित्र २

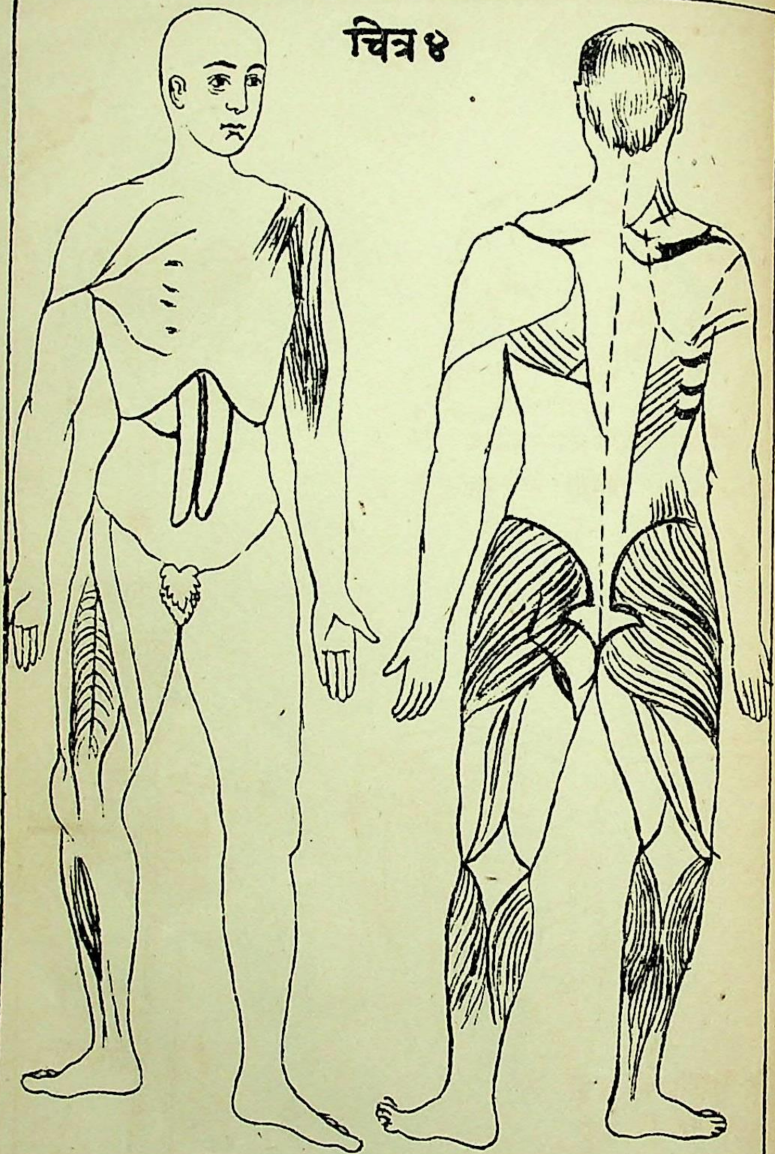






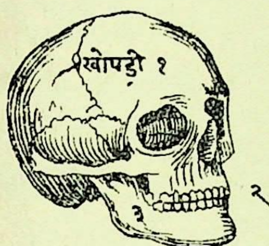
पेशी या मांस।

चित्र ४

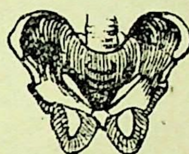


बड़ी पेशी के आकार ।

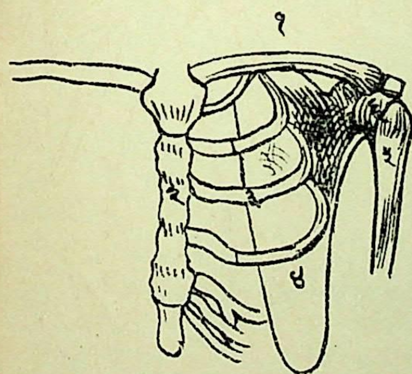
चित्र ५



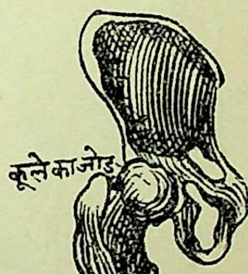
१- कपाल . मनुष्य की खोपड़ी .
२- दांत . ३- जावड़ा (नीचे का).



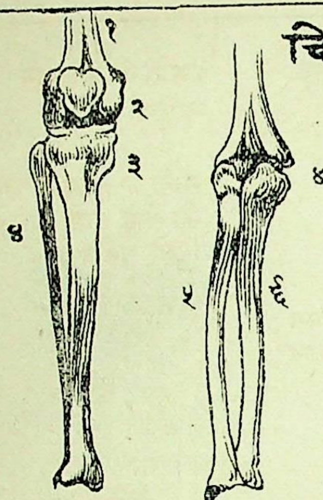
कूले की हड्डियां और उन के मध्य की हड्डी .



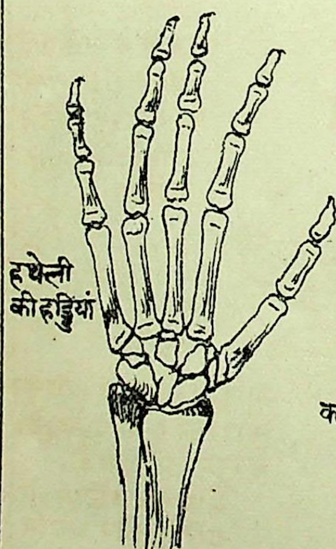
१- हँसुली की हड्डी .
२- छाती की हड्डी .
३- पसलियां .
४- कंधे की हड्डी .
५- बाहँ की हड्डी .
६- कंधे की संधि वा जोड़.



चित्र ६

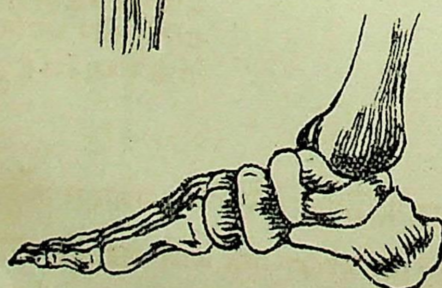


१- जंघास्थि (कटी हुई)
२- घुंटना
३- टांग की मोटी और बड़ी हड्डी
४- कुहनी की संधि जो बांह की हड्डी के साथ मिलने से बनती है
५- *Radium* (रेडियस)
६- *Ulna* (अलना)



अंगुलियों की हड्डियां

कलाई की संधि वा गांठ

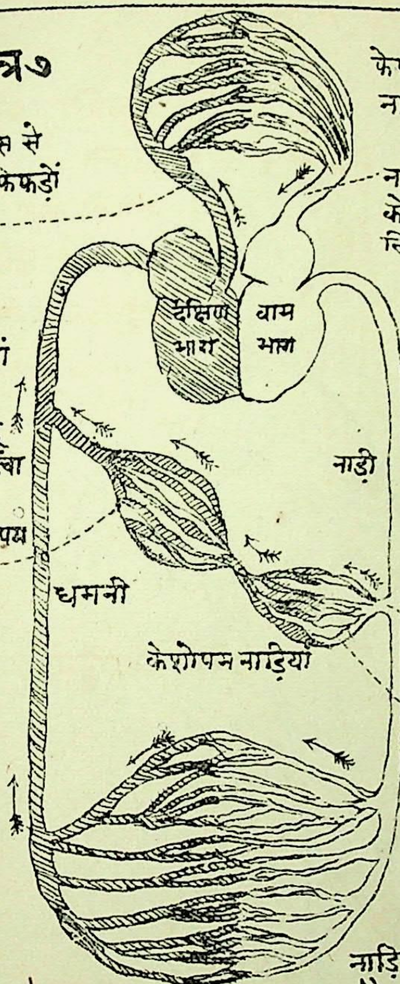


टकना.

एड़ी की हड्डी.

पांव के तालू की हड्डियां

चित्र ७



वह नाड़ी जिस से लोहू हृदय से फेफड़ों में जाता है.

फेफड़ों की केशोपम नाड़ियां.

नाड़ी जो हृदय से फेफड़ों को लोहू साफ़ होने के लिये पहुँचाती है.

हृदय

शरीर की धमनियां (मिलीहुई) जो अपवित्र लोहू को हृदय तक पहुंचा तीहैं.

पोर्टल (Portal) नामक धमनी जो आंतों के लोहू को यकृत में ले जाती है

यकृत की केशोपम नाड़ियां.

वह नाड़ी जो आंतों को लोहू पहुंचाती है

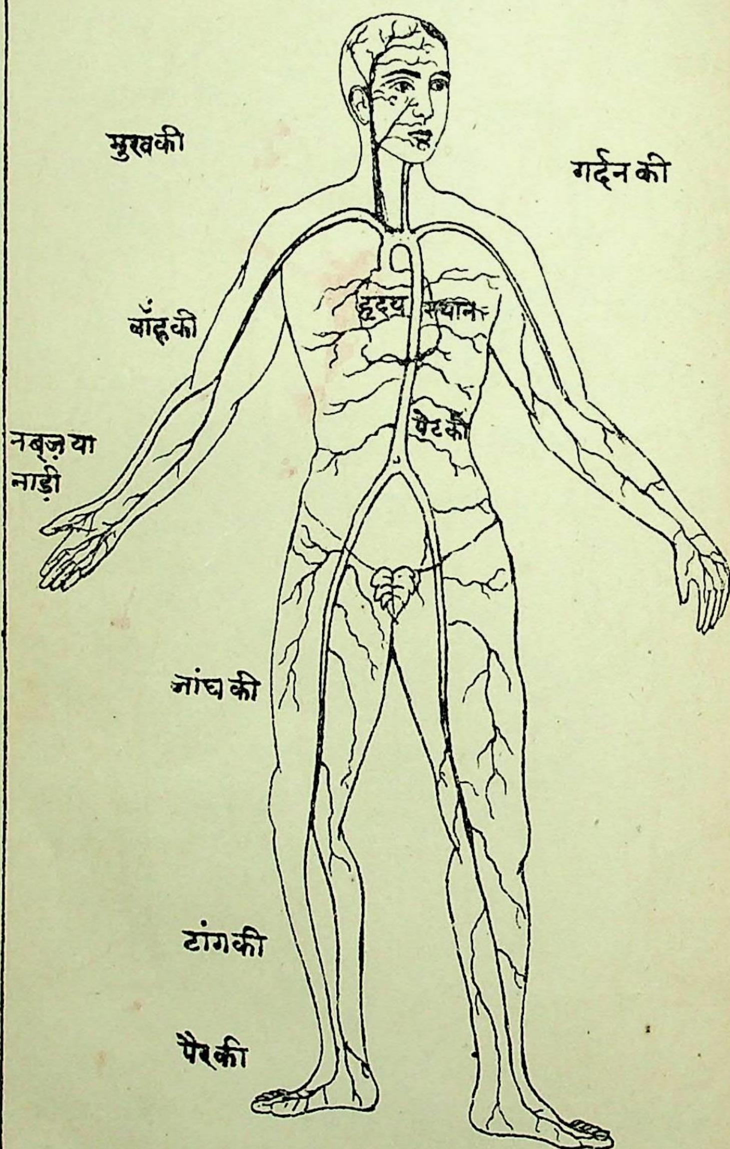
आंतों की केशोपम नाड़ियां.

नाड़ियां जो हाथ और पांव और सिर इत्यादि को हृदय से खून ले जाती हैं.

केशोपम नाड़ियां जो नाड़ियों और धमनियों के मध्यस्थ हैं.

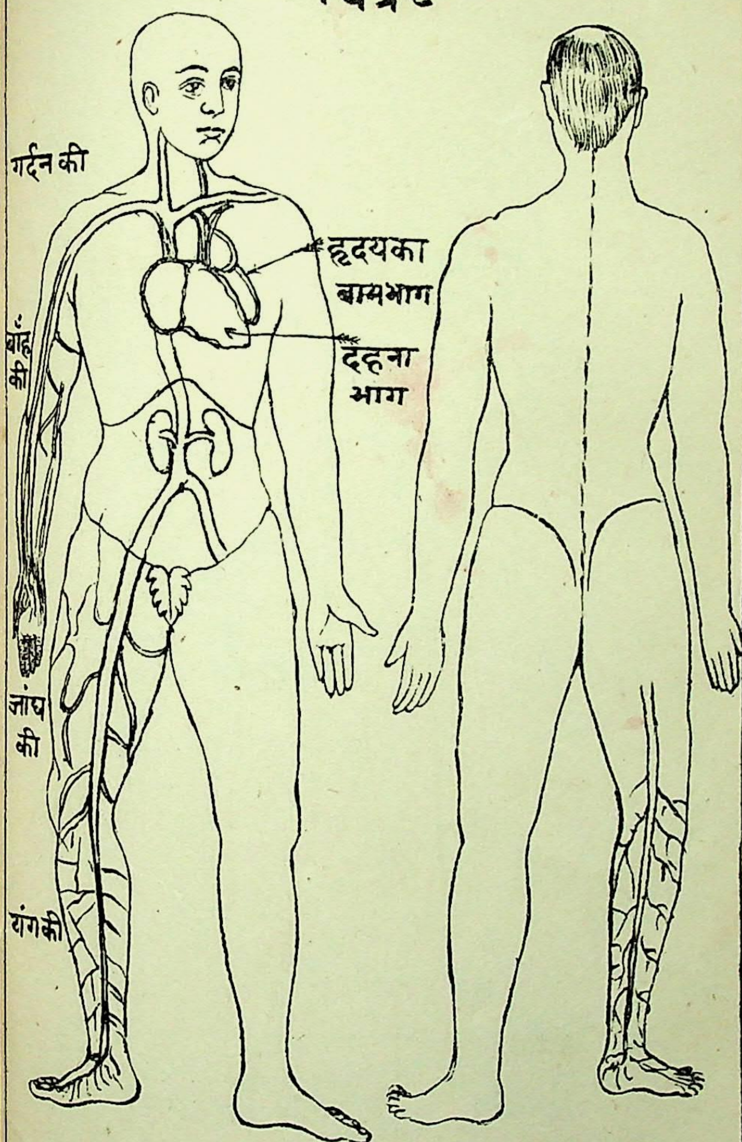
यह चित्र केवल इस बात के दिखाने के लिये बनाया गया है कि पाठकों को यह ज्ञात हो कि रुधिर एक मार्ग (नाड़ी) से जाता है और दूसरे मार्ग से (धमनी) हृदय को लौट आता है.

चित्र ८



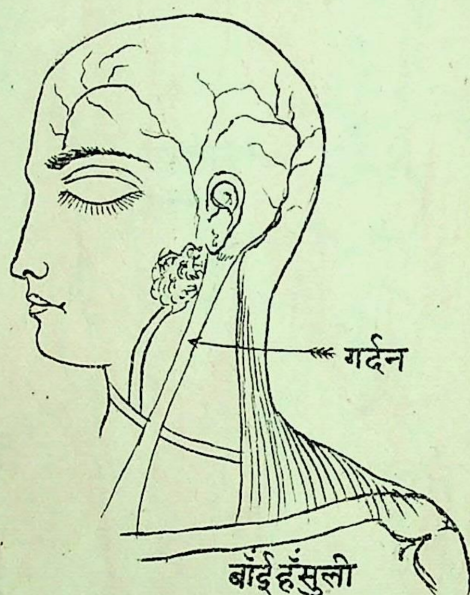
शरीर की प्रधान प्रधान नाड़ियां

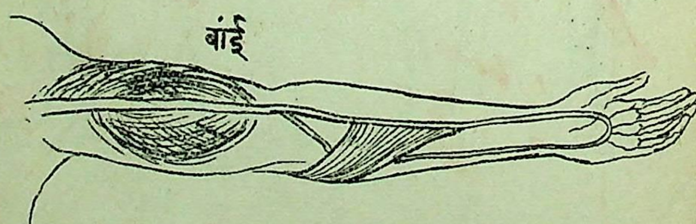
चित्र ९



शरीर की मुख्य मुख्य धमनियां

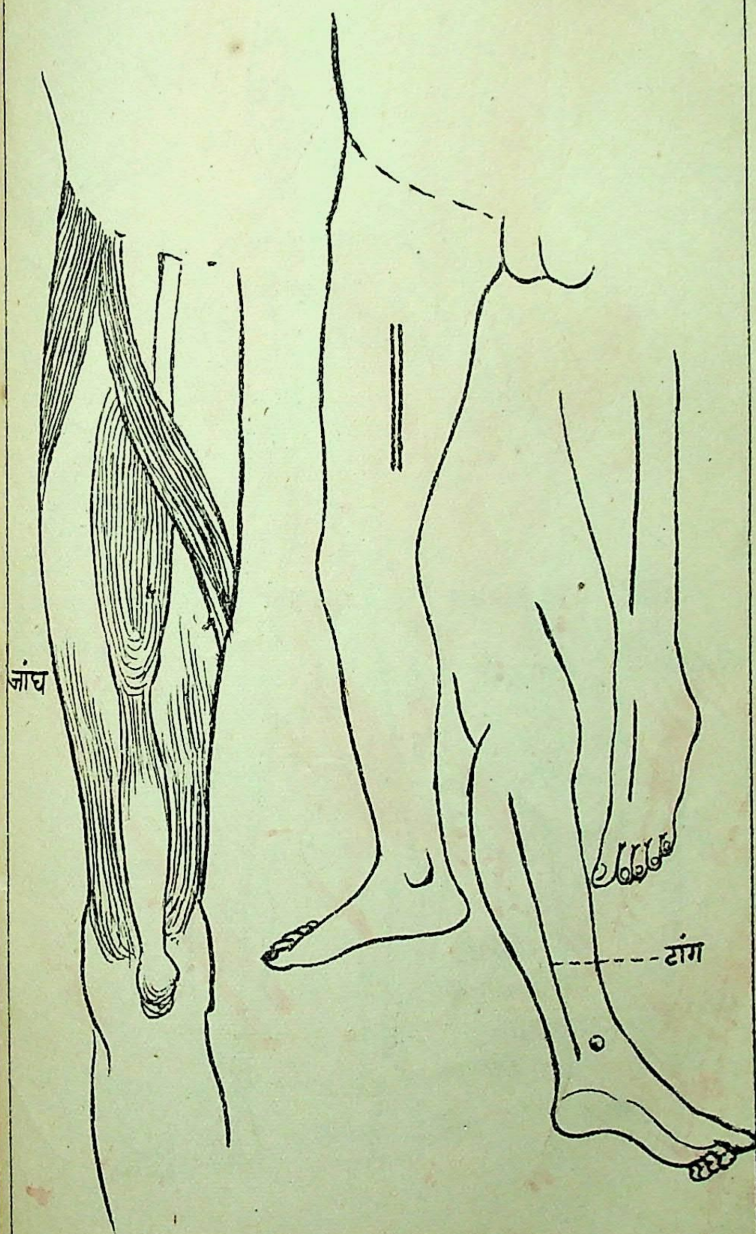
चित्र १०





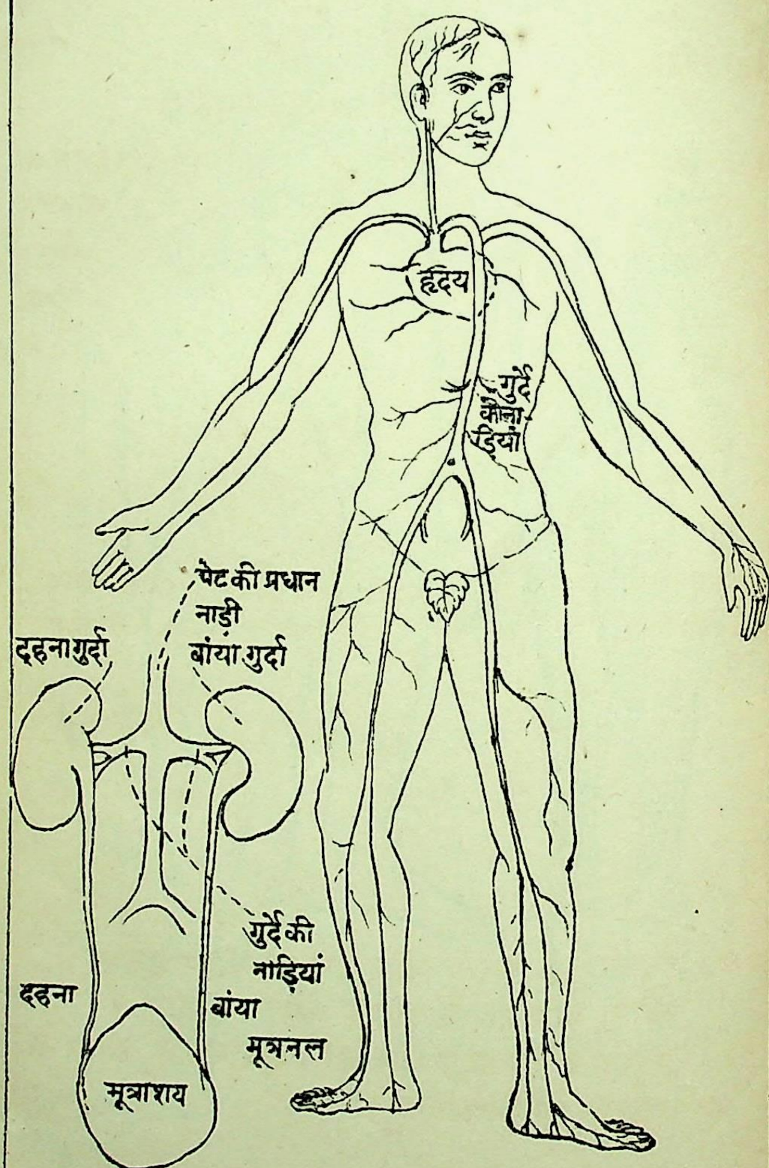
प्रधान नाड़ियां और
पेशियां।

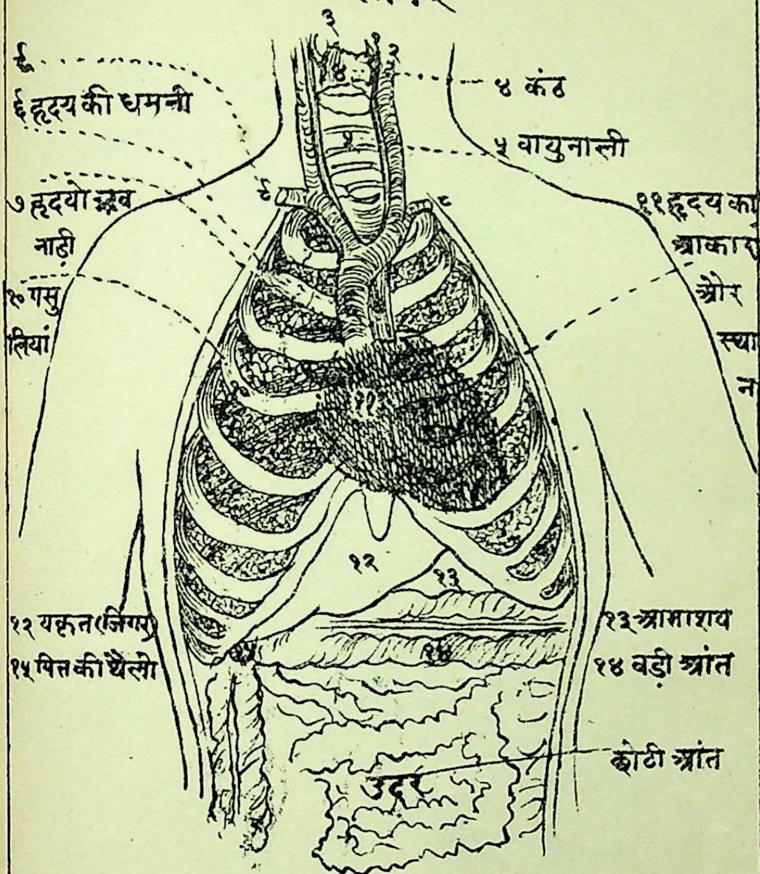
चित्र ११



प्रधान नाड़ियों के स्थान ।

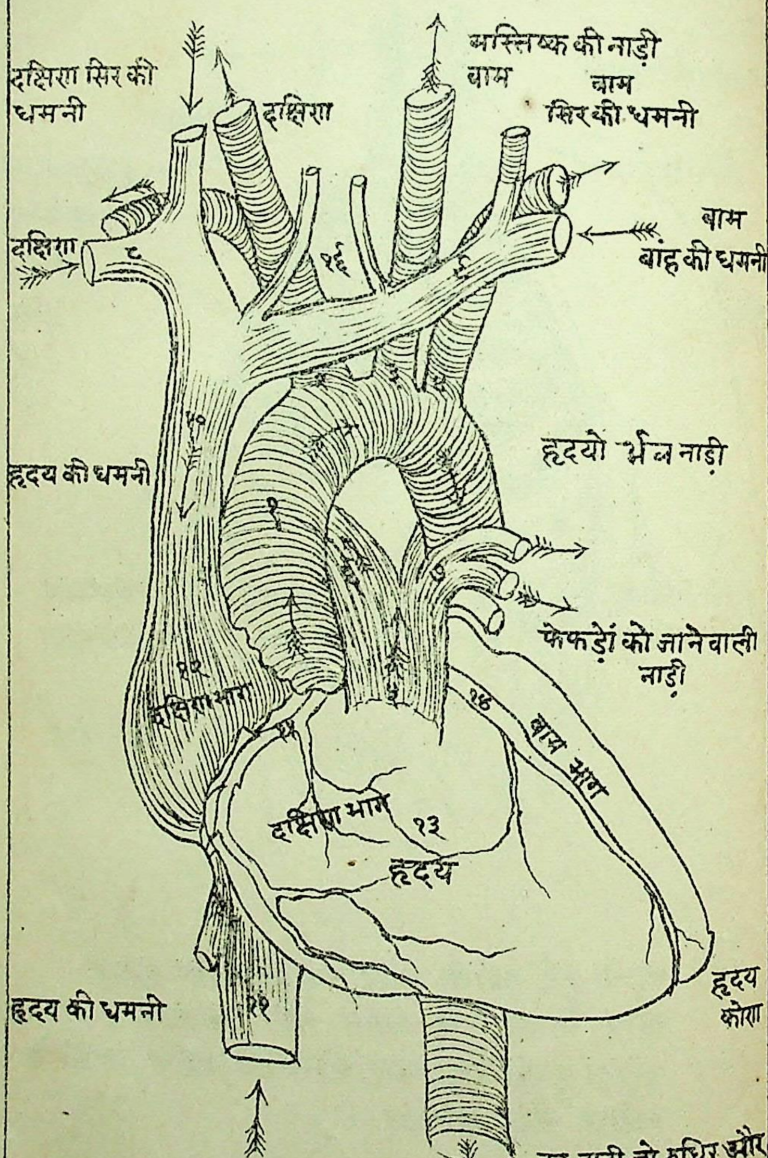
चित्र १२





(१) खुली हुई छाती और उस के भीतर हृदय और फेफड़ों के स्थान और आकार ।
(२) खुला हुआ उदर और आमाशय, यकृत, आंतों के स्थान और आकार ।

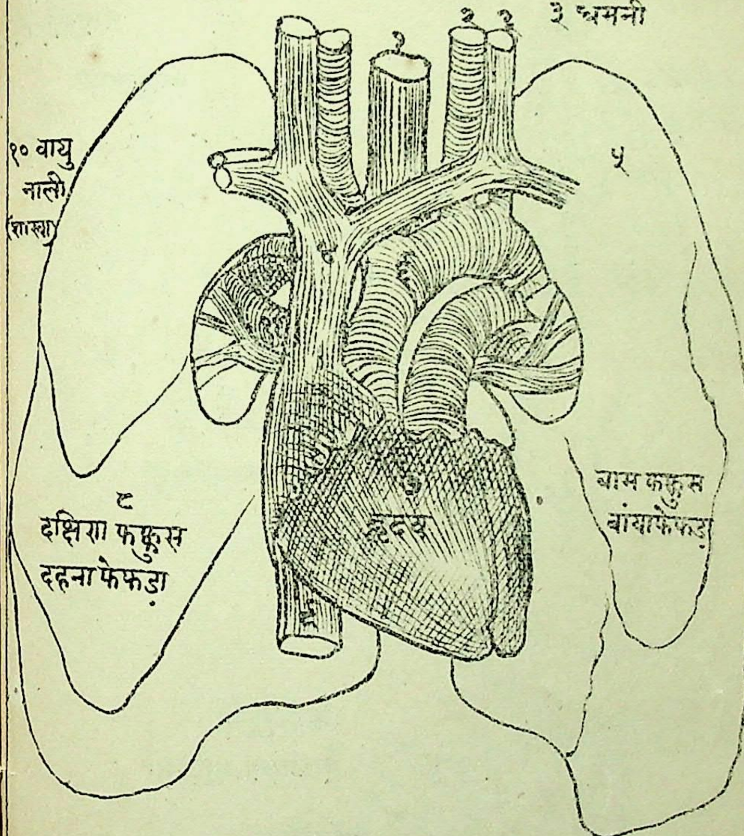
चित्र १९



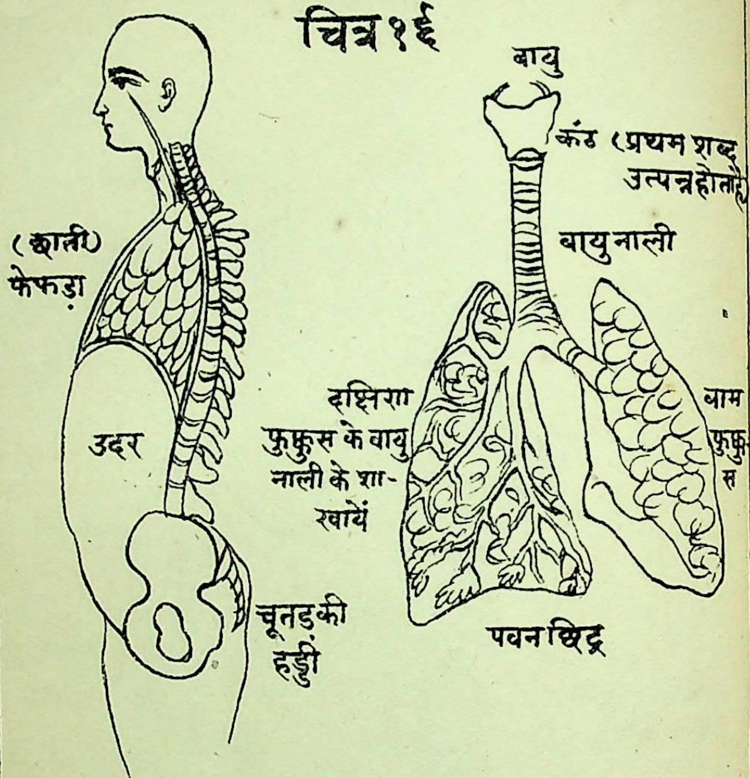
वह नाड़ी जो रुधिर और उस के साथ अवयवों को देकर टांगों की ओर जाती है. इसी की शाखें, जांघ और टागों को जाती हैं

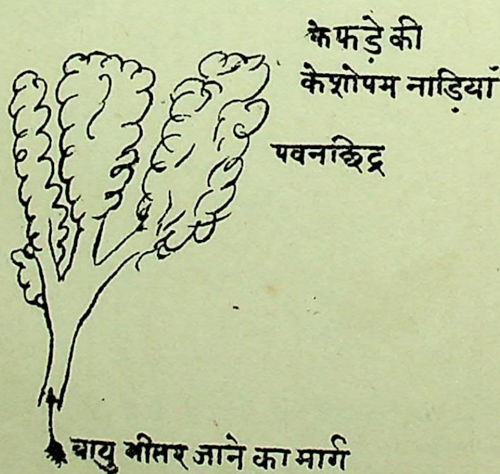
हृदय और उस की मुख्य मुख्य नाड़ियां और धमनियां ।

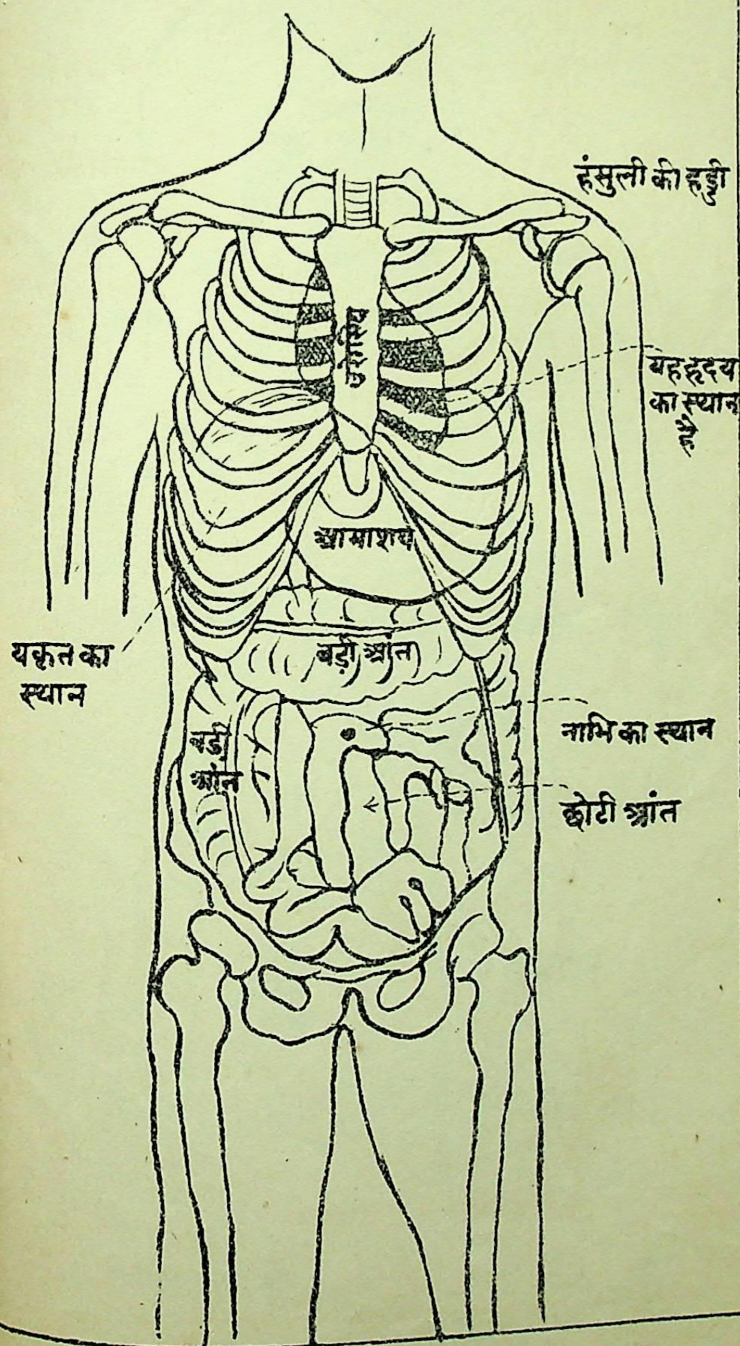
चित्र १५



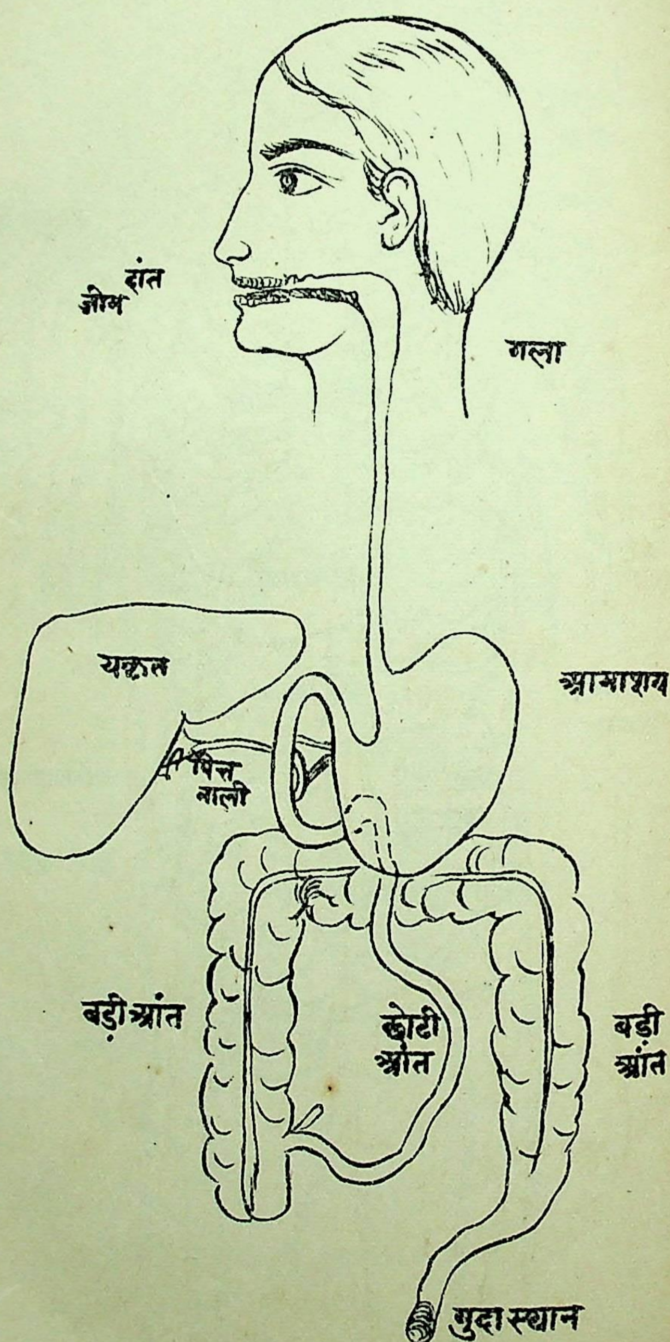
फेफड़ों का आकार और उन का
हृदय से संबन्ध ।


चित्र १६
वायु
कंठ (प्रथम शब्द उत्पन्न होता है)
बायु नाली
(छाती) फेफड़ा
दक्षिण फुफुस के वायु नाली के शा-खायें
वाम फुफुस
उदर
चूतड़ की हड्डी
पवन छिद्र

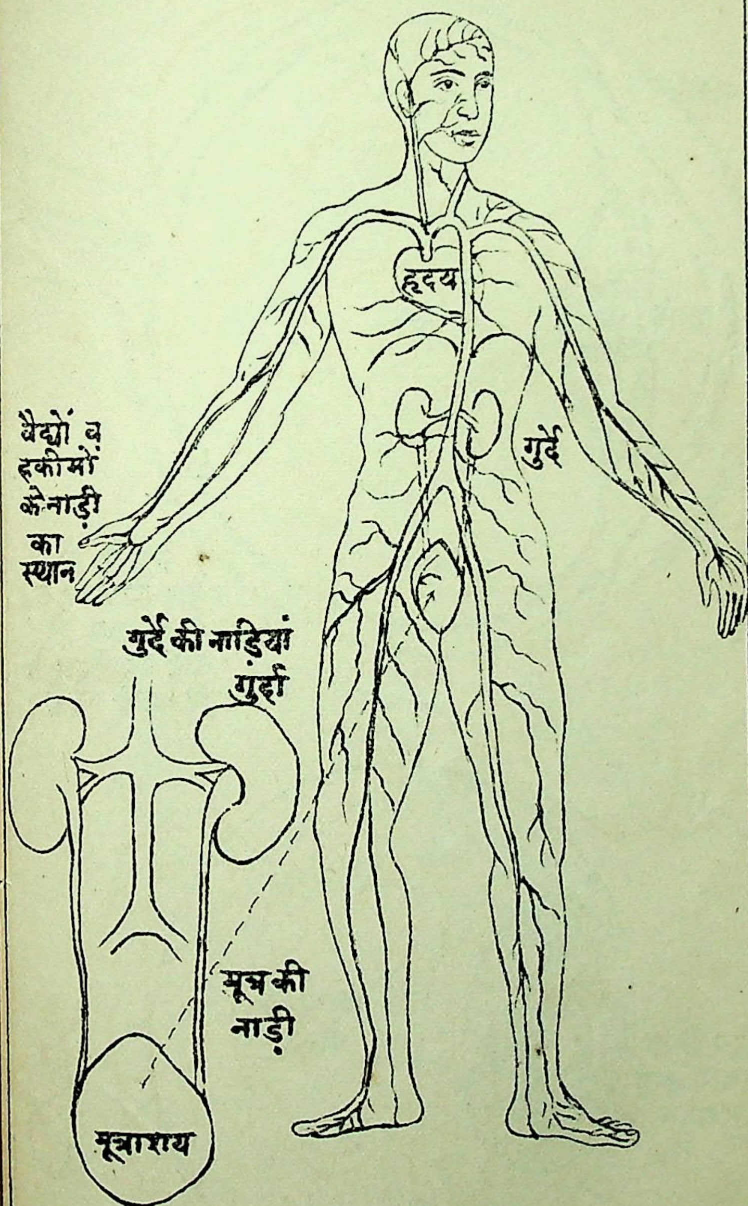

फेफड़े की केशोपम नाड़ियां
पवनछिद्र
वायु भीतर जाने का मार्ग


चित्र १७
हंसुली की हड्डी
यह हृदय
का स्थान
है
आमाशय
यकृत का
स्थान
बड़ी आंत
बड़ी
आंत
नाभि का स्थान
छोटी आंत

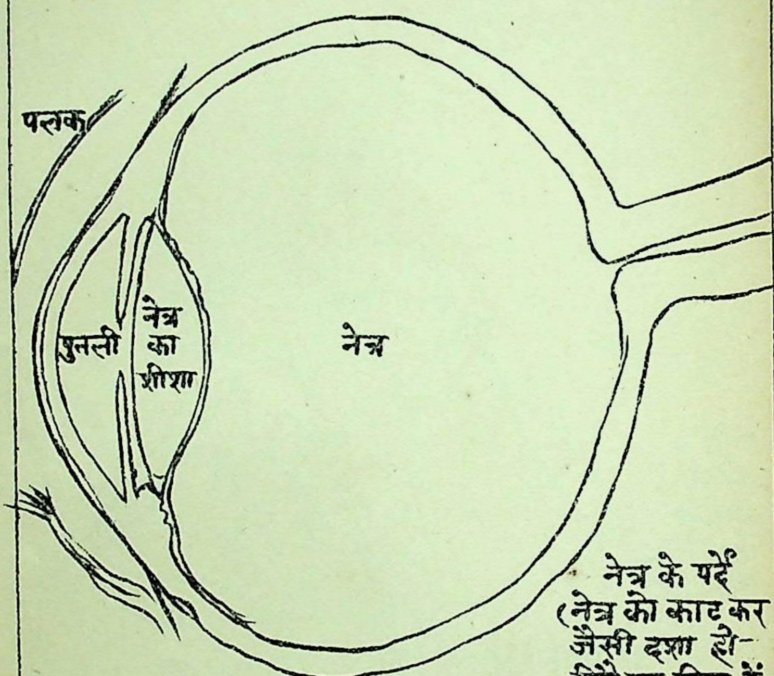
चित्र १८

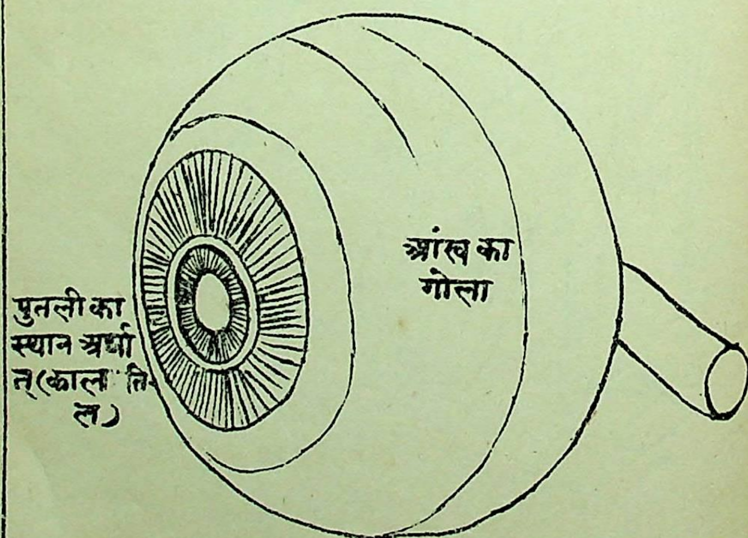


चित्र १९

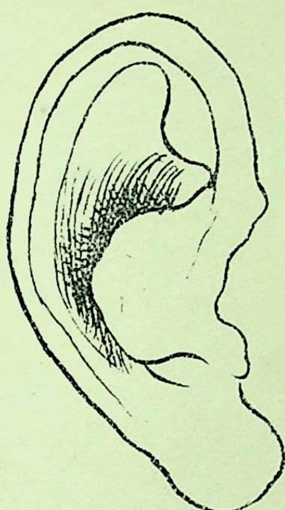


चित्र २०

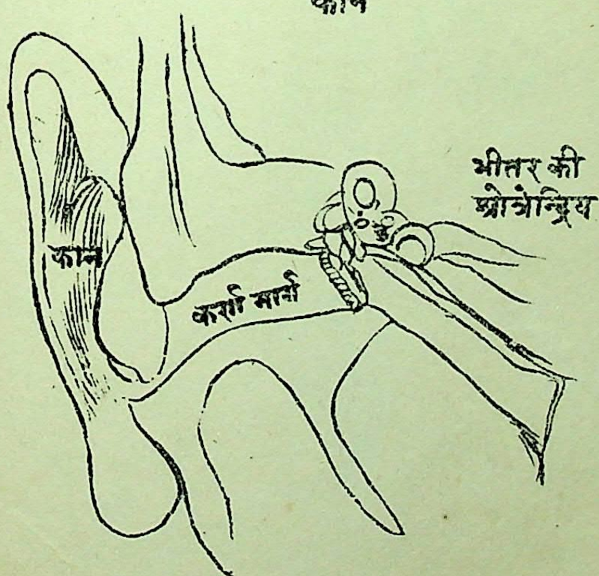

पलक
पुतली
नेत्र का शीशा
नेत्र
नेत्र के पर्दे (नेत्र को काट कर जैसी दशा होती है वह चित्र में दिखाई गई है)


आंख का गोला
पुतली का स्थान अर्थात (काला तिल)

चित्र २१

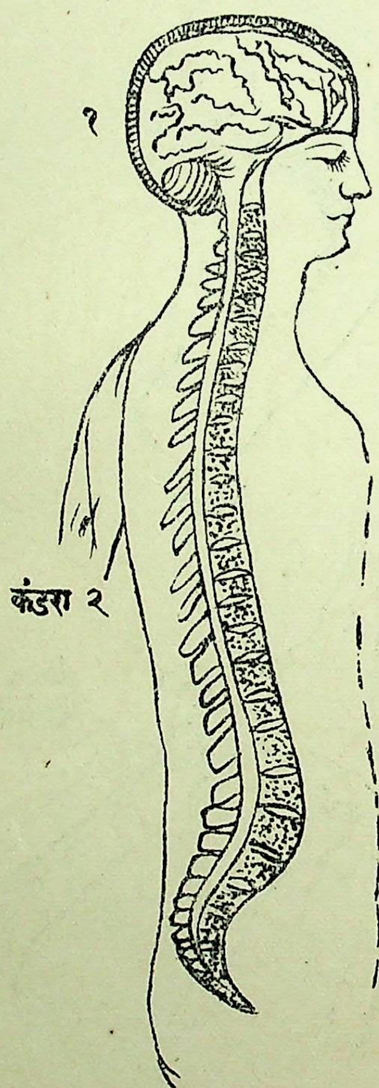


कान



कान का ढोल या पर्दा

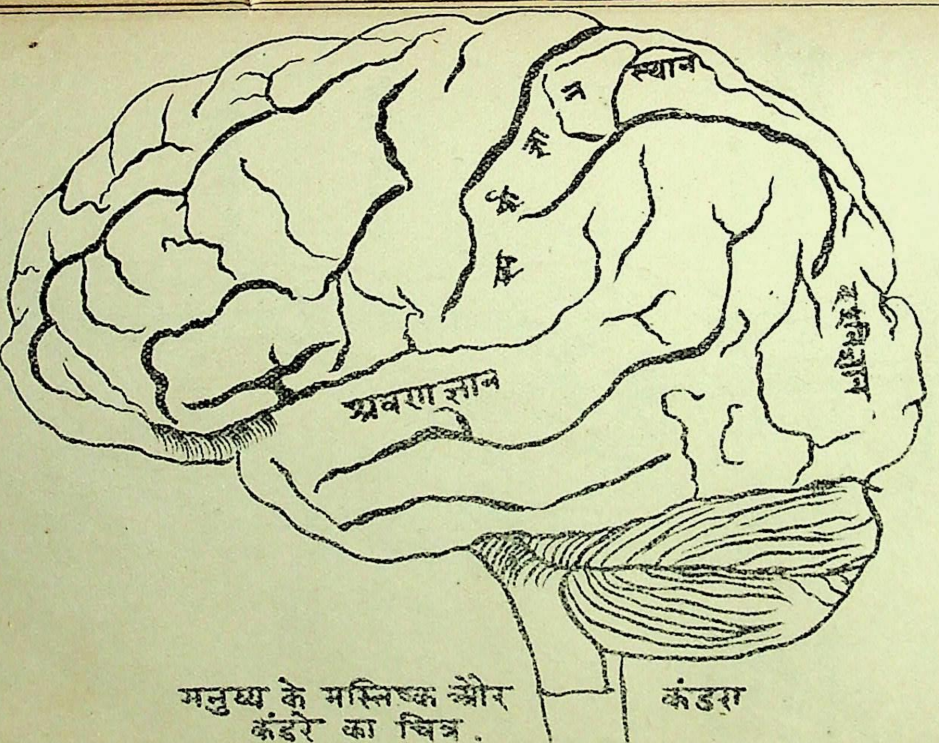
चित्र २२



१ मस्तिष्क

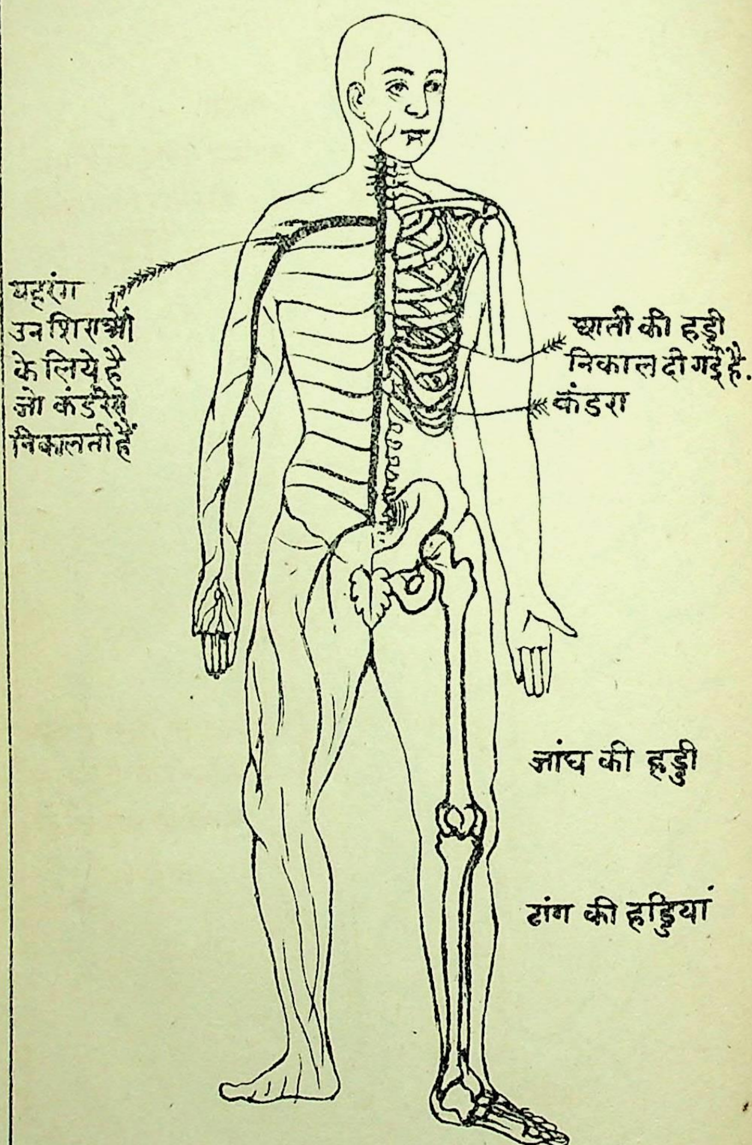
२ कंडरा

चित्र २३



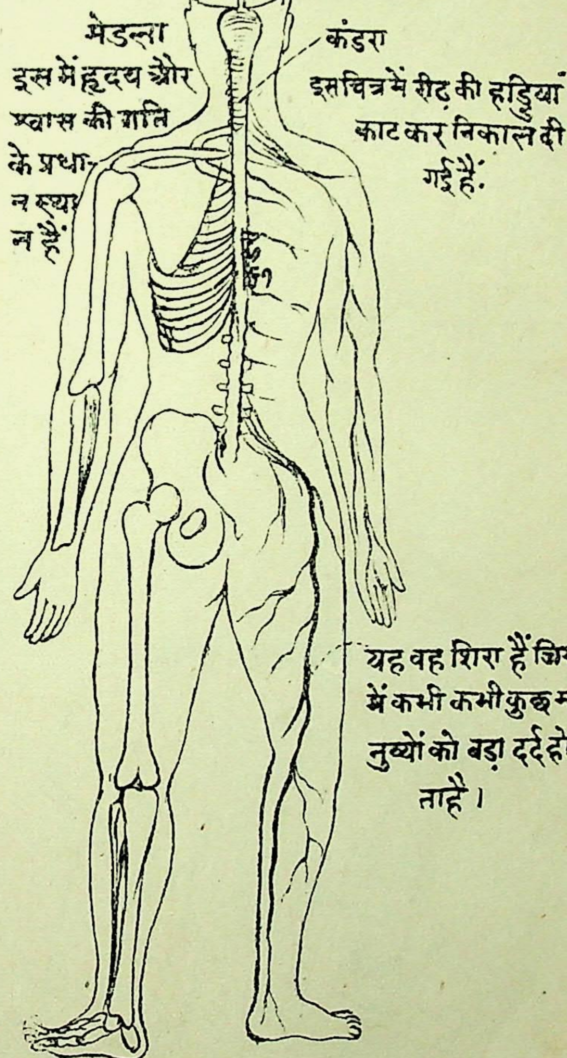
मनुष्य के मस्तिष्क और
कंडरे का चित्र.

चित्र २६

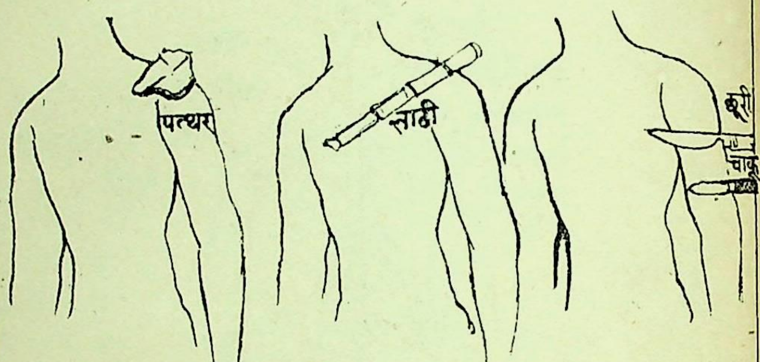


इस चित्र में और दूसरे चित्र में जो हल्की रेखायें बनाई हैं वह केवल इस बात के दिखाने के लिये कि मस्तिष्क या दिमाग़ को इन तारों के द्वारा प्रत्येक प्रकार के समाचार प्रत्येक स्थान से मिलते रहते हैं ।

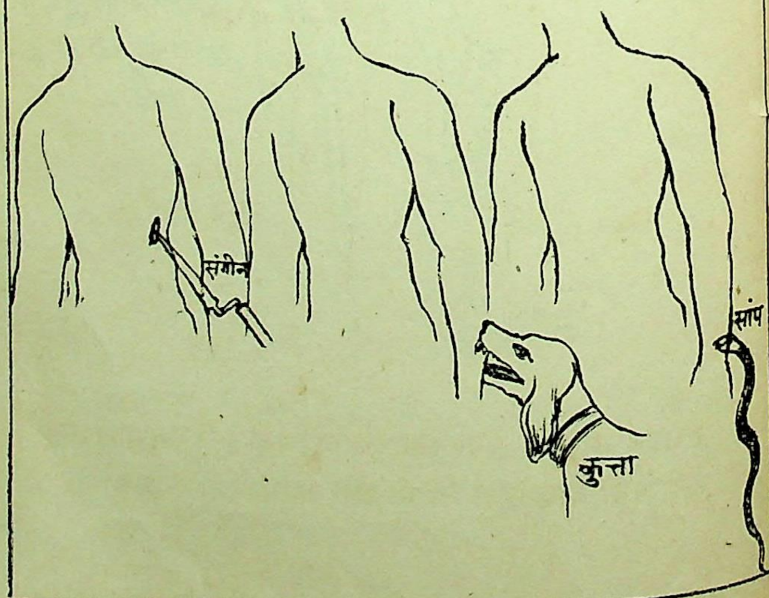
चित्र २५


पीठ
मस्तिष्क
मेडल्ला
इस में हृदय और
श्वास की गति
के प्रधा-
न स्था-
न हैं
कंडरा
इस चित्र में रीढ़ की हड्डियां
काट कर निकाल दी
गई हैं.
यह वह शिरा हैं जिस
में कभी कभी कुछ म-
नुष्यों को बड़ा दर्द हो-
ता है।

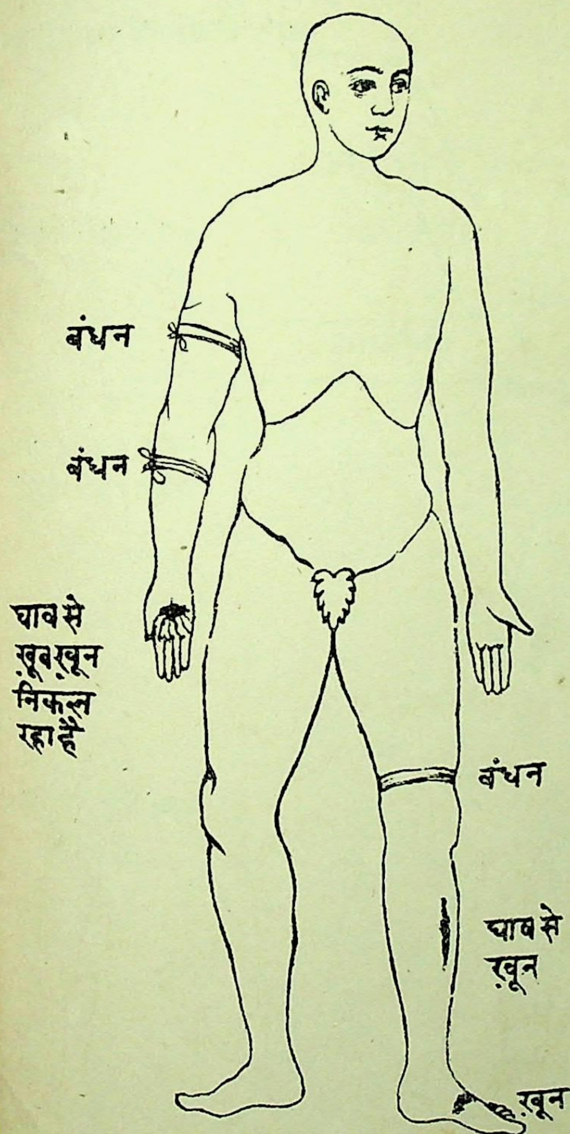
चित्र २६



भिन्न प्रकार के घाव



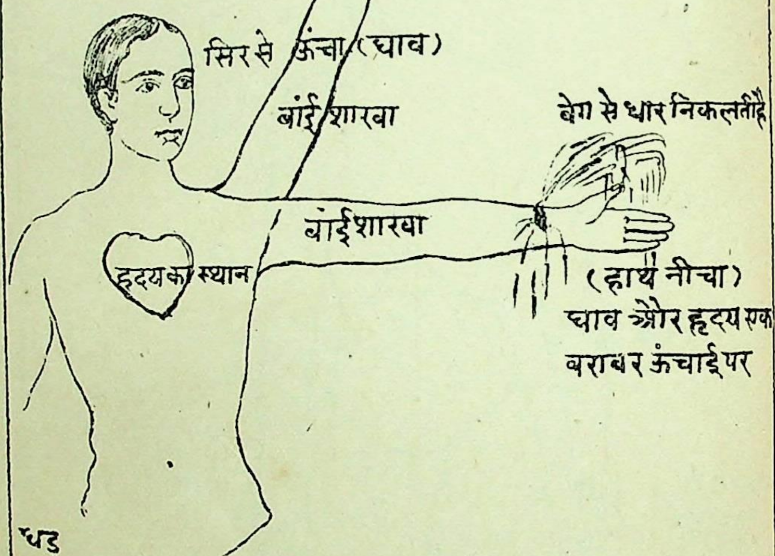
चित्र २७



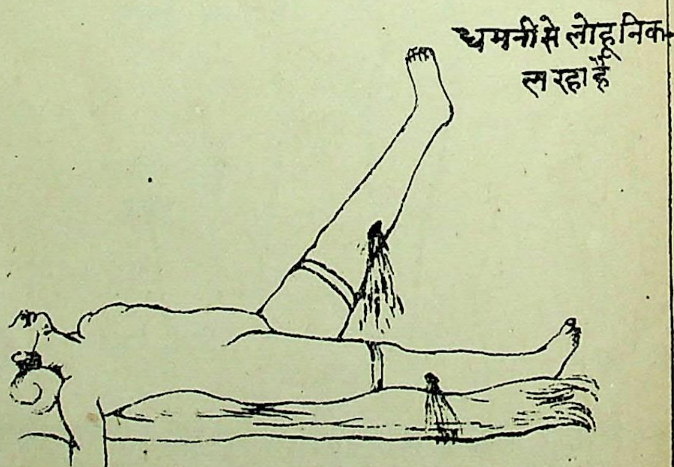
प्रधान नाड़ी के ऊपर ख़ूब दबाकर पट्टी उसी समय बांध सकते हो जब ख़ून किसी और उपाय से न रुके।

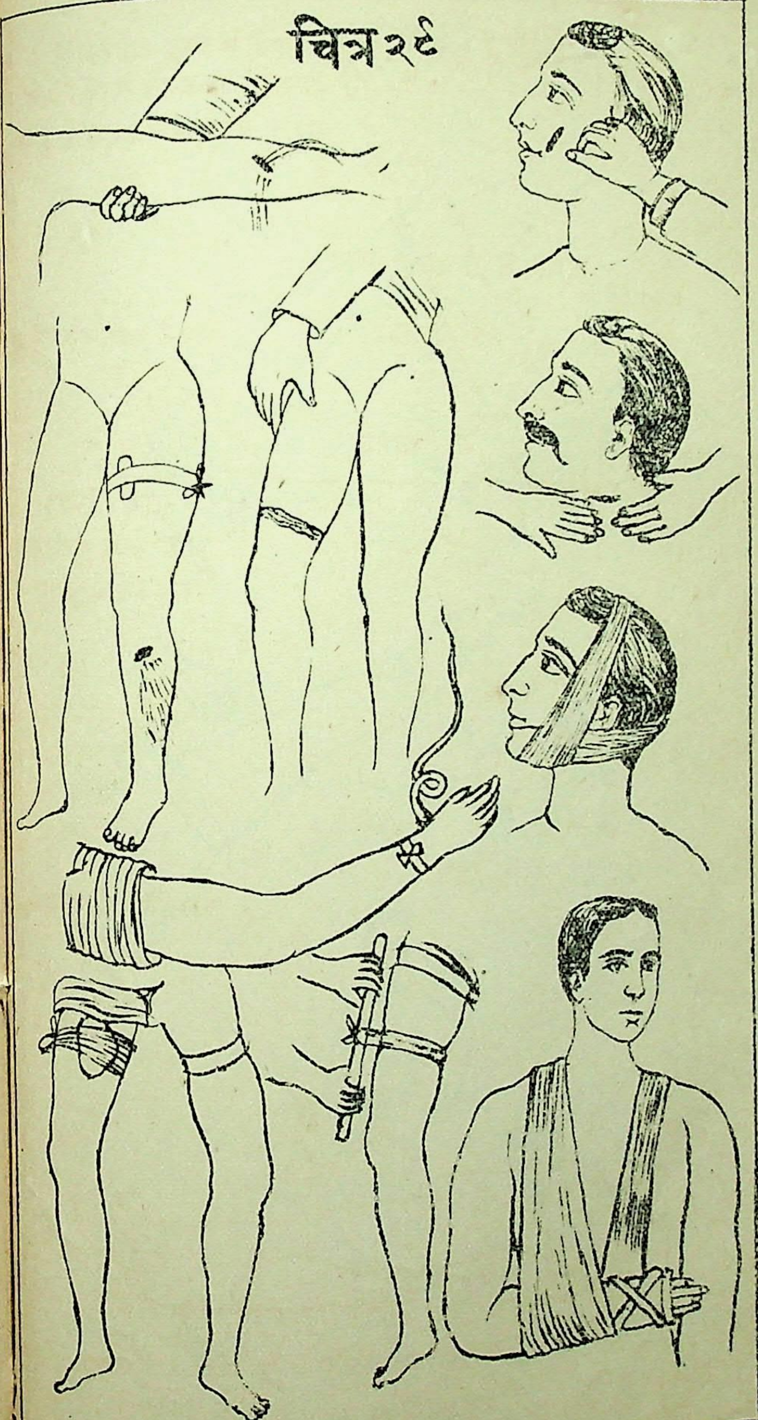
चित्र २८

(नाड़ी से लोहू बह रहा है।)
हाथ ऊंचा करने से खून कम
आता है घाव अब हृदय से ऊंचा
है।



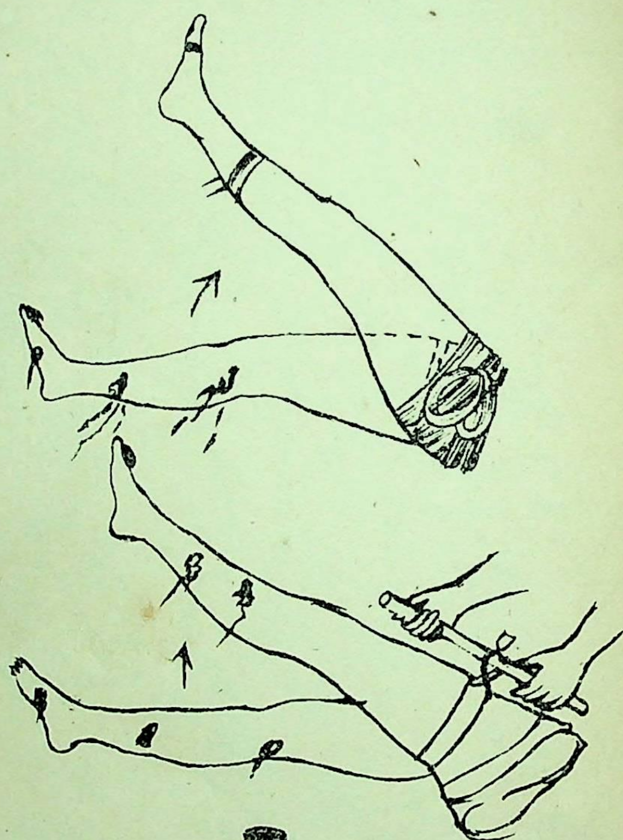
धमनी से लोहू निक-
ल रहा है

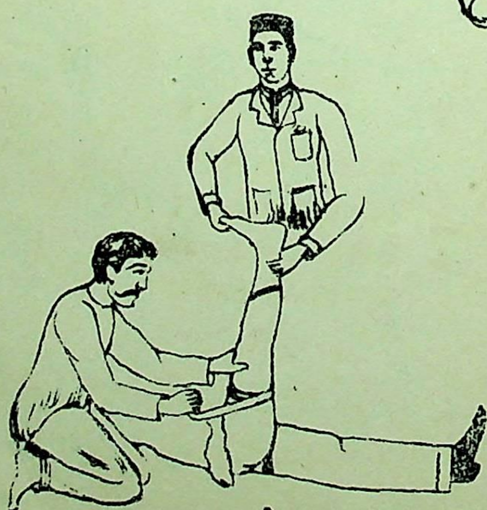




चित्र २६

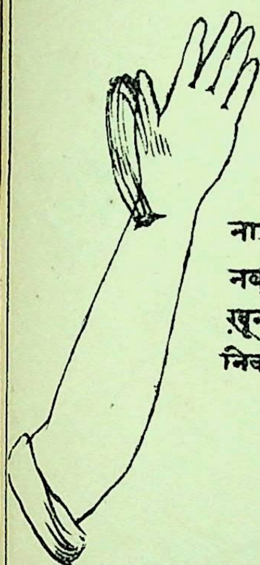
चित्र ३०

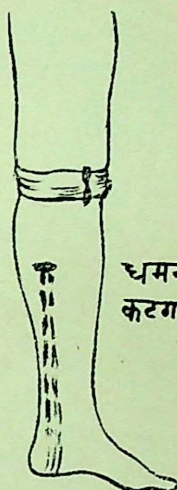




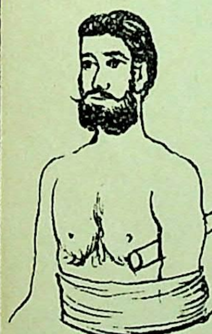
रबड़ के ट्यूब लपेटने की रीति

चित्र ३१

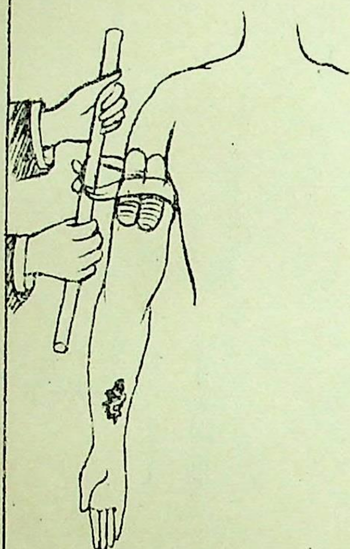

नाड़ी या
नब्ज़ से
ख़ून की धारें
निकल रही हैं


धमनी
कट गई है


नाड़ी कट
गई है


बग़ल में लकड़ी
दबी हुई है ख़ून कलाई
के कटने से निकलता था
और बंद नहीं होता था।

चित्र ३२



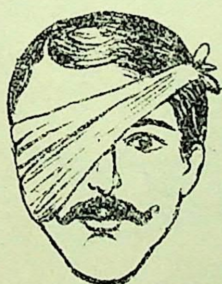






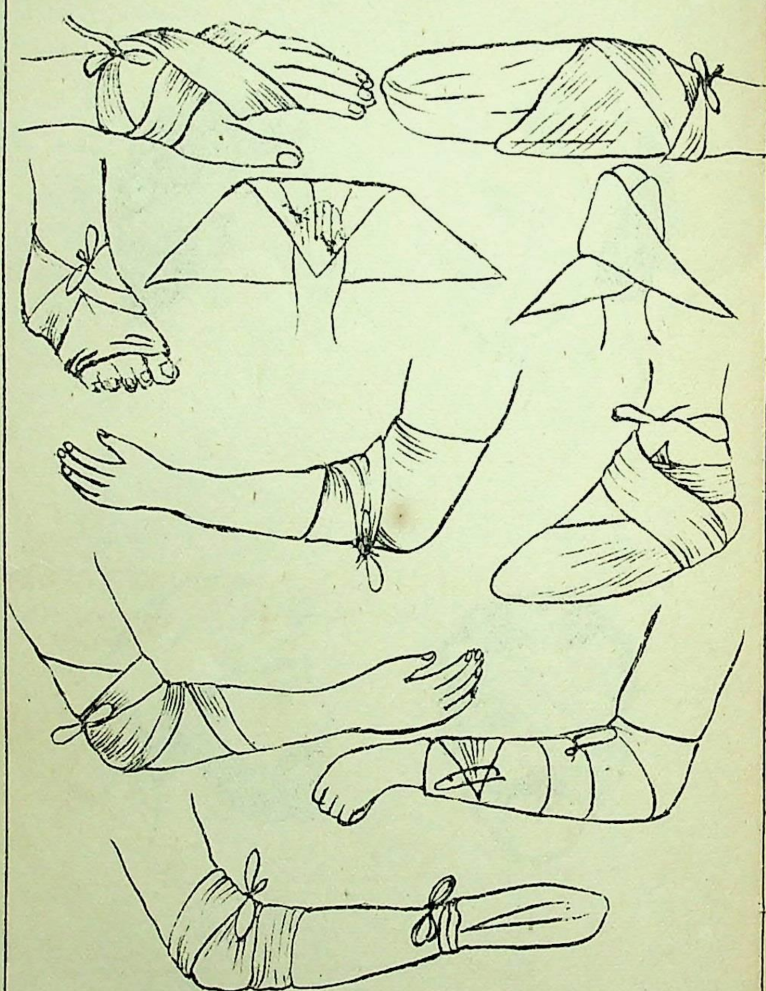
चित्र ३३






आप सिर और माथे पर के घाव एक साधारण चौकोर वस्त्र को (जैसे रूमाल) दुहरा कर बांध सकते हैं।

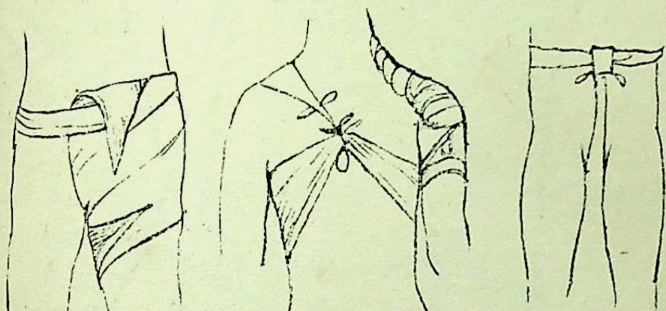
चित्र ३८



चित्र में दिए हुए स्थानों के घावों को भी रूमाल
इत्यादि ऐसे चौकोर वस्त्र से बांध सकते हो।

चित्र ३५





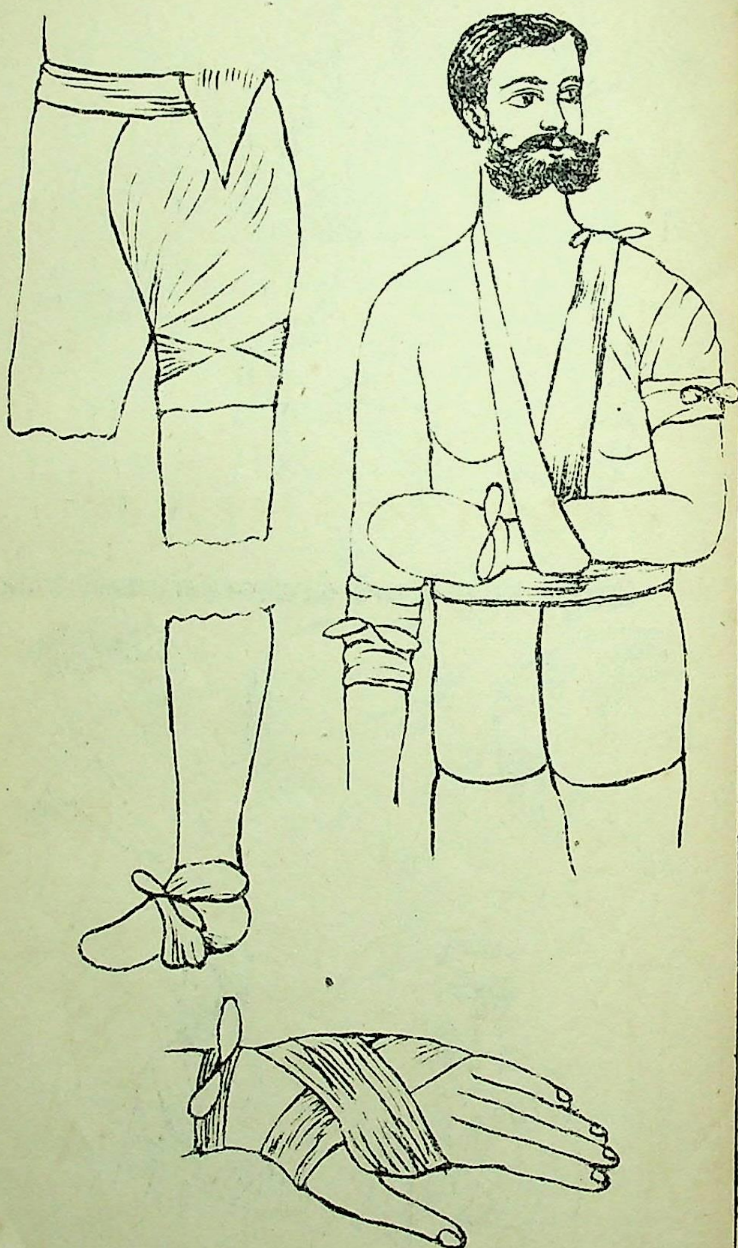
दिए हुए स्थानों के घावों को रूमाल से बांध कर दिखाया है।





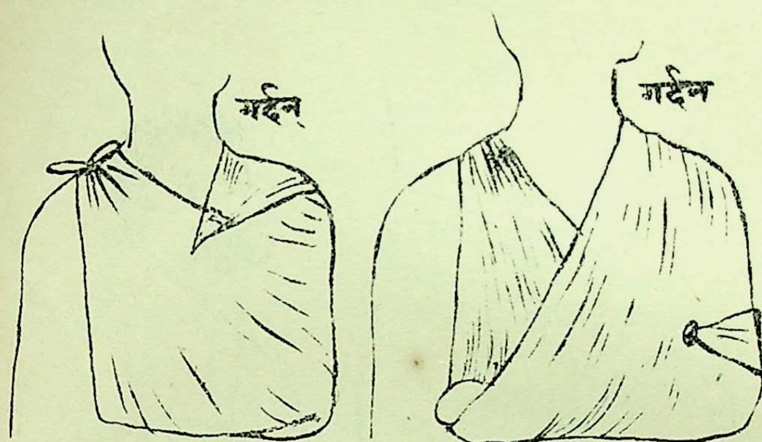
रूमाल गले में बांध कर हाथ लटकाने की विधि।

चित्र ३६

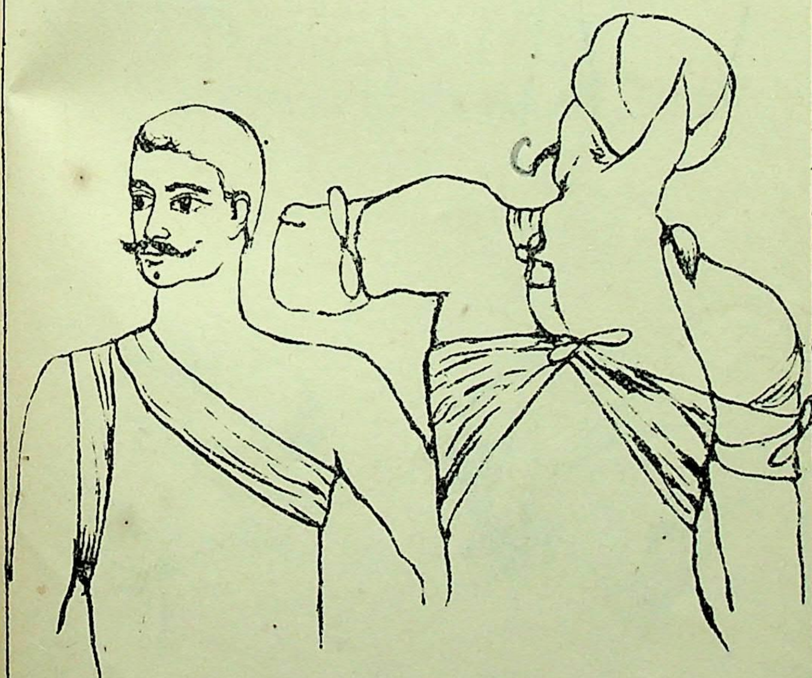


यह रूमाल से बांधे हुए आघात हैं।

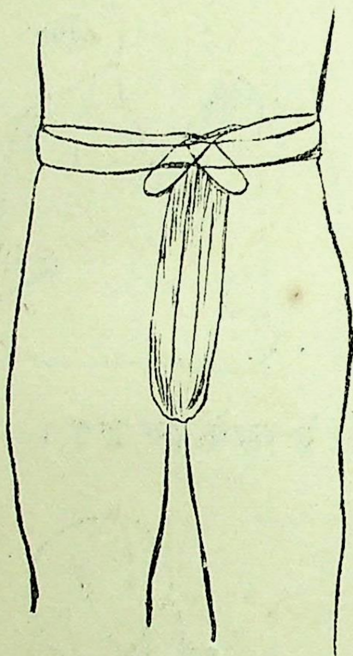
चित्र ३७



तौलिया व रूमाल से लटके हुए हाथ ।



चित्र ३८

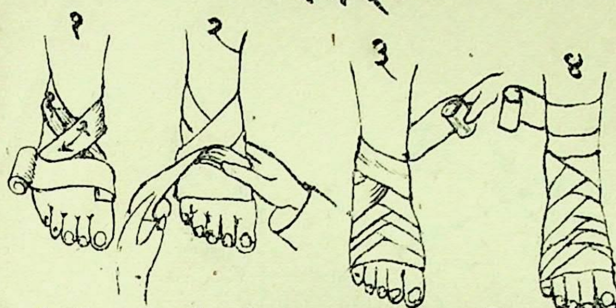




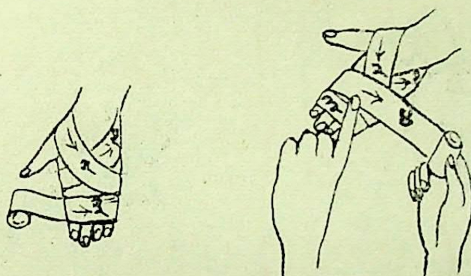




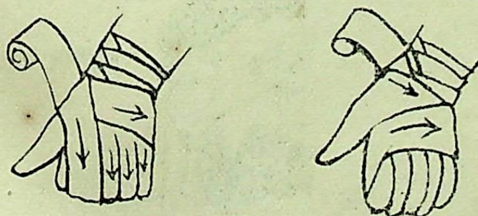
चित्र ३९



पांव के ऊपर से टांग तक लंबी पट्टी बांधना ।

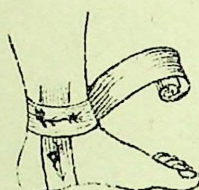
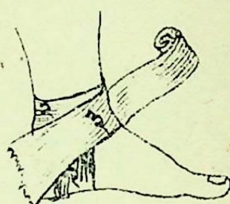
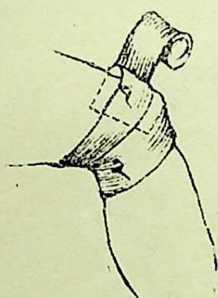
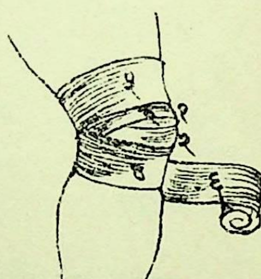


हाथ पर लंबी पट्टी बांधना ।

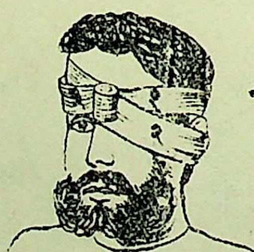


मुट्ठी बांध कर हाथ पर पट्टी बांधना ।

चित्र ५०

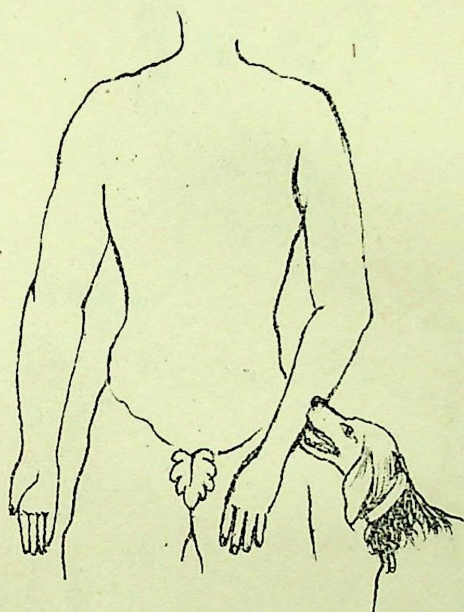
घुटने पर के घाव
इत्यादि

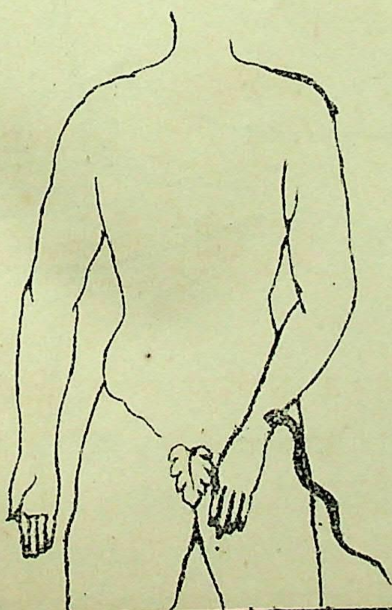


आंख का घाव बांधना

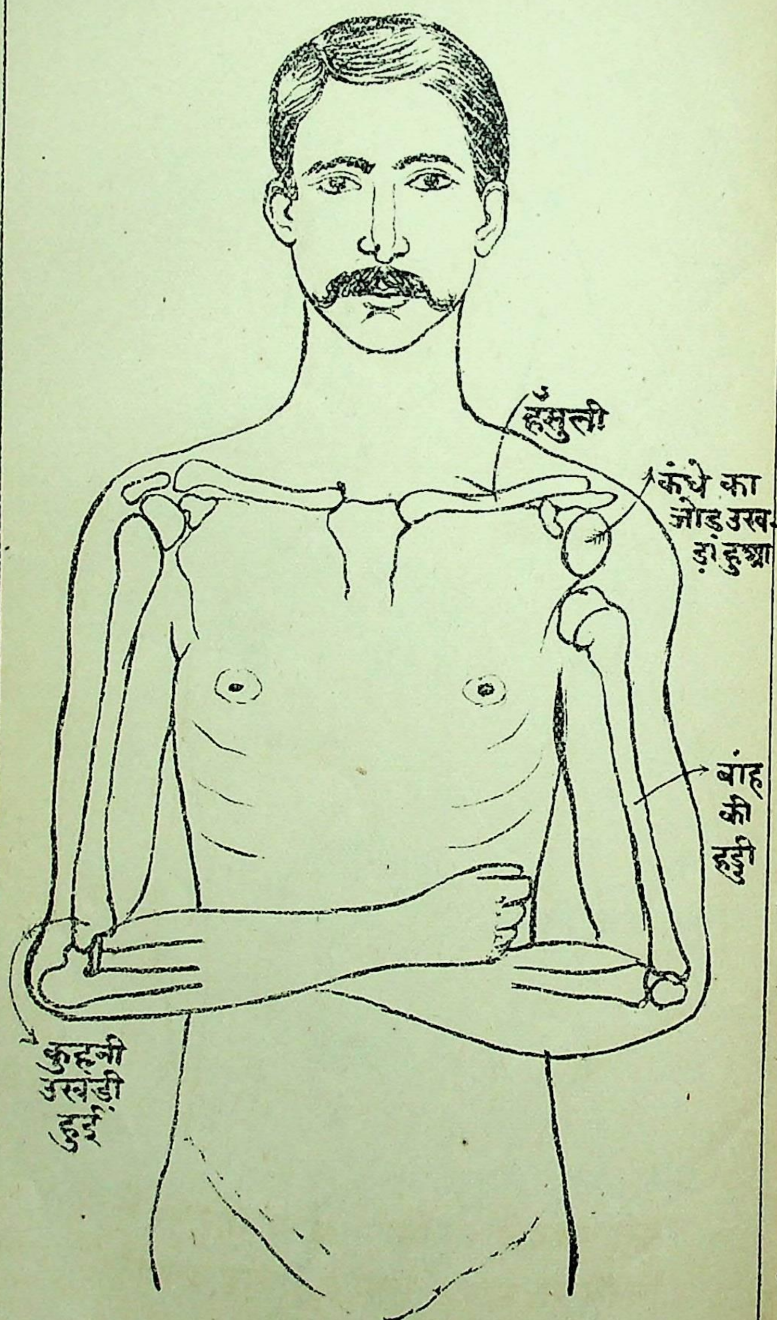
इन में १, २, ३, से पहिले, दूसरे, तीसरे लपेट का मतलब है।

चित्र ५१

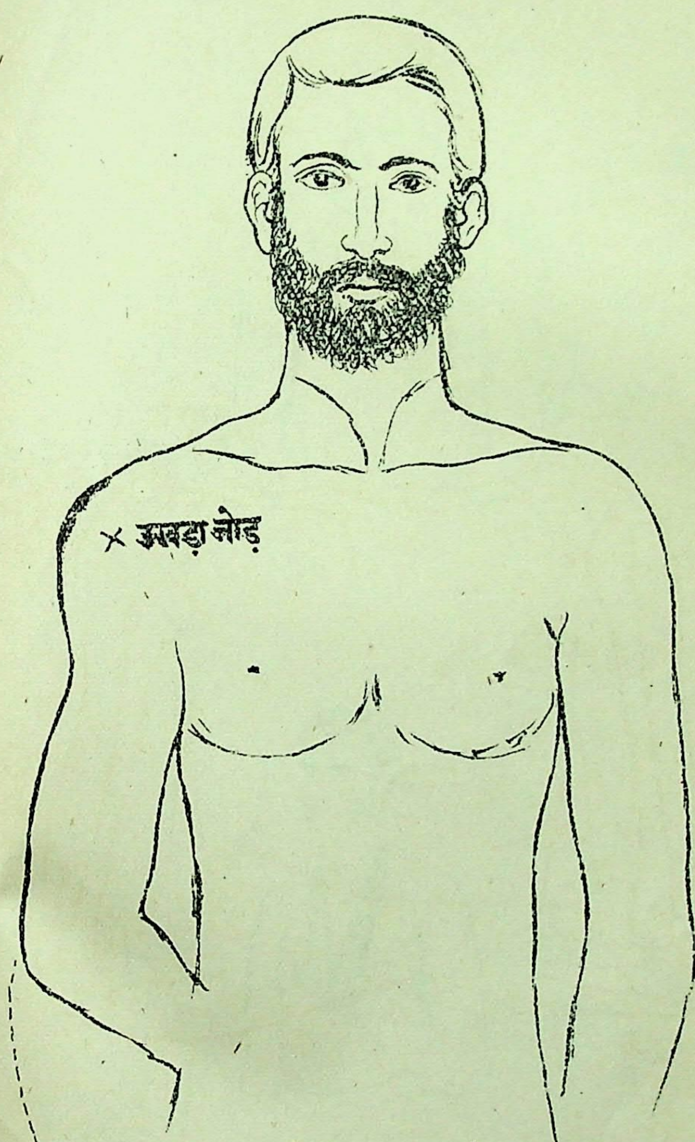




चित्र ४२

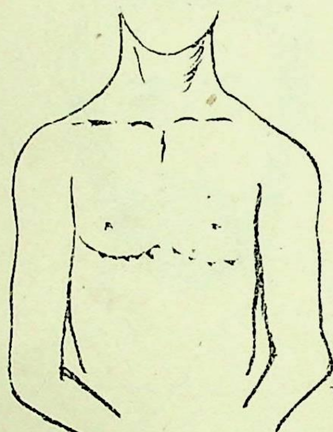


चित्र ४३



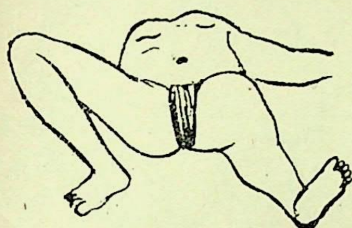
इस आदमी का दहना कंधा घोड़े पर से गिरने से उखड़ गया है। बांह उखड़ने पर इस तरह होजाता है।

चित्र ४९

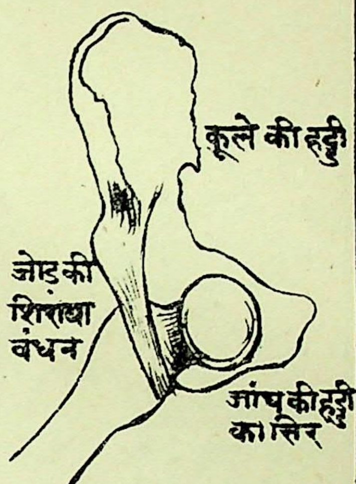


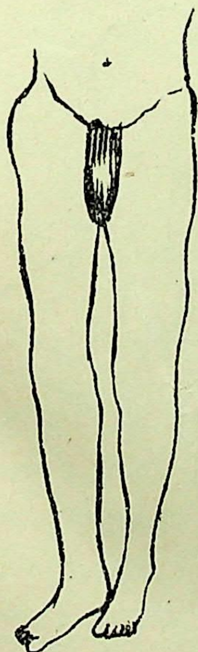


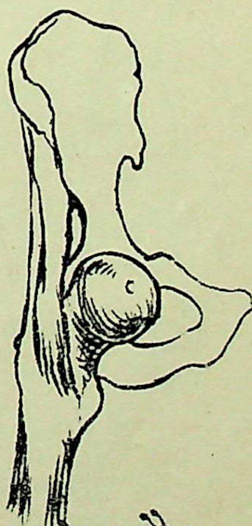
चित्र ४५



दहने कूले के जोड़ से जांघ की हड्डी का सिर बाहर निकल आया है अर्थात् जोड़ उखड़ गया है और सिर आगे है ।



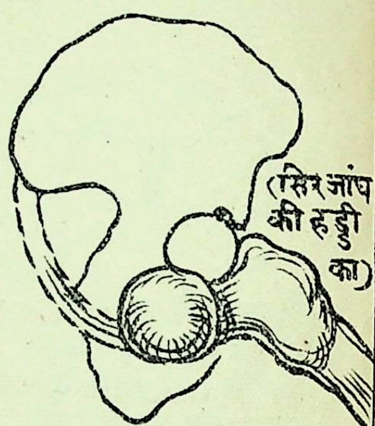




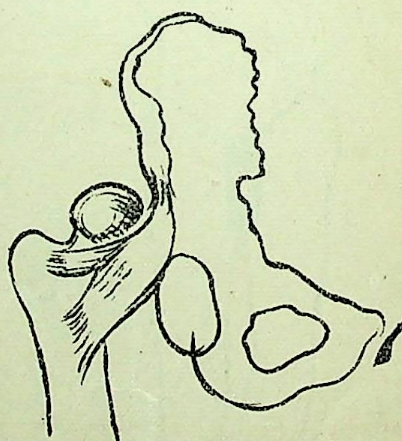
यह दूसरा प्रकार कूले के उखड़ने का है। यहां जांघ की हड्डी का सिर सामने आगया है।

चित्र ४६



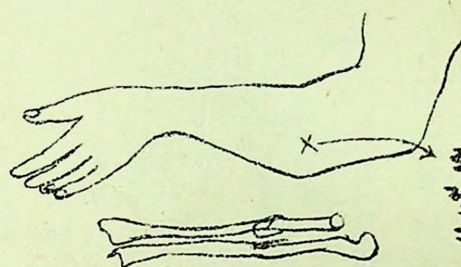


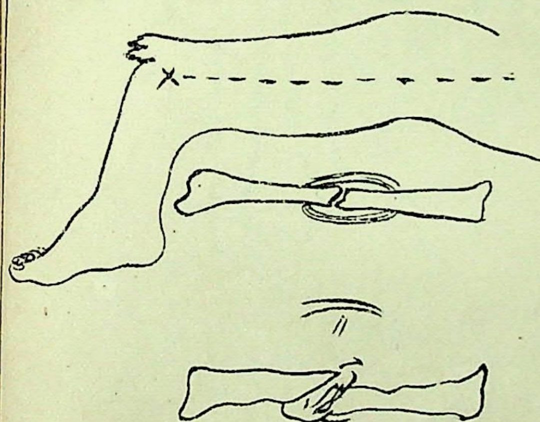




ये दोनों चित्र भी कूले के उखड़ जाने के हैं परन्तु इन में सिर पीछे की ओर है

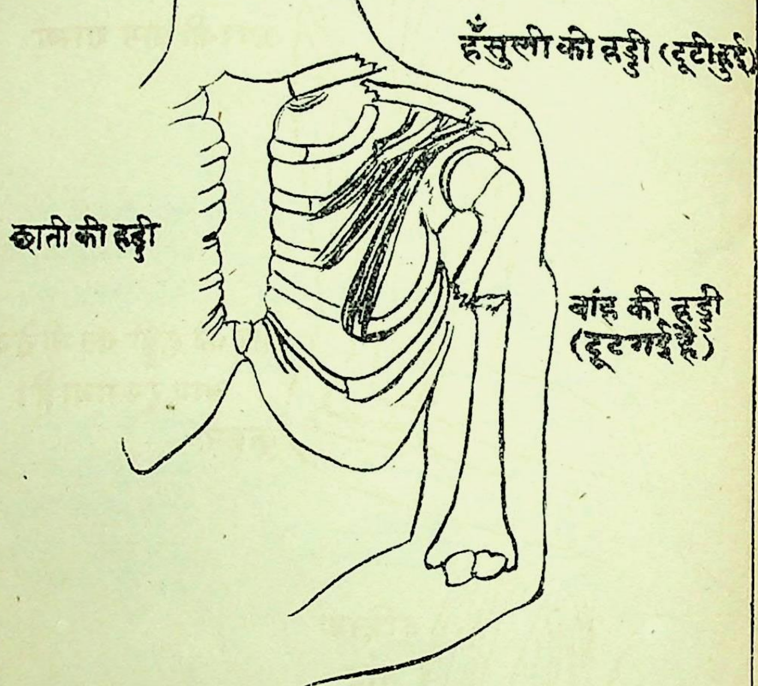
चित्र ४७

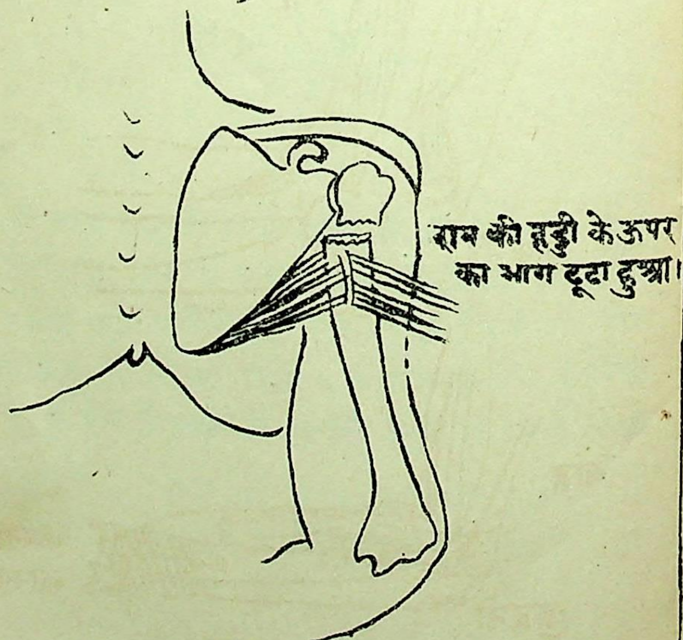




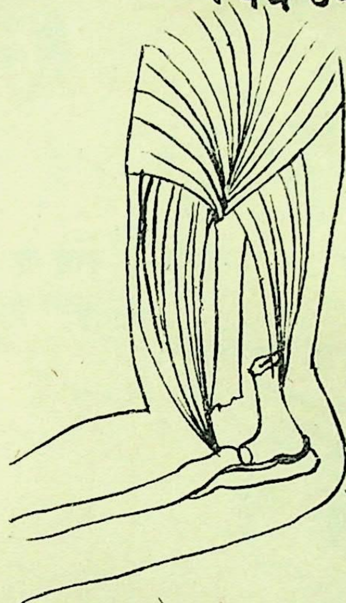
अस्थि भंग के ये चित्र केवल इस बात के दिखाने के लिये बनाए गए हैं कि आप को यह मालूम हो कि इन इन स्थानों पर इस प्रकार के अस्थि भंग होसक्ते हैं। और उन से जो कुरूपता होती है वह ऊपर के चित्रों में दिखाई गई है।

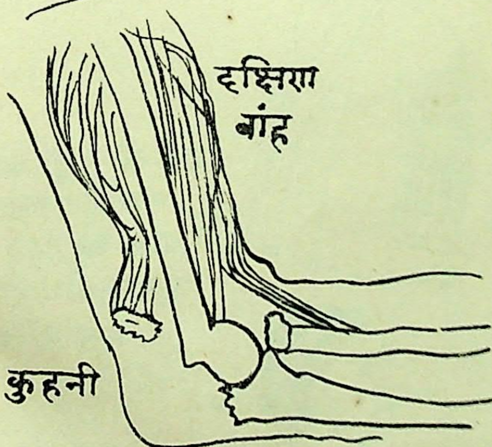
चित्र ४८

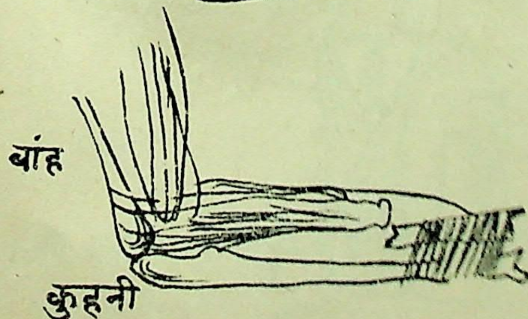




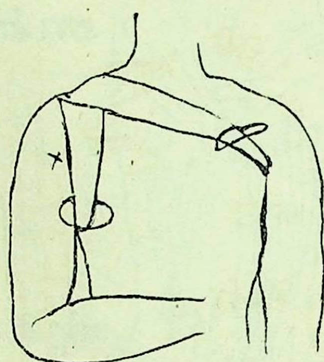
चित्र ४९







चित्र ५०



बाँह का ऊपर का
भाग टूट गया है.



बांह की हड्डी का बीच का
भाग टूट गया है
बांस का पंखा लपेट कर
कपड़ा बांध दो और हाथ
गले में लटका लो.



चित्र ५१





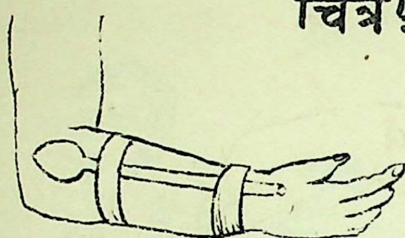






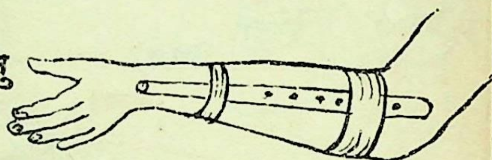
बांह की हड्डी के अस्थि भंग इत्यादि के लिये सहायक कार्य

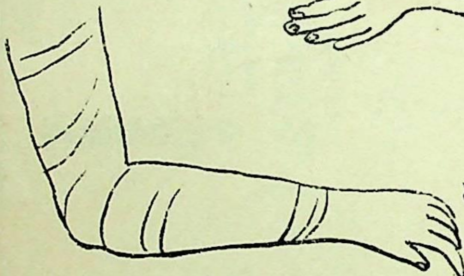
चित्र ५२



(पंजाब में) लकड़ी इत्यादि के चमचे को सहायक काष्ठ Splint के हेतु बांध सक्ते हो।

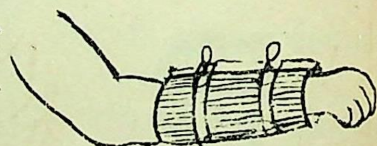
बांसुरी इत्यादि ऐसी वस्तु

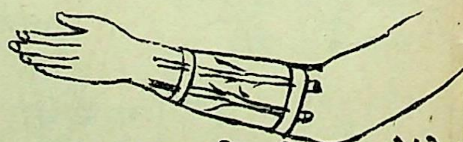


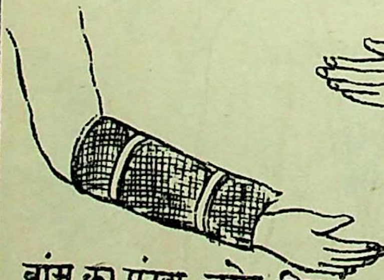


कापी की दफ़्तियां और रूमाल (जैसे स्कूलों में)

चिक लपेट कर रूमाल इत्यादि ऐसे वस्त्र को लपेट दो (जैसे घर में)





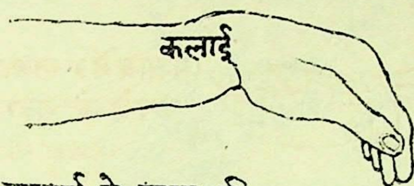


बांस का पंखा लपेट दिया गया है।

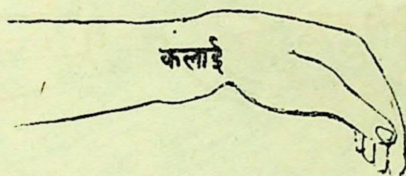
वृक्ष की हरी शाखायें तोड़ कर सहायक काष्ठ बना लो और टूटी भुजा को बांध दो

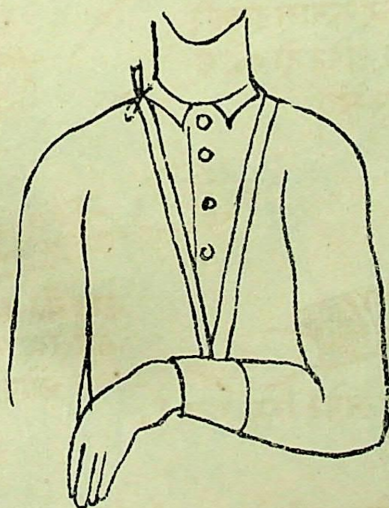
इस पृष्ठ में और आगे के ४ पृष्ठों में चित्रों द्वारा अस्थि भंग की प्रारम्भिक चिकित्सा दिखाई है।

चित्र ५३



कलाई के ऊपर की
रेडियस





चित्र ५८


वाम कूले की हड्डी
इस चित्र में जांघ की हड्डी की गर्दन टूटी हुई दिखाई गई है


हड्डी
वाम कूले की हड्डी
जांघ की टूटी हड्डी



चित्र ५५

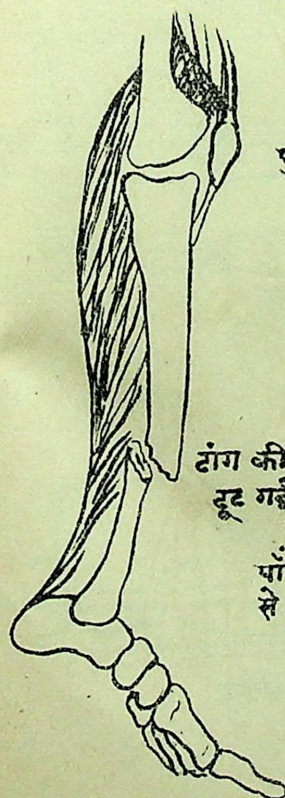
ये चित्र ठठरी के देखने से समझ में आयेंगे ।। — ये अस्थि अंग के चित्र हैं



जांघ की हड्डी का नीचे का सिरा ।

घुटने की हड्डी व परिया टूट गई है ।

टांग की मोटी और पतली हड्डियां ।



जांघ की हड्डी का नीचे का भाग

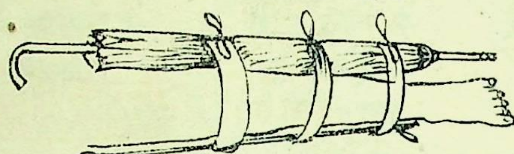
घुटने की चपनी

टांग की पतली हड्डी टूट गई है।

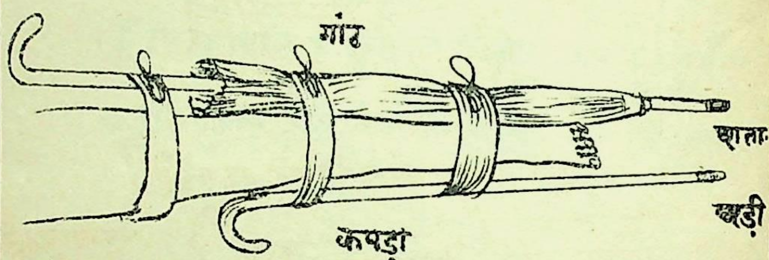
टांग की हड्डी टूट गई है

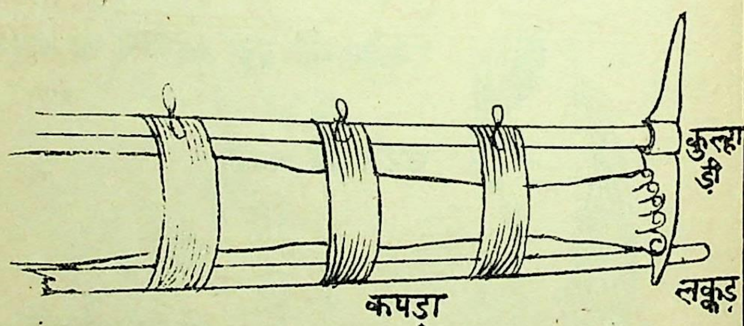
पाँव और गाड़ी से कूदने से टूट गई हैं।

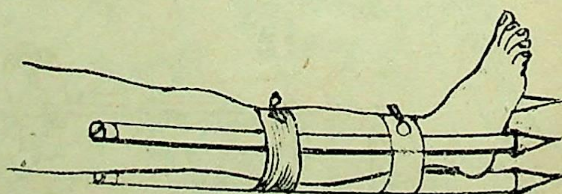
चित्र ५६



टूटी टांगों के लिये सहायक काष्ठ

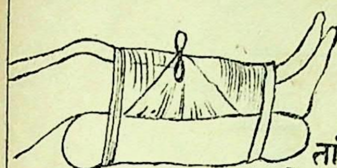


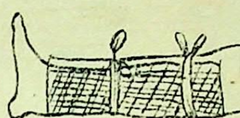


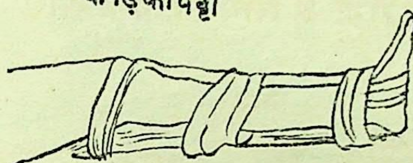


रूमाल क्रिकेट के विकेट

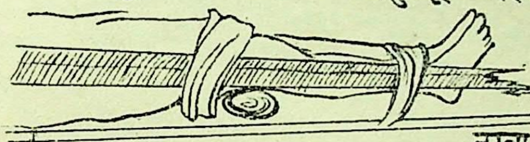
चित्र ५७

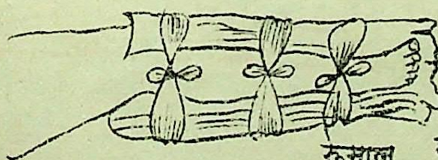


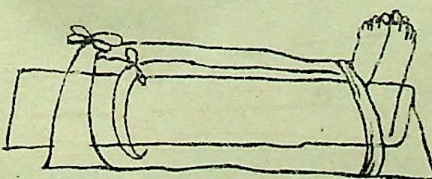




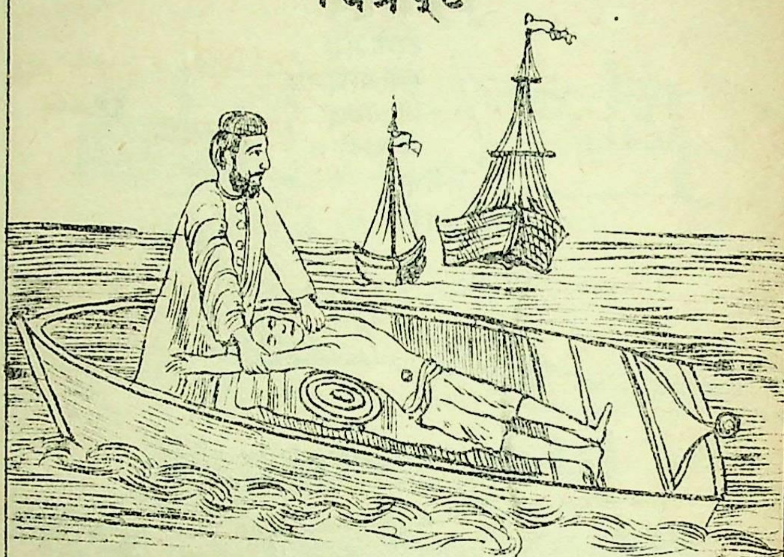
टूटी जांघ .(जांघ की हड्डी टूट गई है)

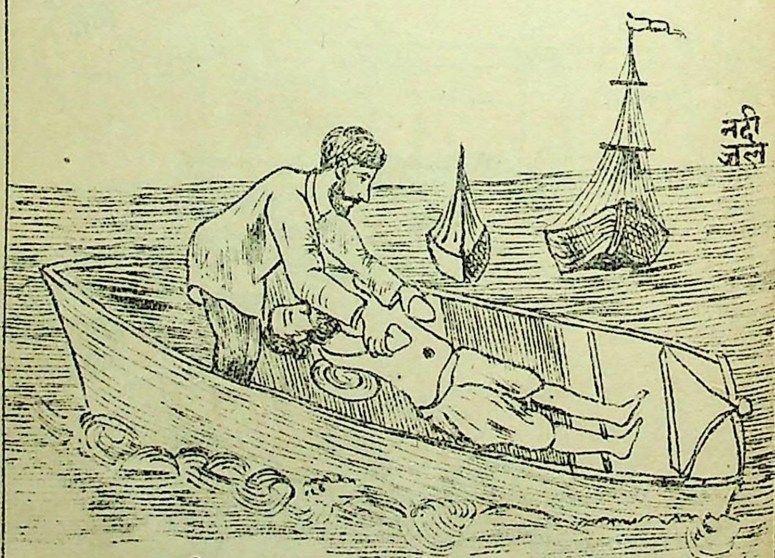






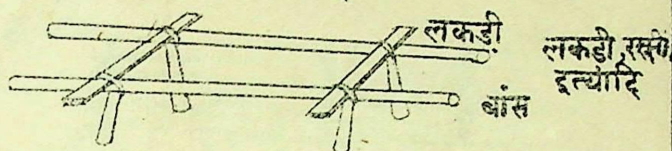
चित्र ५८



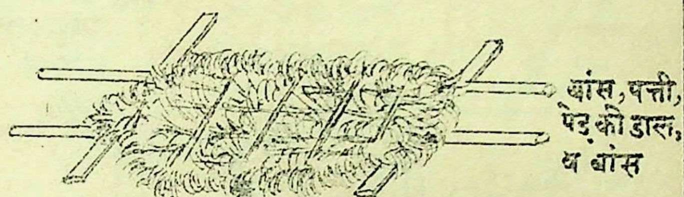


कृत्रिम विधि से स्वास चलाना ॥

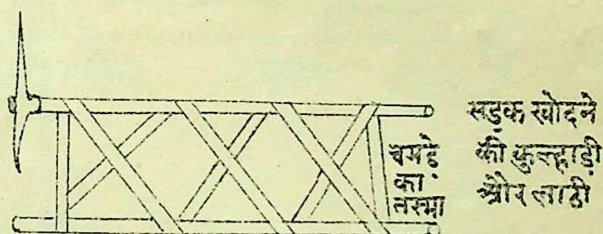
चित्र ५८



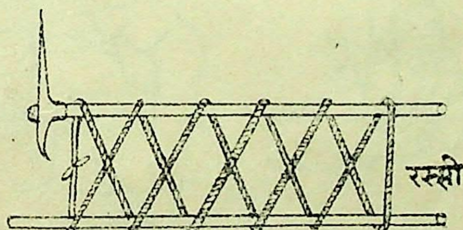
लकड़ी, रस्सी, इत्यादि

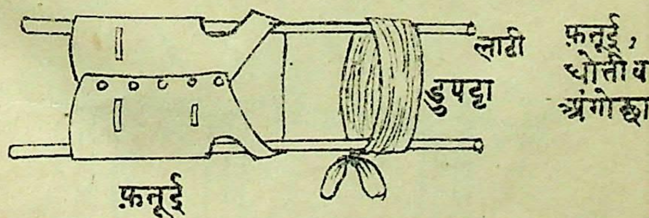


बांस, पत्ती, पेड़ की डाल, व बांस



सड़क खोदने की कुल्हाड़ी और लाठी

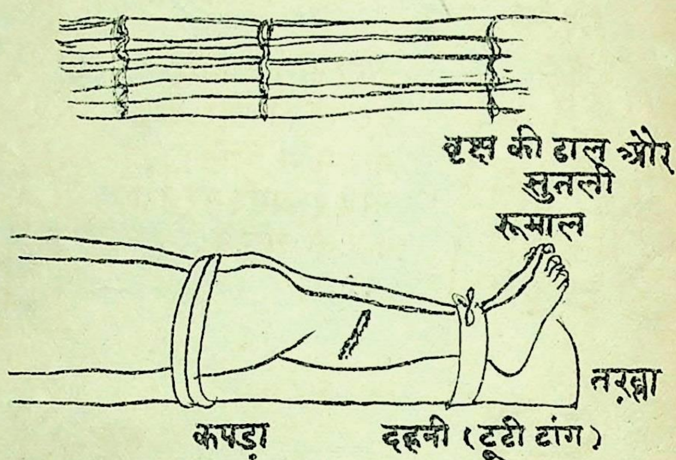


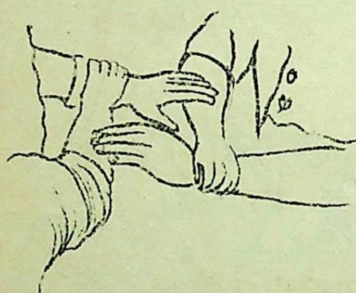


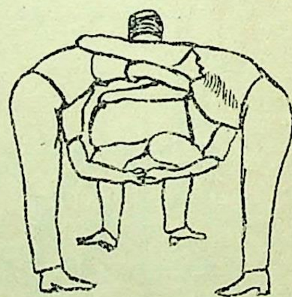
फ़तूई, धोती व अंगोछा

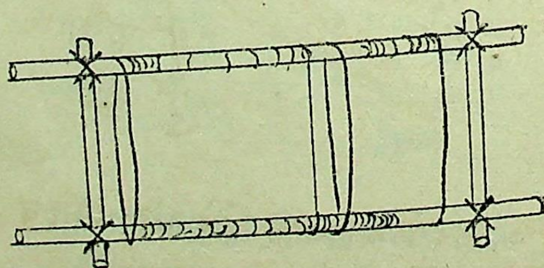
जहां डोली इत्यादि न हो इस प्रकार के वाहन में रोगी को रखकर घर वा चिकित्सालय ले जाइये ॥

चित्र ६०

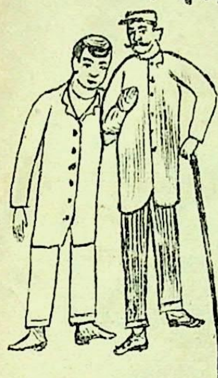








चित्र ६१ और ६२

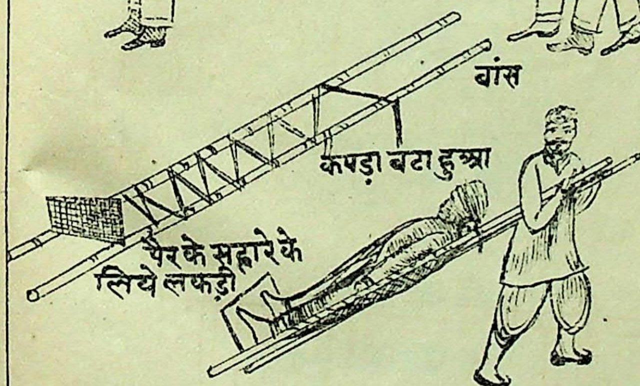


जहां टांग इत्यादि
टूट गई हो और अन्य
वाहन न मिले
पीठ इत्यादि पर उठा
कर ले जाइये





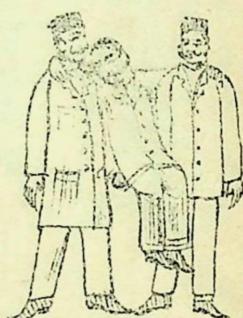




एक आदमी इस तरह धीरे धीरे रोगी व
घायल को दूर तक ले जासक्ता है ॥

चित्र ६३

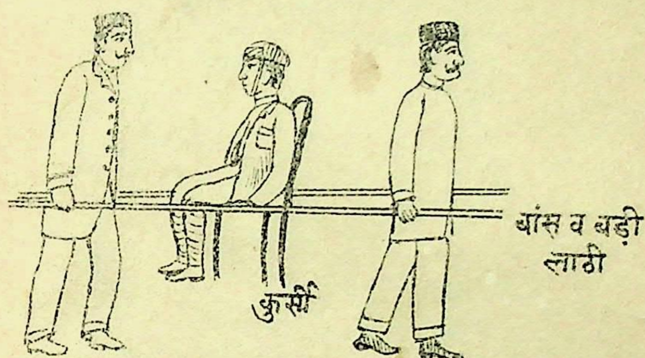


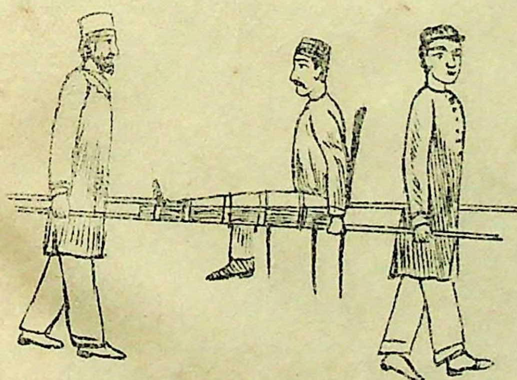




टांग की चोट में इस
तरह उठा कर कुछ दूर
घायल को ले जासके हैं ॥

चित्र ६४

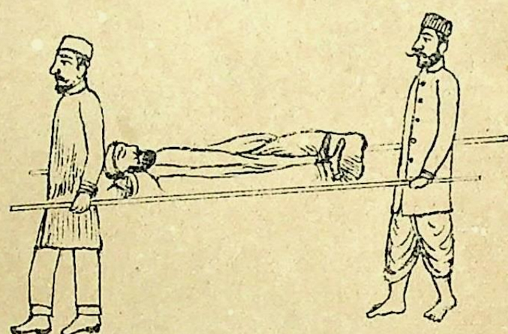




बांई टांग टूट गई है-
टांग में सहायक काष्ठ
बांध कर, कुर्सी पर
बैठा कर घायल को
दो साथी उठा ले जाते
हैं॥

चित्र ६५







समाप्त

यह चित्र नवल किशोर यंत्रालय में बाबू मनोहरलाल भार्गव के प्रबंध से मुद्रित हुए ॥ ॥

